RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 नवम्बर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 नवम्बर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 15
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 92
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

नव प्रभात है, नव सूर्योदय,
नव उद्घोष की भरे हुंकार।
संघ सेवा ही सर्वोपरि हो,
जयवंता रहें गुरुवर राम।।

सच और भय का
मेल ही नहीं है।
सत्य के साथ
हिम्मत का गहरा
संबंध है।

सफलता से जो खुशी
मिलती है, उससे कई
गुना खुशी मिलती है
कर्त्तव्य पालन से।

जो आनन्द आत्म-संयम से
मिलता है, वह दूसरों को
जीतने से नहीं मिल सकता।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

।। ज्ञानवाणी ।।

साभार - प्राकृत सूक्तावली

उद्देसो पासगस्स नत्थि।

-आचारांग (1/2/3)

जो स्वयंद्रष्टा (ज्ञानी) है, उसे उपदेश की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

For the self-realised there is no need of a sermon.

सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेई।

-उत्तराध्ययन (29/59)

ज्ञान की आराधना करने से आत्मा अज्ञान का नाश करती है।

By the pursuit of knowledge the soul destroys ignorance.

आयंकदंसी न करेइ पावं।

-आचारांग (1/3/2)

जो संसार के दुःखों को जानता है, वह ज्ञानी कभी पाप नहीं करता।

The wise that knows about the worldly misery does not commit sin.

नाणंमि असंतंमि चरित्तं वि न विज्जए।

-व्यवहारभाष्य (7/217)

जहाँ ज्ञान नहीं, वहाँ चारित्र भी नहीं रहता।

Where the knowledge does not exist, the conduct also does not (exist).

सव्व जगुज्जोयकरं नाणं, नाणेण नज्जए चरणं।

-व्यवहारभाष्य (7/216)

ज्ञान विश्व के समस्त रहस्यों को प्रकाशित करने वाला है। ज्ञान से ही मनुष्य को कर्त्तव्य का बोध होता है।

Knowledge lights up all the secrets of the world and it also facilitates (right) conduct.

अणाणाय पुट्ठा वि एगे नियट्टंति, मंदा मोहेण पाउडा।

-आचारांग (1/2/2)

मोहाच्छन्न अज्ञानी साधक संकट आने पर धर्मशासन की अवज्ञा कर फिर संसार की ओर लौट पड़ते हैं।

When in crisis the monks in the grip of delusion give up their monasticism and return to the worldly life.

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

01 जीवनी/धर्मदेशना

जीवनी : The Divine : Pujya Hukmesh 06
सोऽहं : आचार्य प्रवर श्री जवाहरलाल जी म.सा. 09
स्वयं का अध्ययन : आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. 11
स्वाध्याय का आनंद : आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. 15

02 ज्ञान सार व तत्त्व ज्ञान

ज्ञान सार : मधुर वचन : संकलित 19
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र : कंचन कांकरिया 22
तत्त्व ज्ञान : नैरयिक व परमाधार्मिक : संकलित 42

03 संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी : संकलित 24
आत्मीयता से .... : आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. 29
मुक्ति एवं स्वचेतना.... : पदमचंद गांधी 30
स्वाध्याय में विवेक : प्रो. सुमेरचन्द जैन 35
स्वाध्याय : उत्तम तप : सजग 36
स्व का अध्ययन ही स्वाध्याय : डॉ. आभाकिरण गाँधी 37
अस्वाध्यायिक : संकलित 39

04 भक्ति रस

खुद को राम बनाना होगा : ललित कटारिया 18
स्वयं का अध्ययन : राखी अमर अलिझाड़ 21
स्वाध्याय : धर्मेंद्र पारख 38
मैं सुदामा : संध्या धाड़ीवाल 43

05 विविध

बालमन में उपजे ज्ञान : मोनिका जय ओस्तवाल 27
नीमच चातुर्मास समाचार : महेश नाहटा 49
अधिवेशन सामग्री 66

अ चिन्तन प्रयोग ज्ञ

'ज्ञ' से 'अ' को पृथक् करो

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

बहुत पढ़ा, बहुत सीखा, बहुत लिखा, बहुत भ्रमण किया, बहुत अनुभव किया, पर क्या मिला? क्या हासिल हुआ? यदि स्वयं को नहीं पढ़ पाया, स्वयं को जान नहीं पाया, स्वयं का अनुभव नहीं हुआ। जीव तो अनादिकाल से भ्रमण कर ही रहा है। उसने कोई भी क्षेत्र नहीं छोड़ा, पर उसे मिला क्या? केवल थकान ही न! दुकान में माल बहुत बिका, सालभर में टर्नओवर खूब हुआ। ग्राहकी इतनी रहती कि खाने-पीने की भी फुर्सत नहीं मिल पाती। लोग देखकर दंग रह जाते कि इतनी ग्राहकी कैसे! पर वर्षान्त में जब तलपट मिलायी, लाभांश को जानने का प्रयत्न किया तो ज्ञात हुआ नो प्रॉफिट नो लॉस की स्थिति रही। मेहनत का भी फल मिल नहीं पाया। परिश्रम भी एक प्रकार से व्यर्थ ही गया। यही दशा संसारी जीवों की है। जो अन्य ज्ञान तो खूब करते हैं, पर स्वयं को जान ही नहीं पाते। स्वयं से अनजान बने रहते हैं।

अध्ययन 'अ' से प्रारंभ होता है। 'अ' अज्ञान संसार का प्रतीक है। 'ज्ञ' ज्ञान यानी मुक्ति का। जब 'अ' और 'ज्ञ' के बीच के सारे अक्षरों को हटा दें तो जो दो अक्षर शेष रहेंगे, वे होंगे 'अ' और 'ज्ञ'। दोनों की युति अज्ञान रूप ही रहेगी। ज्ञान तो है, पर अज्ञान से मिला हुआ। ज्ञान तो है, पर किसका? परिवार का, समाज का, देश-विदेश का। और आगे बढ़ें तो धन-दौलत कैसे कमाने आदि का ज्ञान तो है, पर इस ज्ञान में और अज्ञान में क्या अन्तर है? ज्ञान नहीं होना ही अज्ञान नहीं है। विपरीत ज्ञान भी अज्ञान ही होता है। विपरीत का अर्थ है वस्तु-सत्य से भिन्न। जो अपना नहीं है उसे अपना मानना ही उसकी विपरीतता है। इससे वह 'अज्ञ' बना रहता है। वह तत्त्वद्रष्टा नहीं हो पाता। तत्त्वद्रष्टा यथार्थदर्शी होता है। वह तब संभव होगा जब 'ज्ञ' से 'अ' को पृथक् देखा जाएगा। 'ज्ञ' को 'अ' के चंगुल से निकाल बाहर किया जाएगा। जैसे ही 'ज्ञ' स्वतंत्र होगा, व्यक्ति की 'ज्ञ' प्रज्ञा जागृत हो जाएगी। व्यक्ति परिवारद्रष्टा ही नहीं तत्त्वद्रष्टा बन जाएगा। यह दृष्टि 'अ' से अलग होने पर ही जग पाएगी। यही 'ज्ञ' उसे मोक्ष प्रापक होगा। अतः 'ज्ञ' को 'अ' से अलग करो।

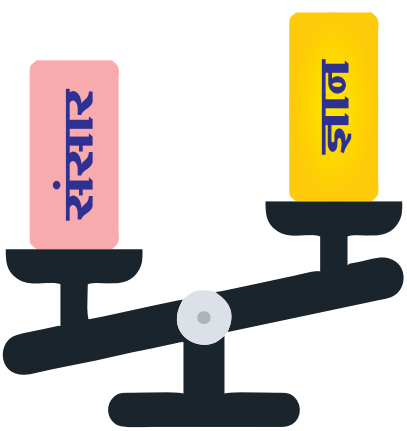

चैत्र शुक्ल 3, गुरुवार, 30 मार्च 2017

साभार- उपांशु श्रमणोपासक

Pujya Hukmesh

THE DIVINE MIRACLE ALONGSIDE THE FINAL RITES

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

Continued from 15-16 Oct. 2023.....

Dear children!

After the news was sent by the Sangh to all directions, thousands of people arrived at Jaavad. Creating a magnificent celestial abode, they adorned the earthly body of the revered Acharya Dev with it. They chanted slogans such as "Jai Jai Nanda, Jai Jai Bhadda", "Jai Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.", "Jai Vartaman Acharya Shri Shivlal Ji M.Sa., may your revolutionary efforts be eternal," and more, resonating through the heavens. They then took the body to the cremation ground, where, with tearful eyes, coconuts, ghee, and other offerings, they performed the final rites.

After the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

When people returned to the place, the Chaturvidh Sangh, led by Acharya Shivlal Ji M.Sa. and others, praised the exemplary revolution and commitment to the path of saints demonstrated by the Pujya Shri Ji. Then, with profound devotion and complete surrender, the Chaturvidh Sangh, after duly acknowledging the instructions of Acharya Shri Shivlal Ji M.Sa., dedicated themselves to Acharya Dev from the depths of their hearts. Afterward, having concluded the meal and other rituals, everyone departed from Javad.

Afterward, when the newly appointed Acharya Shri Shivlal Ji M.Sa.

took charge of the post of the late Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa., everyone was astonished to see that the vessel he received had inscriptions in golden letters. It stated that from here, after experiencing the pleasures of the अष्टक विमान and later upon acquiring the status of a Baladeva in the destructive realm, he would attain liberation through asceticism.

This reference is mentioned in the stuti (praise) composed by Jain Divakar Ji M.Sa. and his guru, Pujya Shri Heeralal Ji M.Sa. in सिद्ध पाहुड़िये ग्रन्थ. Stuti for Pujya Shriji composed by Muni Shri Heeralal Ji M.Sa. is written as :

कोई सुर ऐसी करी रे लाल, पात्रा में लिख गयो लेख हो मुनिश्वर...
सोहन वर्ण सुहावना रे लाल
आचार्य करी गवेश हो मुनिश्वर। श्री हुक्मीचंद जी ने वंदिये रे लाल....।।1।।
संवत् 1917 साभला रे लाल, वैशाख सुदी पांचम मंगलवार हो मुनिश्वर...
मध्यरात्रि रे मांयने रे
लाल, पहुँच्या स्वर्ग मंझार हो। मुनिश्वर... श्री हुक्मीचंद जी ने वंदिये रे लाल...।।2।।
धातक खण्ड रे मांयने रे लाल, पदवी पासी बलदेव हो मुनिश्वर...
संयम लेइने साधसी रे लाल,
कह्यो सो सत्यमेव हो मुनिश्वर... श्री हुक्मीचंद जी ने वंदिये रे लाल...।।3।।

DESCRIPTION OF WORLDLY FAMILY MEMBERS

Dear children!

Now, I would like to share with you the information I have about the family members of the Pujya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

The place where Shri Ji was born is still known by the name 'Hazarimal Ji Ki Saal,' which exists in ruins. It came to Hazarimal Ji's share in the distribution of wealth among the brothers. Despite efforts, no information could be found before this. According to the knowledge received from five generations after Hazari Mal Ji, his son was Pannalal Ji. Pannalal Ji had four sons: Gotilal Ji, Lakshmichand Ji, Motilal Ji, and Nemichand Ji. Out of these, only Chhaganmal Ji, who was the son of Motilal Ji, had two daughters. One of them married into the Kekadi Lodha family, and the other married into the Tonk Bamb family.

The third son, Anandi Lal Ji, had three sons : Vridhichand Ji, Samirmal Ji, and Chatarmal Ji. Among them, Vridhichand's sons were Gyanchand Ji, along with his sons Sanjay Kumar Ji, Sandeep Kumar Ji, and Sunil Kumar Ji, and two daughters who currently reside in Toda.

Chatarmal Ji's son lives in Coimbatore. Samirmal Ji's son, Bahadur Singh Ji, resides in Jaipur, and Gulabchand Ji's family lives in Tonk.

A Glimpse Into The Life Of Pujya Shri Hukmichand Ji M.sa.

Place of Birth	Todaraisingh
Mother's Name	Moti Bai Ji
Father's Name	Shri Ratanchand Ji
Gotra	Chaplot
Date of Birth	1860 Paush Sudi 9
Date of Deeksha	1879 Mri. Su. 2
Place of Deeksha	Bundi
Deeksha Guru	Pujya Shri Lalchand Ji M.Sa. (Kota Sampradaay)
Age at the time of Deeksha	18 years, 10 months, 23 days
Date of Rectification in Deeksha (क्रियोद्धार)	1890, Mri. Badi. 1 (Kota)
Deeksha Period at the time of rectification	10 years, 11 months, 14 days
Age at the time of (क्रियोद्धार)	29 years, 11 months, 7 days
Normal Deeksha Period	17 years, 21 months, 9 days
Date of Aacharya Position	S. 1907, Maagh Su. 5
Place where became Aacharya	Bikaner
Age when became Aacharya	47 years, 26 days
Deeksha period until Aacharya position	28 years, 2 months, 3 days
Aacharya Position held for	9 years, 3 days
No. of Disciples	None under him (tyaag)
No. of Deeksha during his time	39 saints
Marital Status	Unmarried
Yuvacharya	Muni Shri Shivlal Ji M.Sa.
Remembrance day	S. 1917, Vaishakh Su. 5
Place of last rites	Javad
Total age	56 years, 3 months, 26 days
Total Deeksha period	37 years, 5 months, 3 days

With this, we come to an end of this series. "Through his unwavering devotion to Jain teachings and principles, Pujya Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa. not only shaped his era but left an indelible legacy that resonates across generations, inspiring hearts to embrace on Lord Mahavir's principles of non-violence, truth, and spiritual enlightenment."

सोऽहं

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

धर्मदेशना

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों को सोऽहं का पाठ पढ़ाया गया और उस पर स्वतंत्र विचार-अनुभव करने के लिए कहा गया। दोनों शिष्यों में एक उद्दण्ड स्वभाव का था। उसने साधना तो कुछ भी नहीं की और सोऽहं का अर्थ 'मैं ईश्वर हूँ' इस प्रकार मानकर अपने आप परमात्मा बन बैठा। वह स्वयं को परमात्मा बताने का ढिंढोरा पीटने लगा। जो मिला, उसी से कहने लगा- मैं ईश्वर हूँ। लोगों ने उसकी मूर्खता का इलाज करने के लिए उसके हाथों पर जलते हुए अंगारे रखने चाहे। तो बोला- ये क्या कर रहे हो? मेरे हाथ पर अंगारे रखकर मुझे जलाना क्यों चाहते हो?

लोगों ने कहा- भले आदमी! ईश्वर भी कहीं जलता है क्या?

फिर भी वह मूर्ख शिष्य अपनी मूर्खता को न समझ सका। वह अपने को ईश्वर कहता ही रहा। एक आदमी ने उसके गाल पर चांटा मारा तो वह बोला- तुमने मुझे चांटा क्यों मारा? इस पर प्रत्युत्तर मिला कि मूर्ख! कहीं ईश्वर के भी चांटा लगता है क्या?

मगर उसकी मूर्खता का रंग इतना कच्चा नहीं था। वह रंग चढ़ा रहा और लोगों के विनोद का पात्र बन गया। उससे अधिक वह कुछ न कर सका।

दूसरा शिष्य साधना में लगकर एकान्तवास करते हुए सोचने लगा- मैं अनेक प्रकार के जो रूप देख रहा हूँ, यह आँखों का प्रभाव है। मैं अनेक काव्य सुनता हूँ यह कानों की शक्ति है। नाना प्रकार के रसों का आस्वादन करना जिह्वा का काम है। मैंने जो गंध सूंघी सो नाक के द्वारा। अत: अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि ये इंद्रियाँ ही सोऽहं हैं।

वह अपना निष्कर्ष लेकर प्रसन्न होता हुआ गुरु जी के पास पहुँचा और गुरु जी से बोला- महाराज! मैंने सोऽहं का पता पा लिया है।

गुरु जी- कैसे पता पा लिया?

शिष्य- जो इंद्रियाँ हैं, वे ही सोऽहं है।

गुरु जी- जाओ, अभी और साधना करो। तुम्हें अभी तक सोऽहं का ज्ञान नहीं हुआ।

शिष्य और साधना करने लगा। उसने सोचा- मैं अब तक सोऽहं का पता न पा सका। खैर, अब फिर प्रयत्न करता हूँ।

अब विचार करने लगा- गुरु जी ने कहा था कि इन्द्रियाँ सोऽहं नहीं हैं। वास्तव में इंद्रियाँ सोऽहं कैसे हो सकती हैं? इंद्रियाँ सोऽहं होती तो अस्थिर कैसे होती? इसके अतिरिक्त मैंने भूतकाल में अनेक शब्द

सुने थे। उनका ज्ञान मुझे आज भी है; यद्यपि वे वर्तमान में नहीं बोले जा रहे हैं। भूतकाल में मैंने जो विविध रूप देखे थे, वे आज दिखाई नहीं दे रहे हैं। फिर भी उनका मुझे स्मरण है। अगर इन्द्रियाँ ही जानने वाली होती तो वर्तमान में भूतकालीन विषयों को कौन स्मरण रखता? इससे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि इन्द्रियों से परे कोई ज्ञाता अवश्य है। फिर वह कौन है?

उसने समस्या पर गहराई के साथ विचार किया। तब उसे जान पड़ा कि इन सब क्रियाओं में मन की प्रेरणा रहती है। अतएव मन ही सोऽहं होना चाहिए। इस प्रकार निश्चय करके वह गुरु जी के पास आया और बोला- गुरु महाराज! मैं सोऽहं का मतलब समझ गया।

गुरु जी- क्या समझे?

शिष्य- यह जो मन है, वही सोऽहं है।

गुरु जी- जाओ और फिर साधना करो।

शिष्य फिर चला गया। उसने फिर साधना आरंभ कर दी। सोचा- गुरु जी के अनुसार मन भी सोऽहं नहीं है तो जरूर मन को प्रेरित करने वाला कोई और ही है। उसी का पता लगाना चाहिए। उसने बहुत चिन्तन किया तो ज्ञात हुआ कि मन को बुद्धि प्रेरित करती है। इसलिए मन से परे बुद्धि सोऽहं है। वह फिर गुरु जी के पास पहुँचा और कहने लगा- गुरु जी! अब मैं सोऽहं को समझ पाया हूँ।

गुरु जी- क्या है, बताओ।

शिष्य- मन से परे बुद्धि सोऽहं है।

गुरु जी- वत्स जाओ, अभी और साधना करो।

बेचारा शिष्य फिर साधना में लग गया। उसने चिन्तन-मनन किया कि गुरु जी ने ठीक ही कहा है कि बुद्धि सोऽहं नहीं है। अगर बुद्धि सोऽहं होती तो उसमें विचित्रता-विविधता क्यों होती? कभी वह विकसित होती है, कभी उसमें मंदता आ जाती है। कभी अच्छे विचार आते हैं, कुभी बुरे विचार आते हैं। इससे जान पड़ता है कि बुद्धि के परे जो तत्त्व है, वही सोऽहं है।

शिष्य बड़ी प्रसन्नता के साथ गुरु जी के पास पहुँचा और बोला- महाराज! इस बार सोऽहं का पक्का पता लगा लाया हूँ।

गुरु जी- क्या?

शिष्य- जो गुह्य तत्त्व बुद्धि से परे है, जिसकी प्रेरणा से बुद्धि का संचालन होता है, वह सोऽहं है।

गुरु जी (प्रसन्नतापूर्वक)- हाँ अब तुम समझे। जो कुछ तुम हो, वही ईश्वर है। उसी को सोऽहं कहते हैं।

मित्रो! आत्मा का पता आत्मा के द्वारा आत्मा को ही लग सकता है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली भाग-18 श्रमणोपासक

ज्ञान को भीतर विकसित करें। यह होगा- विनय से, सद्गुणों से। यदि स्वयं को ही सब कुछ सर्वश्रेष्ट मान लिया जाए और समझा जाए कि दुनिया वाले तो अज्ञानी हैं, कुछ सोच ही नहीं सकते। तो वहाँ ज्ञान टिक नहीं पाएगा, अजीर्ण हो जाएगा। बरसात तो खूब हुई, पर वृक्ष पनप नहीं पाया। ऊपर से पानी डालते रहे, पर जड़ें यदि सूखी रह गईं तो क्या लाभ होगा? यही दशा है आज हमारे समाज की। हम ऊपर से स्वयं को चमकाने की कोशिश करते हैं, पर लोहा कैसे चमकेगा? यदि व्यक्तित्व की जड़ ही खोखली है तो व्यक्तित्व एक दिन धराशायी अवश्य होगा। इस हेतु संतों का मार्गदर्शन प्राप्त करें। गुरु का आशीर्वाद लें तो जड़ें कटने की नौबत ही नहीं आएगी।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धर्मदेशना

स्वयं का अध्ययन ही स्वाध्याय है

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

तीर्थंकर देवों की तरणतारिणी वाणी का एक अमृत वाक्य है- **'पढमं नाणं तओ दया'**- अर्थात् पहले ज्ञान और बाद में क्रिया। यों कहा गया है कि ज्ञान और क्रिया दोनों से मुक्ति की प्राप्ति सम्भव होती है। किन्तु इस वाक्य में दोनों का क्रमोल्लेख है। प्रश्न उठता है- पहले ज्ञान क्यों? सीधा-सा उत्तर है- पहले जानेंगे तभी तो तदनुसार क्रिया कर सकेंगे। हर क्रिया सप्रयोजन होती है और प्रयोजन के पूर्व निर्णय किए बिना क्रिया कैसे की जा सकेगी? कोई यह मानता हो कि किसी भी सिद्धि की कारणभूत क्रिया की ही एकमात्र आराधना की जाए तो वह विवेकपूर्ण मान्यता नहीं है। क्योंकि क्रिया और क्रिया के फल में अन्तर होता है। क्रिया, सिद्धि तक पहुँचाने का माध्यम है, वही सब कुछ नहीं है। मंजिल और मार्ग में जैसे अन्तर होता है, वैसे ही क्रिया और सिद्धि में अन्तर है।

ज्ञान और क्रिया की अन्योन्याश्रितता (एक-दूसरे पर आश्रितता) होती है। ज्ञान का प्रकाश पहले होगा, तभी क्रिया का चरण आगे बढ़ सकेगा। ज्ञानहीन क्रिया को त्याज्य बताया गया, तो क्रियाहीन ज्ञान को भी विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है। ज्ञान के अभाव में क्रिया अन्धी होती है, तो क्रिया के अभाव में ज्ञान लंगड़ा, किन्तु यदि अंधे और लंगड़े मिल जाएँ, तो दोनों मिलकर अपनी मंजिल तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

वस्तुत: ज्ञान और क्रिया का संयोग आवश्यक है, किन्तु कई भोले लोग इस संयोग की प्रभावशीलता को नहीं जानते हैं और बिना समझ-बूझ के विभिन्न धार्मिक क्रियाओं को करते रहते हैं। इस का बुरा असर यह होता है कि क्रिया का आचरण एक रूढ़ि के समान हो जाता है और वह महत्त्वहीन बन जाता है। आप कौन-सी क्रिया किस उद्देश्य से कर रहे हैं, यह ज्ञान आवश्यक है। बल्कि यह ज्ञान पहले आवश्यक है कि किस उद्देश्य के लिए कौन-सी क्रिया की जानी चाहिए? ज्ञान के महत्त्व को कम करके कभी नहीं चलना चाहिए। उदाहरण के लिए- समझिए कि आपने सामायिक की क्रिया की, यथाविधि लेने व पालने की पाटियाँ गिन ली और बीच के समय में जैसे साधारण रूप से करते हैं, इधर-उधर की बातचीत या और कुछ कर लिया। आपने सोच लिया कि सामायिक पूरी हो गई। क्या वस्तुत: वह सामायिक हुई? यह सोचने की बात है। क्रिया-विधि के अनुसार तो वह सामायिक हुई, किन्तु ज्ञान-पक्ष की दृष्टि से उसे पूर्ण सामायिक नहीं कह सकेंगे। समझपूर्वक यदि समता भाव की विचारणा नहीं की गई अथवा जीवन में समता भाव का अभ्यास नहीं किया गया तो मानना पड़ेगा कि सामायिक का प्रयोजन अधूरा रहा है। इसलिए क्रिया के पहले ज्ञान आवश्यक है। इसी ज्ञान की साधना के लिए स्वाध्याय का प्रतिपादन किया गया है।

> **"ज्ञान के अभाव में क्रिया अन्धी होती है, तो क्रिया के अभाव में ज्ञान लंगड़ा, किन्तु यदि अंधे और लंगड़े मिल जाएँ, तो दोनों मिलकर अपनी मंजिल तक आसानी से पहुँच सकते हैं।"**

✦ चिंतन-शक्ति का उद्भव व विकास ✦

स्वाध्याय की प्रणाली ही ज्ञान-साधना की पुष्ट पृष्ठभूमि होती है। स्वयं अध्ययन कर जो ज्ञान ग्रहण और सम्पादन किया जाता है, वह सुबोध भी होता है, तो स्मृतिगम्य भी। इतना ही नहीं, स्वाध्याय की नियमितता से मौलिकता की खोज होती है और चिन्तन की नई दिशाएँ मिलती हैं। नियमित चिन्तन ही श्रेष्ठ जीवन की सुरक्षा का सम्बल होता है, क्योंकि इसी धरातल से आत्मावलोकन तथा आत्मालोचन की पद्धति का विकास होता है।

स्वाध्याय का पहला फल चिन्तन शक्ति के उद्भव एवं विकास के रूप में मिलता है। यह चिन्तन शक्ति जितनी सबल होती है, जीवनशैली उतनी ही शुद्ध और विकार रहित बनती है। चिन्तन, ज्ञान का दूरबीन होता है, जो तत्त्वों व सिद्धांतों की सूक्ष्मता को हृदयंगम कराता है। स्वाध्याय यानी स्वयं के अध्ययन के माध्यम से ज्ञान साधना करके तो देखिए कि ज्ञान का प्रकाश अन्तरात्मा को किस प्रकार आलोकित कर देता है।

✦ गहरे उतरें-फिर पहचानें ✦

स्वाध्याय का एक और अर्थ भी समझ लीजिए, जो अन्त:करण को स्पर्श करने के कारण मार्मिक भी है। सोचिए कि 'स्व' का अध्याय क्या होता है? पहली बात तो यह कि यह 'स्व' क्या है? आपको कोई पूछे कि आप कौन है, तो बताइए कि आप क्या उत्तर देंगे? यही कि मैं अमुक (नाम) हूँ और अमुक स्थान (निवास) पर रहता हूँ। क्या आपका इतना ही परिचय है? यह आपका नाम और धाम तो अस्थायी है। क्या आप अपना स्थायी परिचय नहीं जानते? यह भी आपको स्वाध्याय से ही ज्ञात होगा।

'स्व' आप स्वयं होते हैं और आप सबसे पहले आत्म-स्वरूपी हैं। चेतना-युक्त आत्मा हैं, जो सदा-सदा काल के लिए रहेंगे तथा आप सत्चिदानन्द घनमय चेतन हैं। आप अखण्ड हैं, अनंत हैं, निर्मल हैं, निराकार हैं, निरामय हैं। बाकी जो कुछ है, वह सब बाद में अर्थात् आपका नाम, धाम आदि सब बाद में। ये सब इस शरीर के साथ जुड़े हुए हैं। आत्मा के असली विस्मृत-स्वरूप का अध्ययन कराता है स्वाध्याय। समझिए कि स्वाध्याय 'स्व' का पूरा अध्याय खोल देता है और ज्यों-ज्यों स्वाध्याय की गति सूक्ष्मतर होती जाती है; त्यों-त्यों इस विस्तृत अध्याय के पृष्ठ आगे से आगे पलटते चले जाते हैं। नए-नए ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति एवं नए-नए तत्त्वों की अनुभूति के साथ ये आगे से आगे पलटते हुए पृष्ठ यदि स्वाध्याय की गूढ़ता में डूबते रहें तो नए-नए अनजाने रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। जो 'स्व' का अध्याय एक बार खोल लेता है, वह उस अध्याय में अवश्य ही तल्लीन हो जाता है। 'स्व' के ज्ञान का कौन अभिलाषी नहीं होता? हाँ, यह जरूर है कि किसी भी प्रेरणा से एक बार उसकी यह अभिलाषा जाग जानी चाहिए। ऐसी अभिलाषा जाग जाने के बाद ही स्वाध्याय की विशिष्ट महत्ता प्रतीत होती है।

> **"आप कौन हैं, तो बताइए कि आप क्या उत्तर देंगे? यही कि मैं अमुक (नाम) हूँ और अमुक स्थान (निवास) पर रहता हूँ। क्या आपका इतना ही परिचय है? यह आपका नाम और धाम तो अस्थायी है। क्या आप अपना स्थायी परिचय नहीं जानते? यह भी आपको स्वाध्याय से ही ज्ञात होगा।"**

स्वाध्याय की महत्ता पर जितना कहा जाए, उतना कम है, किन्तु दरअसल यह आचरण का ही विषय है कि आप स्वाध्याय की पद्धति को अपनाएँ, उसे नियमित बनाएँ तथा गहरे उतर कर 'स्व' के अध्याय को खोलें।

✦ अध्यात्म का मर्मस्थल ✦

कोरे व्यावहारिक ज्ञान से आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। आत्मा के ज्ञान के लिए आध्यात्मिक ज्ञान अपेक्षित होता है।

व्यावहारिक ज्ञान क्या होता है? आप संसार में रहते हुए संसार का व्यवहार चलाने के लिए जो जानकारी लेते हैं, उसे व्यावहारिक ज्ञान की संज्ञा दी जाती है। ये जो कला, वाणिज्य, विज्ञान आदि विषयों की पढ़ाई है या डॉक्टरी, इंजीनियरिंग आदि की डिग्रियाँ हैं, ये सब व्यावहारिक ज्ञान के अन्तर्गत आती हैं। व्यावहारिक ज्ञान का प्रधान उद्देश्य जीविकोपार्जन माना जाता है। इस ज्ञान का अभ्यास करके आप लोग संसार के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं तथा नाना प्रकार के व्यवसाय एवं उद्योग-धंधे चलाए जाते हैं। सम्बन्धित विषय में अधिक ज्ञानार्जन की सुविधा भी रहती है तथा उनसे मानव कल्याण के कई कार्य भी सम्पादित किए जा सकते हैं। फिर भी इस ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य धन कमाना ही होता है। अत: कोरा व्यावहारिक ज्ञान 'स्व' का शुभ कल्याण करने का सामर्थ्य नहीं रखता है।

'स्व' का शुभ कल्याण आत्मा को सन्मुख रखने से ही सम्भव बनता है। जो आत्मा को अधि-सन्मुख बनाए, वह अध्यात्म है और इससे संबंधित ज्ञान को आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है। यह आध्यात्मिक ज्ञान ही आत्म-स्वरूप की पहचान कराता है तथा उसके कर्मावरणों को दूर हटाकर उसे परम विशुद्ध बनाने के पुरुषार्थ का आह्वान करता है। स्वाध्याय आध्यात्मिक ज्ञान का मर्म स्थल होता है।

✦ सुन्दर संगम ✦

कोरा व्यावहारिक ज्ञान आत्मबोध को प्रेरित नहीं करता। इस व्यावहारिक ज्ञान को आध्यात्मिक ज्ञान का पुट मिले और उससे उसमें नैतिकता का संचार हो जाए तो वह ज्ञान भी जब क्रियान्वित होगा, तो उसके प्रभाव से सांसारिक व्यवहार में भी नीति एवं न्याय का प्रवेश होगा और उससे सांसारिक-व्यवहार के क्षेत्र में भी मानव प्रेम के माध्यम से आत्मबोध की दिशा को बल मिल सकेगा। एक तथ्य स्पष्ट है कि जो लोग सांसारिक जीवन में रह रहे हैं और राग को त्यागकर विराग में विचरण करने में अपने आप को समर्थ नहीं मानते हैं, यों मानिए कि उन्हें संसार में रहना है और संसार में रहना है तो जीविकोपार्जन के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना भी अनिवार्य है। फिर क्या वे नीति व न्याय से विहीन जीवन ही जियें? नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए और इस दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए कि व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों को नैतिक व धार्मिक शिक्षण भी दिया जाए, जिससे उन्हें प्रारम्भ से आध्यात्मिक ज्ञान का बोध भी हो सके। ऐसी अवस्था में विद्यार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में विनम्र, सहृदय तथा सहयोगी बन सकेंगे। उस दशा में संसार का सामान्य व्यवहार भी सुखप्रद बन सकेगा और उससे आत्मकल्याण की वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों को भी पूरा प्रोत्साहन मिल सकेगा।

जब तक विस्तृत रूप से दोनों प्रकार के शिक्षण की संयुक्त व्यवस्था का सन्तोषजनक रीति से श्रीगणेश न हो सके, तब तक व्यक्तिगत एवं वर्गगत स्तर पर स्वाध्याय की प्रणाली का अवलम्बन लिया जाना चाहिए। यह समय चाहे अल्प ही हो, किन्तु नियमित अभ्यास होगा तो स्वाध्याय के प्रभाव से व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का सुन्दर संगम बैठ सकेगा।

"यह आध्यात्मिक ज्ञान ही आत्म स्वरूप की पहचान कराता है तथा उसके कर्मावरणों को दूर हटाकर उसे परम विशुद्ध बनाने के पुरुषार्थ का आह्वान करता है। स्वाध्याय आध्यात्मिक ज्ञान का मर्म स्थल होता है।"

आप यह छोटी-सी प्रतिज्ञा कर लीजिए कि प्रतिदिन नियमित रूप से निश्चित समय पर स्वाध्याय करने के निमित्त केवल एक घंटा देंगे, जो अत्यन्त अल्प समय होगा।

✦ स्वाध्याय की नियमितता क्यों? ✦

'स्व' के अध्याय का यह कोई एकाध बार का प्रयोग नहीं होता, यह एक लम्बी प्रक्रिया होती है, जिसका विचार एवं विवेकपूर्वक निर्वाह करना आवश्यक है। आप अपने व्यावहारिक ज्ञान के संदर्भ में ही इस प्रक्रिया को समझिए। सोचें, आप अपने पुत्र को डॉक्टर बनाना चाहते हैं तो आपको उसे कितने अर्से तक पढ़ाना और कितना लम्बा धीरज रखना पड़ता है। वर्णमाला से प्रारम्भ होकर मेडिकल डिग्री को प्राप्त करने में कितना समय लग जाता है? कोई 19-20 वर्ष। इतने लम्बे समय तक जब आपका पुत्र लगातार उत्तीर्ण होता चला जाए, तब कहीं जाकर डॉक्टर की डिग्री प्राप्त होती है। डॉक्टरी की डिग्री ले लेने के बाद में भी एकदम हाथ साफ नहीं हो जाता है या कुशलता प्राप्त नहीं हो जाती है। उसके लिए भी लम्बे समय अभ्यास की जरूरत होती है तथा ख्याति प्राप्त करने के लिए और भी ज्यादा समय चाहिए।

जब किसी व्यावहारिक ज्ञान एवं उसके कुशल क्रियान्वयन के लिए भी इतना समय यानी कम से कम आधी-पौनी जिन्दगी लग जाती है, तो फिर 'स्व' का अध्याय तो मेडिकल या इंजीनियरिंग के ज्ञान से बहुत अधिक गूढ़ एवं विस्तृत होता है, बल्कि दोनों प्रकार के ज्ञान की परस्पर कोई तुलना करना ही समीचीन नहीं है। तो भला विचारिए कि आत्मज्ञान की संप्राप्ति एवं उसकी सफल क्रियान्विति के लिए कितने समय की अपेक्षा रहेगी? यदि आप लोग व्यावहारिक ज्ञान के लिए आधी-पौनी जिन्दगी खपा देते हो तो इस गूढ़ आत्मज्ञान के लिए तो कई जिन्दगियों की जरूरत रहेगी। किन्तु यह कैसी चिन्तनीय विडम्बना है कि आप आत्मज्ञान की गहराइयों में प्रवेश करने के लिए सामान्य समय निकालने की भी चेष्टा नहीं करते हैं।

दिन-रात में चौबीस घंटे होते हैं, जिनमें आप व्यावहारिक ज्ञान लेते हैं और उसका अभ्यास करते हैं तथा विद्यार्थी-जीवन को पार कर लें, तब अपने व्यवसाय व व्यापार में धनार्जन हेतु समय लगाते हैं और अपने दैनिक कार्यों से भी निवृत्त होते हैं। प्रारम्भ में सन्त-मुनिराज आपसे इतनी ही तो मांग करते हैं कि इन चौबीस घंटों में से मात्र एक घंटा अपने आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति एवं अभ्यास के लिए दीजिए। अरे बन्धुओ! चौबीस घंटों में से केवल एक घंटा आत्मज्ञान और आत्मविकास के लिए? क्या इतना भी नहीं कर सकते हैं आप? सोचिए और चिन्तन की गहराई में जरा डूबकर सोचिए।

आप यह छोटी-सी प्रतिज्ञा कर लीजिए कि प्रतिदिन नियमित रूप से निश्चित समय पर स्वाध्याय करने के निमित्त केवल एक घंटा देंगे, जो अत्यन्त अल्प समय होगा। फिर भी मेरा विश्वास है कि यदि कोई जिज्ञासु स्वाध्याय की नियमितता को निभाते हुए कम से कम एक वर्ष भी गुजार ले तो उसे आत्मदर्शन के सौभाग्य का माध्यम मिल सकता है।

नियमित स्वाध्याय से स्वाध्यायी की अन्तरात्मा में ऊर्जा का एक ऐसा भण्डार तैयार होगा, जो सतत् क्रियाशील रहेगा। ऊर्जा की क्रिया-प्रक्रिया से आप परिचित होंगे कि उससे ऐसी शक्ति का उत्पादन होता है, जो विविध प्रकार की उपलब्धियों को सहज ही में सुलभ कराती है।

स्वाध्याय से प्राप्त ऊर्जा की शक्ति के फलस्वरूप आध्यात्मिक क्षेत्र में कई सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, किन्तु सामान्यतया भी ऐसे सद्गुणों का विकास किया जा सकता है, जिनकी सहायता से व्यक्ति एवं समाज के जीवन को संवारा जा सके। स्वाध्याय के सुफल उत्थानकारी भी होते हैं तो वे दीर्घजीवी भी बनते हैं। सुसंस्कारों के प्रसार का रहस्य भी स्वाध्याय में समाया हुआ है, यह मानकर चलें।

साभार- नानेशवाणी-11 (संस्कार क्रांति-1) श्रमणोपासक

स्वाध्याय का आनंद

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धर्मदेशना

पठन और अध्ययन सामान्य क्रियाएँ हैं। इनसे सदा ही कुछ प्राप्त हो जाए, यह आवश्यक नहीं है। यदि ये सही दिशा में होंगी और इनके पीछे विवेक होगा तभी इनकी कोई सार्थकता होगी और इनका फल मिलेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि पठन और अध्ययन शब्दों के आधार पर अथवा उनके माध्यम से होता है। शब्दों से कुछ अर्थ ध्वनित होते हैं, जो भाव की दिशा में जाते हैं। शब्द तो अपने आप में जड़ हैं। उनका कोई उपयोग, अर्थ और भाव निकालने की दृष्टि से ही हैं। यह पढ़ने वाले की बुद्धि, विवेक, ग्रहणशीलता और अनुभव पर निर्भर करता है। हम उस नीति कथा से परिचित हैं, जिसमें मूर्ख राजपुत्र ने अपने ज्योतिषीय ज्ञान के आधार पर मुट्ठी में चक्की का पाट होने की बात कही थी। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्योतिष के ज्ञान द्वारा उसने यह तो सही पता लगा लिया था कि उसके पिता राजा की मुट्ठी में कोई गोल वस्तु है जिसमें धातु और पत्थर साथ-साथ जड़े हुए हैं। परन्तु विवेक के अभाव में वह यह नहीं सोच पाया कि मुट्ठी में चक्की का पाट कैसे समा सकता है? वह मुट्ठी में अंगूठी होने की बात नहीं बता सका। यह न तो गुरु के शिक्षण में कमी का प्रमाण है, न प्रदत्त ज्ञान में आधिकारिकता की कमी का, न राजकुमार के अध्ययन की कमी का, अपितु उसमें बुद्धि तत्त्व के अभाव का प्रमाण है।

> **प्रभु ने साधकों से कहा- 'अहासुहं देवाणुपिया मा पडिबंधं करेह' अर्थात् देवानुप्रिय! तुम्हें जैसा सुख हो, वैसा करो, पर धर्म कार्य में प्रतिबंध (विलम्ब) मत करो। यह किसके लिए कब कहा? जो आत्मा अपने आत्मानुशासन में आ गई है उसके लिए। आगम व्यवहारी के लिए सूत्र आज्ञा अनिवार्य नहीं है।**

प्रभु महावीर के कथनों और आगम वचनों के संबंध में भी यही सत्य है। प्रभु ने आत्मसाधकों को पूर्ण स्वतंत्रता दी है और 'आणाए मामगं धम्मं' की भी बात कही है। स्वतंत्रता में आज्ञा पालन, स्वतंत्रता भी और आज्ञा-पालन की बाध्यता भी? बात विचारणीय है। प्रभु ने साधकों से कहा- 'अहासुहं देवाणुपिया मा पडिबंधं करेह' अर्थात् देवानुप्रिय! तुम्हें जैसा सुख हो, वैसा करो, पर धर्म कार्य में प्रतिबंध (विलम्ब) मत करो। यह किसके लिए कब कहा? जो आत्मा अपने आत्मानुशासन में आ गई है उसके लिए। आगम व्यवहारी के लिए सूत्र आज्ञा अनिवार्य नहीं है।

दशवैकालिक सूत्र में निर्देश किया गया है कि साधु वेश्याओं के मोहल्ले में गमन न करे, अन्यथा लोक-व्यवहार में संशय बनेगा। एक घर में भी ग्लान के लिए पथ्य आदि कारणों के सिवाय बार-बार नहीं जाए तो फिर वेश्या के स्थान पर जाने की बात

ही कहाँ उत्पन्न होती है? दूसरी ओर स्थूलिभद्र मुनि वेश्या की रंगशाला में चातुर्मास करने की आज्ञा मांग रहे हैं। उस रंगशाला में 'सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?' 'आणाए मामगं धम्मं' जैसे सूक्ति वाक्य नहीं लिखे हुए होंगे, पर फिर भी गुरु ने अनुमति दे दी। क्या उन्होंने दशवैकालिक के निर्देशानुसार प्रभु आज्ञा का उल्लंघन किया? नहीं।

आगम-व्यवहारी सूत्रों से ऊपर उठकर अपने ज्ञान में जैसा देखता है, वैसा आचरण करता है। उसके लिए सूत्र निर्दिष्ट नियम लागू नहीं होते किन्तु सभी के लिए यह बात नहीं है। सामान्य साधक को तो जो कानून है, नियमावली है, समाचारी है, उसी का पालन करना होता है। जमाली, जो प्रभु के शिष्य एवं सांसारिक दामाद थे, वे प्रभु से कह रहे हैं- भंते! आपकी आज्ञा हो तो मैं 500 शिष्यों के साथ जनपद में विचरण करना चाहता हूँ। प्रभु मौन रहे, अहासुहं नहीं कहा। वास्तव में वह विहार नुकसानदायी ही हुआ। वे प्रभु की धर्मप्रज्ञप्ति से भटक गए। विहार चल रहा था। मार्ग में कुछ अस्वस्थ हो गए तो शिष्यों को आसन बिछाने का निर्देश किया। शिष्य कार्य में संलग्न हुए। जमाली ने पूछा- आसन बिछ गया? सकारात्मक उत्तर सुनकर जमाली वहाँ पहुँचे। पर यह क्या? आसन तो बिछाया जा रहा था। वे अस्वस्थ तो थे ही, अत: हृदय में अन्यथा भाव उपजे कि बिछा नहीं फिर भी 'हाँ' कह दिया। शिष्यों ने निवेदन किया- 'चलमाणे चलिए' कार्य प्रारंभ कर दिया है, इसलिए 'हाँ' कह दिया। जमाली का चिन्तन चला कि प्रभु ने कहा वह सत्य नहीं है। यह प्रत्यक्ष ही विरोध दिख रहा है। जो क्रिया चल रही हो उसे सम्पन्न कैसे माना जाए? प्रभु के सिद्धांत में संशय हो गया। प्रभु ने कैसे कह दिया? चिन्तन की गहराई में उतरे बिना हम हार्द्र को नहीं समझ पाएँगे।

एक स्थूल दृष्टांत समझने का प्रयास करें। कोई व्यक्ति निम्बाहेड़ा के लिए रवाना हो गया। यह व्यवहार की अपेक्षा कथन है, पर प्रभु का कथन व्यवहार की अपेक्षा नहीं है। चलमाणे शब्द में 'माण' प्रत्यय वर्तमान कालिक क्रिया का प्रतीक है। चलमाणे अर्थात् चलता हुआ। चल रहा है। चलना प्रारंभ हुआ। साथ में 'चलिए' का संयुक्तिकरण। यह क्रिया की पूर्णता का द्योतक है। 'करता हुआ' और 'कर ली' में अन्तर्विरोध प्रतिभाषित होता है। हम भी चिन्तन करें कि वर्तमान में क्रिया चल रही है, फिर उसकी सम्पन्नता कैसी? समाधान के लिए गहराई में उतरना होगा, न्याय की परिभाषा के अनुसार समझना होगा। कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं होता। कार्य अर्थात् जो निष्पन्न हो गया और कारण अर्थात् कार्य के लिए की जाने वाली क्रिया। एक साध्य है, दूसरा साधन। जैसे मोक्ष साध्य हैं तो ज्ञान, दर्शन और चारित्र साधन हैं। कारण व कार्य के बीच यदि समय का व्यवधान हो तो कारण से कार्य सम्पन्न नहीं हो सकेगा। समय बहुत सूक्ष्म है। स्थूल रूप से उसे इस प्रकार समझ लें कि दूध में शक्कर से मिठास आई। यह मिठास कार्य है और शक्कर कारण। अग्नि की आँच में दूध को उबाला गया। दूध गरम करने में समय लगेगा, पर क्रिया का प्रारंभ प्रथम समय में ही हो गया। नल के नीचे रखा गया घड़ा भरने में प्रथम बूंद भी कारण है। यदि कहा जाए कि सारी बूंदों ने घड़ा भरा है तो फिर यदि प्रथम बूंद उसे नहीं भरती तो अंतिम बूंद से घड़ा कैसे भरता? इसी तरह चलमाणे चलिए में कारण कार्य संबंध है। प्रभु की वाणी में हीरे, मोती, रत्न भरे पड़े हैं।

आपके घर में दादाजी के समय की तिजोरी है, उसके ताला नहीं है, बंद पड़ी है। उसको खोलने के लिए नम्बर मिलाने पड़ते हैं। नंबर नहीं मिलेंगे तो चाहे कितना ही प्रयत्न किया जाए, क्या खुलेगी तिजोरी? वह नहीं खुल सकती। उसे खोलने के लिए तो उसका सही नम्बर मिलाना ही पड़ेगा।

जोधपुर नरेश महाराज तखतसिंह को एक दिन पुराने कागजों को देखते हुए एक दस्तावेज उपलब्ध हुआ जो पूर्वजों के हस्ताक्षरों से युक्त था। उसमें लिखा था 'खाटु और मकराने के बीच खजाना गड़ा है। वक्त पर काम में लिया जा सकता है।' महाराज के हृदय में वह खजाना प्राप्त करने की आकांक्षा जागी। दीवान आदि

विश्वसनीय व्यक्तियों को बुलाकर उनके सम्मुख सारी बात रखी गई। प्रश्न हुआ कि खजाना कैसे खोजा जाए? खाटु व मकराने के बीच लगभग 30 मील की दूरी है। इतनी भूमि खोदने पर जनता के मन में भी संशय उत्पन्न होगा। निर्धारित स्थान ज्ञात नहीं। तब दीवान बच्छराज जी सिंगी ने निवेदन किया कि बीकानेर नरेश के पास मेरे दामाद श्री जसवंतसिंह जी बैद हैं, जो अत्यंत प्रतिभासम्पन्न हैं। यह कागज या तो वहाँ पहुँचाया जाए या लवाजमा भेजकर उन्हें बुलाया जाए। संभव हैं कि संकेतों का तात्पर्य वे बता सकें।' राजकीय आदेश के अनुसार शाही लवाजमे के साथ आदर-सत्कारपूर्वक उन्हें लाया गया। जोधपुर नरेश व दीवान, श्री जसवंतसिंह जी के साथ बैठे व दस्तावेज प्रस्तुत कर सारी बात उनके सामने रखी। चिन्तन चला कि खजाना 30 मील की दूरी पर तो रखा नहीं जाएगा। संकेतों को समझना होगा। सांकेतिक लिपि, द्वंद्वपूर्ण मानसिकता एवं एकाग्रता के अभाव में नहीं पढ़ी जा सकती। प्रखर प्रतिभा भी एकाग्रता की अपेक्षा रखती है। आज आगमों के गूढ़ रहस्य हम क्यों नहीं समझ पाते हैं? अर्धमागधी भाषा का हिन्दी अनुवाद हो गया, पर हम लापरवाह बन गए। जब जरूरत हुई, शास्त्र के पन्ने उलट-पुलट कर देख लिए। गुरुचरणों में बैठकर स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति छूट गई। ध्यान रहे, नीतिशास्त्र में कहा है-

सांकेतिक लिपि, द्वंद्वपूर्ण मानसिकता एवं एकाग्रता के अभाव में नहीं पढ़ी जा सकती। प्रखर प्रतिभा भी एकाग्रता की अपेक्षा रखती है। आज आगमों के गूढ़ रहस्य हम क्यों नहीं समझ पाते हैं? अर्धमागधी भाषा का हिन्दी अनुवाद हो गया, पर हम लापरवाह बन गए। जब जरूरत हुई, शास्त्र के पन्ने उलट-पुलट कर देख लिए। गुरुचरणों में बैठकर स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति छूट गई।

पुस्तकं प्रत्ययाधीतं नाधीतं गुरु सन्निधे।
सभा मध्ये न शोभन्ते, जार गर्भ इव स्त्रियाः।।

जो केवल पुस्तकें पढ़कर पंडित बना है, गुरु सान्निध्य में शास्त्राध्ययन नहीं किया है, वह विद्वत् सभा में उसी प्रकार लगता है जैसे जार-गर्भ धारण करने वाली स्त्री। जैन शास्त्र का आदेश है कि शास्त्राध्ययन 'गुरुगम' गुरु सन्निधि में होना चाहिए। गुरु निर्देश में होना चाहिए। आज हिन्दी अनुवादों में भी एकरूपता नहीं। अत: संशय की गुंजाइश हो गई कि सही क्या मानें? जो भी हो, पढ़ने की आदत तो डालनी ही पड़ेगी और फिर जो कुछ पढ़ें, सही पढ़ें। पढ़ने का दृष्टिकोण भी सही होना चाहिए।

दीवान ने दस्तावेज देखा और इजाजत माँगी कि मैं राजमहल में घूमना चाहता हूँ। नरेश विचार करने लगे कि 'लिखा है खाटु और मकराने के बीच, लेकिन ये राजमहल में घूमना चाहते हैं!' काम तो करवाना था, अत: इजाजत मिल गई। एक स्थान पर दीवानजी ठिठक गए- अन्नदाता! खजाना यहीं है। पूर्वज बुद्धिमान थे, सोचा होगा संकेत है तो पढ़ने वाले भी मिल जाएँगे। अन्नदाता! आपके उस सिंहासन के दो हत्थे हैं, एक काला है, दूसरा सफेद। खाटू के पत्थर काले और मकराने के सफेद हैं। संकेत इसी तथ्य की ओर है। सिंहासन के नीचे खजाना मिलना चाहिए। संकेत से ज्ञात हुए स्थान को खोदने पर सिंहासन के नीचे खजाना मिल गया।

जैसे किसी बुढ़िया की सुई घर में खो गई। उसने किसी संत से पूछा तो संत ने कहा कि प्रकाश में खोजो। अब बुढ़िया दिन के उजाले में सड़क पर सूई खोजने लगी। जैसे घर में खोई हुई सुई सड़क पर ढूंढने से नहीं मिलेगी वैसे ही शब्दों के कलेवर को ना पकड़ें, अर्थ को पकड़ें। आत्मरमणता बननी चाहिए। प्रभु ने कहा- स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मक्षय होते हैं। तात्पर्य है कि यदि कर्मक्षय हुए हैं तो हमारे आत्मप्रदेशों से ज्ञान का

प्रस्फुटन होगा। मैं एक बात और कहूँगा। संभव है, आप चौंक जाएँगे– 'शास्त्रों में सत्य नहीं है।' आपको विश्वास नहीं होगा, पर मैं गलत भी नहीं कह रहा हूँ। नंदीसूत्र में कहा है कि शास्त्र सम्यक्दृष्टि पढ़ता है तो सम्यक् परिणमन करता है और मिथ्यादृष्टि पढ़ता है तो विपरीत परिणमन करता है। यदि शास्त्र एकान्तत: सत्य है तो परिणमन सत्यरूप में (सम्यक्) ही होना चाहिए। शास्त्र सत्य तभी होगा जब हम सत्यरूप में परिणमन करेंगे अन्यथा वह किस काम का? अपने

जैन शास्त्र का आदेश है कि शास्त्राध्ययन 'गुरुगम' गुरु सन्निधि में होना चाहिए। गुरु निर्देश में होना चाहिए। आज हिन्दी अनुवादों में भी एकरूपता नहीं। अत: संशय की गुंजाइश हो गई कि सही क्या मानें? जो भी हो, पढ़ने की आदत तो डालनी ही पड़ेगी और फिर जो कुछ पढ़ें, सही पढ़ें। पढ़ने का दृष्टिकोण भी सही होना चाहिए।

पुत्र के लिए आप कई कन्याओं को देखने जाते हैं, पर जिस कन्या को चुनकर आप पुत्र का विवाह समाज की साक्षी में कर देते हैं, वही आपकी पुत्रवधू बनती है, अन्य कन्याएँ नहीं। हम चाहे एक शब्द या पद पढ़ें, पर उसे अपना बनाने की कोशिश करें। स्वाध्याय की प्रवृत्ति हमारा लक्ष्य बने। अपने क्षयोपशम के अनुसार पुरुषार्थ का संयोजन करें तभी आनंद की उपलब्धि हो सकती है। आगमवाणी के इन सूत्रों को पढ़ते हुए स्व के साथ संयोग बनेगा तो स्वाध्याय का आनंद पाएँगे।

साभार- रामउवाच-1 (आणाए मामगं धम्मं) श्रमणोपासक

भक्ति रस

खुद को राम बनाना होगा

जन-जन को राम बनाना है तो
खुद को राम बनाना होगा।

खुद के अवगुण ढूँढ-ढूँढ कर,
खुद को शुद्ध बनाना होगा।।
आदत पुरानी वैर-विरोध की,
ऊपर उससे आना होगा।।
जन-जन को राम बनाना है तो....

दुनिया को गर चाहते हो अच्छा बनाना,
खुद को अच्छा बनना होगा।
पहले खुद बनें हम सच्चे,
फिर सच्चा अवाम होगा।।
जन-जन को राम बनाना है तो....

-ललित कटारिया, सूपल, रतलाम

मान-प्रतिष्ठा के लिए धर्म करना,
खुद से मात्र छलावा होगा।
दुनिया की नजरों में अच्छे,
खुद से खुद का भुलावा होगा।।
जन-जन को राम बनाना है तो....

जब हम खुद के राम बनेंगे,
आतम का कल्याण होगा।
देख हमारी कथनी-करनी,
जन-जन का कल्याण होगा।।
जन-जन को राम बनाना है तो....
खुद को राम बनाना होगा।।

श्रमणोपासक

ऐसी
वाणी
बोलिए

मधुर वचन

15-16 अक्टूबर 2023 अंक से आगे....

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

5 दबावपूर्वक बोलना (दबाव देना)

★ "वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं"

'बुद्धिमान ऐसी भाषा बोले जो हितकारी एवं अनुलोम (सभी को प्रिय) हो'

(श्री दशवैकालिक सूत्र 7/56)

★ हर व्यक्ति सुख से जीना चाहता है, दबाव किसी को भी अच्छा नहीं लगता है।

★ जो जिद्दी स्वभाव के होते हैं, साथ ही जिनमें क्रोध और अहंकार (Ego) की बहुलता होती है, वे लोग अपने साथ रहने वाले बड़े अथवा छोटे लोगों को दबाते रहते हैं। वे किसी की चलने नहीं देते। उनके दिमाग में अगर कोई बात आ गई, तो वे जिद पकड़ लेते हैं कि 'वही के वही करो' नहीं करो तो पूरे घर में शोर मचा देते हैं।

★ उनकी आवाज से डरकर, मजबूर होकर लोग उनकी बात तो मान लेते हैं, परंतु मन में बहुत दु:खी होते हैं। कुछ लोग तो परेशान होकर अकेले में ही बड़बड़ाने लगते हैं।

★ जो व्यक्ति दूसरों को दबाव देकर इस प्रकार दु:खी करता है, वह वैसे ही दु:ख रूपी कर्मों का बंध करता है।

आइए, देखते हैं कि लोग किस-किस प्रकार से दूसरों को दबाव देते हैं -

(A) परिवार में (तेज आवाज में, रफ टोन में) किसी की इच्छा नहीं होते हुए भी जबर्दस्ती कहना-'ये करो, वो करो, अभी तुरंत करो, यहाँ बैठो, वहाँ मत बैठ, बोलो मत, चुपचाप बैठो, ये पहनो, यही खाओ, यही करना पड़ेगा, नहीं करोगे तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा, ऐसे नहीं करोगे, नहीं मानोगे तो मैं खाना छोड़ दूंगी, नहीं मानोगे तो मैं घर से भाग जाऊंगी, नहीं मानोगे तो मैं मर जाऊंगी/जाऊंगा आदि अथवा बच्चों से कहना, डॉक्टर बनना पड़ेगा, नहीं बनेगा तो हमको बहुत दु:ख होगा, पढ़ाई तो करनी ही पड़ेगी...' आदि-आदि।

(B) संघ में - हम ही पाठशाला में पढ़ाएँगे और कोई नहीं पढ़ाएगा, हम ही संचालन करेंगे, इसी को अध्यक्ष बनाओ, इसी को मंत्री बनाओ, उसको बनाओगे तो हम संघ छोड़ देंगे, हम नहीं आएँगे, भवन को किराए पर दो, नहीं दोगे तो हम आना छोड़ देंगे... इसको काम सौंपो, उसको मत सौंपो, उसको कार्यकारिणी से हटाओ, वो काम करेगा तो हम नहीं करेंगे...आदि-आदि। इस प्रकार बोल-बोलकर लोगों के दिल दिमाग में संक्लेश उत्पन्न करना।

Note - वैसे तो समुदाय में अधिकतर लोग अच्छे ही होते हैं, कुछ लोग ही होते हैं जो पूरा माहौल बिगाड़ देते हैं। अब हमें माहौल बनाने वालों में से बनना है या बिगाड़ने वालों में से, यह हमारे ऊपर है।

सही तरीका - बच्चों को सही-गलत की पहचान कराना, दिशा-निर्देश देना और प्रेमपूर्वक समझाना। हमारे लहजे में दबाव महसूस नहीं होना चाहिए और बड़ों को निवेदन (Request) कर देना चाहिए, मानना नहीं मानना उनकी इच्छा पर छोड़ देना चाहिए।

एवंता कुमार के प्रसंग में देखा गया है कि जब वह माता से दीक्षा की आज्ञा के लिए अनुनय-विनय करते हैं, तब माता उन्हें बड़े प्रेम से समझाती है। हे पुत्र! तू हमारा इकलौता बेटा है। तू हमें इष्ट है, कांत है, प्रिय है, मनोज्ञ है, मणाम है तथा धैर्य और विश्वास का स्थान है... आभूषणों की पेटी के समान है... हमारे हृदय में आनन्द उत्पन्न करने वाला है... हम एक क्षण भी तेरा वियोग सहन करना नहीं चाहते।

अतएव हे पुत्र! जब सांसारिक कार्य की अपेक्षा न रहे (यानी वृद्धावस्था हो), तब तू... प्रव्रज्या अंगीकार कर लेना।

इस प्रकार माता समझाती रही, एवंता की बात भी धैर्य से सुनती रही। जब एवंता का मन तैयार नहीं हुआ, तब माता बोली यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र! हम एक दिन के लिए तुम्हारा राज्याभिषेक देखना चाहते हैं। कम से कम एक दिन के लिए तो राजलक्ष्मी स्वीकार करो। इस पर एवंता मौन रह गए अर्थात् उन्होंने स्वीकार कर लिया।

यह हमारे लिए सोचने का विषय है कि इतने छोटे से बच्चे के साथ भी माता ने कितनी शालीनतापूर्वक बात की। किसी भी प्रकार का दबाव न देते हुए वह केवल समझाती रही।

एक दिन के राज्याभिषेक के लिए भी माता ने अपनी इच्छा व्यक्त की, दबाव नहीं दिया।

विस्तारपूर्वक जानने के लिए देखें श्री अंतकृद्दशांग सूत्र अध्ययन (वर्ग-6, अध्ययन -15)

- आचार्य श्री नानेश भी किसी चीज के लिए फोर्स नहीं करते थे। वे कुछ समझाते तो भी कई बार यूँ फरमाते कि 'मैंने जो समझा है, वह बात आपके सामने रखी है। आप अपना विचार करें, आपको उचित लगे तो स्वीकार करें। मेरा कोई आग्रह नहीं है।'
- आचार्य श्री नानेश को जब किसी व्यक्ति से भवन का रास्ता अथवा गोचरी के घर के विषय में कुछ पूछना होता, तो वे फरमाते-'आपको यदि कष्ट न हो तो भवन का रास्ता बता देंगे?'
- साधना का स्तर जितना बढ़ता है, उतना ही व्यक्ति सहज और विनम्र बनता जाता है। फिर उसके व्यवहार में किसी प्रकार का कोई आग्रह और दबाव नहीं रहता।
- पूर्व में कहे गए बिन्दुओं को समझकर दृढ़धर्मी प्रियधर्मी श्रावक किसी को किसी प्रकार का दबाव नहीं दें, बल्कि भगवान महावीर का सिद्धान्त - **'जीओ और जीने दो'** को जीवन में अपनाएँ और जिस भी काम के लिए जिसको भी कहें, प्रेम से कहें। चाहे वो हमारे सर्वेंट (नौकर) ही क्यों न हों।

सुदर्शन सेठ का माता-पिता के प्रति सम्मान

सुदर्शन सेठ भगवान के दर्शनार्थ गए परंतु माता-पिता को समझाकर, उनकी अनुमति लेकर गए। वे जब एक-दूसरे से वार्तालाप कर रहे थे, तब वे एक-दूसरे के प्रति रेस्पेक्टफुल थे।

सुदर्शन सेठ - 'हे पूज्य माता-पिता!... मैं भगवान को वंदन, नमस्कार करने जाऊँ।'

माता-पिता – 'हे पुत्र! वह अर्जुन मालाकार प्रतिदिन 7 प्राणियों की हत्या करता है। अत: हे पुत्र!... तुम यहीं से भगवान को वंदन-नमस्कार कर लो।'

सुदर्शन सेठ – 'हे पूज्य माता-पिता! इस नगर में पधारे हुए... भगवान को मैं यहीं बैठा हुआ वंदन-नमस्कार करूँ, यह नहीं हो सकता। अत: हे माता-पिता! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मैं भगवान के सान्निध्य में जाना चाहता हूँ।'

जब माता-पिता अनेक वचनों से भी समझाने में समर्थ नहीं हुए तब वे बोले – 'हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हारी आत्मा को सुख हो वैसा करो।' इस प्रकार माता-पिता से आज्ञा मिलने पर वे भगवान के दर्शनार्थ गए।

उक्त वार्तालाप में किसी भी प्रकार का दबाव नहीं है। दोनों ने एक-दूसरे को समझाया, फिर जो उचित लगा वह किया।

(विस्तार के लिए देखें - अंतकृद्दशांग सूत्र वर्ग- 6 तृतीय अध्ययन)

वर्तमान में प्राय: देखा जाता है कि हर रिश्ते में वार्तालाप की स्थिति ना बनकर दबाव ज्यादा रहता है, परंतु भविष्य में ये दबाव देने की आदत काफी नुकसानदायक सिद्ध होती है। अत: प्रस्तुत पठन सामग्री से प्रेरणा लेवें और अपना व्यवहार बदलें तो निश्चय ही एक सुखद दिशा की ओर गतिमान होंगे साथ ही हमारे आस-पास का माहौल प्रफुल्लित रहेगा।

–क्रमश:

श्रमणोपासक

भक्ति रस

स्वयं का अध्ययन

–राखी अमर अलिझाड़, मुक्ताईनगर

आओ करें स्वाध्याय, स्वयं का अध्ययन,
एकाग्रचित्त होकर लगाए अपना मन।
शांत, विवेकपूर्वक मुँहपत्ती को धारें,
सामायिक संवर कर स्वाध्याय चित्तारें।
स्वाध्याय है जीवन का अनमोल धन,
आओ करो स्वाध्याय, स्वयं का अध्ययन।।

आगम पढ़ें, अर्थ समझें, सत्य-असत्य को जानें,
सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुसाधु को पहचानें।
दु:खों से व्यथित न होगा कोई जन,
स्वाध्याय कर नित्य लगाए ज्ञान रूपी अंजन।
आओ करे स्वाध्याय, स्वयं का अध्ययन।।
सत्य-असत्य के बीच होता है कोलाहल,
आगम में हर मुश्किल का है हल।
स्वयं समझें, स्वयं सीखें, कैसे रुकेगा कर्मों का इंजन,
होगा स्वस्थ निरोगी तन, सुंदर प्रसन्न मन।
आओ करें स्वाध्याय, स्वयं का अध्ययन।।

श्रमणोपासक

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 अक्टूबर 2023 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

केवलज्ञान

प्र. 2396 केवलज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर शुक्लध्यान के प्रभाव से पाँचों ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होने से अनंतज्ञान का प्रकाश प्रकट होता है, उसे केवलज्ञान कहते हैं।

प्र. 2397 'केवल' शब्द के अर्थ लिखिए।

उत्तर 'केवल' शब्द के निम्नोक्त अर्थ हैं -

1. **संपूर्ण-** सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को जाने, वह 'केवलज्ञान' है।
2. **शुद्ध-** ज्ञानावरणीय कर्ममल के क्षय से उत्पन्न हो, उसे 'केवलज्ञान' कहते हैं।
3. **एक-** जो ज्ञान भेद रहित हो, वह 'केवलज्ञान' है।
4. **असहाय-** कोई ज्ञान सहायक नहीं क्योंकि चारों क्षायोपशमिक ज्ञान नष्ट होने पर केवलज्ञान उत्पन्न होता है। यह ज्ञान असाधारण, अद्वितीय, अनंत आदि है।

प्र. 2398 भवस्थ केवलज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद हैं-
सयोगी और अयोगी।

प्र. 2399 सिद्ध केवलज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर सिद्ध केवलज्ञान के दो भेद हैं-
अनंतर सिद्ध केवलज्ञान और परंपर सिद्ध केवलज्ञान।

प्र. 2400 अनंतर सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर समय का व्यवधान न होना अनंतर कहलाता है। सिद्धत्व का प्रथम समय अर्थात् सिद्ध विग्रहगति वाले जीव अनंतर सिद्ध हैं।

प्र. 2401 अनंतर सिद्ध केवलज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर अनंतर सिद्ध केवलज्ञान के 15 भेद हैं-

1. **तीर्थ सिद्ध** - गौतम स्वामी
2. **अतीर्थ सिद्ध** - मरुदेवी माता
3. **तीर्थंकर सिद्ध** - अजितनाथजी
4. **अतीर्थंकर सिद्ध** - सुधर्मा स्वामी
5. **स्वयंबुद्ध सिद्ध** - तीर्थंकर एवं तीर्थंकर भिन्न। यहाँ तीर्थंकर भिन्न समझना। जैसे- कपिल केवली
6. **प्रत्येक बुद्ध सिद्ध** - नमि राजर्षि
7. **बुद्ध बोधित सिद्ध** - संयति राजा
8. **स्त्रीलिंग सिद्ध** - चन्दनबाला
9. **पुरुषलिंग सिद्ध** - प्रसन्नचंद्र राजर्षि
10. **नपुंसकलिंग सिद्ध** - गांगेय अनगार
11. **स्वलिंग सिद्ध** - भरत चक्रवर्ती
12. **अन्यलिंग सिद्ध** - वल्कलचिरी
13. **गृहस्थलिंग सिद्ध** - कूर्मापुत्र
14. **एक सिद्ध** - भगवान महावीर
15. **अनेक सिद्ध** - ऋषभदेव भगवान

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमशः

श्रमणोपासक

व्यष्टि से समष्टि की ओर गमन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ 61 वर्षों से मार्गवर्ती अनेकानेक परीषहों एवं संघर्षों का सोपान चढ़ते हुए अपने उत्तुंग शिखर पर आरोहण कर रहा है। आचार्य श्री नानेश ने उदयपुर में संघ के रूप में एक छोटे से बीज का वपन किया था, जो आज वटवृक्ष के रूप में हमें छत्रछाया प्रदान कर रहा है और शासन नायक के रूप में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. हम सभी को आत्मोत्थान हेतु अग्रसर कर रहे हैं।

इसी संघ के सिपाही के रूप में नीमच में आयोजित अधिवेशन के अवसर पर आप सभी सुश्रावक-सुश्राविकाओं का विभिन्न पदों पर मनोनयन किया गया है। एतदर्थ आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आप जिस पद पर है उसकी गरिमा को बनाए रखते हुए सभी पूर्व पदाधिकारियों ने पूर्ण मनोयोग से संघ सेवा का आदर्श उपस्थित किया है। अब यह बागडोर आपके सशक्त हाथों में है। हमें विश्वास है कि आप सभी पूर्व आदर्शों को आत्मसाक्षी रखकर तन-मन-धन से इस वटवृक्ष का सिंचन कर आचार्य भगवन् के आयामों को जन-जन तक पहुँचाने का भगीरथी प्रयास करेंगे। यह सुनिश्चित रखें कि हम सभी के सम्मिलित प्रयास निश्चित ही सफल होंगे, क्योंकि हम सब पर आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का वरदहस्त है। पुनश्च: बधाई एवं शुभकामनाओं सहित श्रमणोपासक की पूरी टीम आपके सहयोग में खड़ी रहेगी, ऐसा विश्वास दिलाते हैं।

शुभेच्छु - श्रमणोपासक टीम

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'स्वाध्याय विवेक, विहार विवेक'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अतिरिक्त भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

संस्कार सीरीज

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

दृढ़ निश्चय

15-16 अक्टूबर 2023
अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंदकँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

आनन्दकुमारी जी तो संसार का सार समझ गई थीं। सच्चा साधक जो संयम-पथ पर अग्रसर होना चाहता हो, संसार की कौन-सी शक्ति है जो उसे पथभ्रष्ट कर सके? सच्चा यात्री इधर-उधर के सुख-स्वप्नों में उलझकर अपने स्वीकृत-पथ से विचलित नहीं होता। दृढ़ निश्चयी यात्री को न तो मार्ग के नुकीले काँटे रोक सकते हैं और न ही आसपास के सुन्दर सुगन्धित पुष्प। आनन्दकुमारी जी किसी भी तरह मार्ग से डिगी नहीं।

आपके पिताजी ने विचार किया कि इस तरह तो यह मानेगी नहीं, इस पर वैराग्य का भूत सवार है। अब डाँट-फटकार से ही बात बन सकती है। उन्होंने कोपमय आकृति बनाकर कहा- 'देख, तू सीधी तरह से मेरी बात मान जा, नहीं तो पछताएगी। क्या रखा है साध्वियों के पास? तुम्हें बिना आज्ञा तो वे दीक्षा दे नहीं सकतीं। आज्ञा देना हमारे हाथ में है। तू अपना निश्चय बदल दे। ऐसे झूठे हठ से मैं मानूँगा नहीं। मुझे तो इतने दिनों से मालूम ही नहीं था कि तू उन सतियों के पास कब जाती है, कब नहीं? यह सारी करतूत फूलकुँवर बाई की है। वो ही तुझे प्रतिदिन महासती जी के पास ले जाया करती थी। तू समझती होगी भोजन नहीं करूँगी तो ये आज्ञा लिखकर दे देंगे, पर इस तरह आज्ञा कहीं मिल सकती है?' आप तो कवि की इस उक्ति पर चल रही थीं-

सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितम क्षरम्।
असद्भिः शपथेनोक्तं जले लिखितम् क्षरम्।।

अर्थात् 'सज्जन पुरुषों का अनायास बोलना भी पत्थर की लकीर के समान और दुर्जनों का शपथ खाकर बोलना भी पानी की लकीर के समान होता है।' आप तो अपने वचनों को पाषाण-रेखा समझकर चल रही थीं। शक्ति प्राप्त महान आत्माएँ चल पड़ती हैं फिर भला उन्हें रोकने की किसमें ताकत है?

कः ईप्सितार्थ स्थिरनिश्चयं मनः।
पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्।।

जिसका मन दृढ़ निश्चयी है और जो अपनी इष्ट वस्तु को पाने में लगा हुआ है, उसे कौन रोक सकता है? क्या नीचे की ओर बहती हुई पानी की धारा का मुख ऊपर की ओर किया जा सकता है?

आनन्दकुमारी जी जब पिताजी के समझाने पर भी अपने ध्येय पर दृढ़ रही तो पिता जी ने फूलकुँवर बाई को बुलाना उचित समझा। शायद उनका कहना मानकर भोजन कर ले? फूलकुँवर बाई जब आई तो पिताजी ने

उपालम्भ दिया– 'तुझे क्या पड़ी थी, जो इस छोकरी को महासती जी के पास ले गई? इसने तो अब सारे घर वालों के नाक में दम कर दिया है। इतना मनाया तो भी भोजन नहीं कर रही और दीक्षा के लिए आज्ञा देने की जिद पकड़कर बैठी है। इसे अब तू ही समझा।'

फूलकुँवर बाई आनन्दकुमारी जी के पास आई और कहने लगी– 'आज तुझे क्या सनक सवार हुई है जो किसी का कहा नहीं मानती? आज्ञा लेनी है तो क्या इस तरह आज्ञा मिलेगी? थोड़े दिन धैर्य रख। अभी शीघ्रता न कर। यह तो तेरी कसौटी का समय है। अभी तो तू अपनी दुर्बलता और सबलता की जाँच सूक्ष्मदृष्टि से कर। यह आत्मनिरीक्षण का समय है। अभी दीक्षा का समय नहीं आया है। जब आएगा तब विचार करेंगे। पहले उठकर भोजन कर ले और फिर इस पर विचार करना। जल्दी में किया हुआ कोई काम अच्छा नहीं होता। तू अभी इनके सामने धरना देकर आज्ञा के लिए बैठ जाएगी तो लोग तुम्हें और महासती जी दोनों को भला-बुरा कहेंगे। मैं तेरे इस काम में सहायिका हूँ। तेरी दृढ़ भावना के अनुसार तेरा काम पूर्ण होगा ऐसी मुझे आशा है। चल, उठकर भोजन कर ले।'

अपनी ज्येष्ठ भगिनी के समझाने और आश्वासन देने पर आप उसी समय उठीं और भोजन कर लिया। सब लोगों को तसल्ली हो गई। आपके मन में भी दृढ़ विश्वास पैदा हो गया कि मुझे आज्ञा अवश्य मिल जाएगी, पर आप अपने संकल्प एवं निश्चय से नहीं हटी और महासती जी से ग्रहण किए हुए नियमों पर दृढ़ रहीं।

आनन्दकुमारी जी पूर्ण त्याग के मार्ग पर चलना चाहती थीं, अतएव उन्होंने पहले से ही अपनी तैयारी प्रारम्भ कर दी। इसके फलस्वरूप आपने खाने की वस्तुओं में कमी कर दी। ससुराल वाले रामभक्त थे, अत: वे जैन धर्म के रसनेन्द्रिय का निग्रह नहीं जानते थे। जैनधर्म में त्याग के उच्चमार्ग पर चलने वालों को सचित्त जल का आजीवन त्याग करना पड़ता है। वे या तो गर्म किया हुआ जल पीते हैं या धोवन पानी पीते हैं। आपके ससुराल वाले इस बात को जानते नहीं थे, पर आप तो सचित्त जल पीने का त्याग कर चुकी थी। ससुराल में इस नियम का पालन बड़ा ही कठिन था। वे लोग आपको अपने सामने ऐसा पानी पीने नहीं देते थे, परन्तु आप विवेकशील थीं। आपने एक राह खोज निकाली। भोजन बनाने के समय बथुआ वगैरह का जो उबाला हुआ पानी होता, उसे आप एक हंडिया में रख देती तो कभी छाछ की आछ रख लेती। यह सब ससुराल वालों से छुपाकर करना पड़ता था, क्योंकि उनको पता चलने पर वे ऐसा कड़वा और बेस्वाद पानी शायद ही पीने देते। स्नेहवश उनके चित्त में नाराजगी न हो, इस विचार से आप उनके परोक्ष में ही इस त्याग का पालन कर रही थी। इस तरह आपने सचित्त वनस्पति खाने और रात्रिभोजन का भी त्याग कर दिया।

आत्मिक उन्नति के लिए त्यागशील बनना आवश्यक है। सभी मत और पंथ त्याग का समर्थन करते हैं। जैनधर्म तो त्याग की नींव पर ही खड़ा हुआ है। त्याग आत्मा में दृढ़ता पैदा करता है और कष्टसहिष्णु बनाता है। खाने-पीने, सोने-बैठने आदि के काम में आने वाली भोग्य वस्तुओं का जितना त्याग किया जाए आत्मा उतनी ही बलवान बनती है। क्या धार्मिक और क्या सामाजिक, सभी दृष्टियों से इन्द्रिय-संयम जीवन-विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

आपके उस दिन भोजन न करने का प्रभाव सब घर वालों पर पड़ चुका था। उनके दिल में बैठ गया था कि आप जरूर ही दीक्षा लेने वाली हैं। आपके जेठ फतहचन्द जी सदैव ही आपके लिए चिन्तित रहते थे। वे ऐसा उपाय ढूँढने लगे कि किसी तरह से यह दीक्षा रुक जाए। एक दिन आपके जेठ जी महासती श्री आनन्दकुमारी जी म.सा. के पास गए और कहा– 'महाराज! मैं आपसे एक विनती करना चाहता हूँ।'

महासती जी ने कहा– 'कहिए, क्या कहना है?'

जेठ जी– 'मेरे छोटे भाई की विधवा पत्नी कई दिनों

से आपके पास ज्ञान-ध्यान सीख रही है। उन्हें अब संसार से विरक्ति होती है। इसलिए हमसे आज्ञा के लिए बहुत आग्रह कर रही है। मेरा कहना है कि जब तक मेरी माता जी और इनकी माता जी जीवित हैं तब तक यह दीक्षा न लें तो ही अच्छा है। इसके लिए हमारे कहने से तो यह मानेंगी नहीं। आप कह देंगी तो हो सकता है इसके लिए वह मान जाए।'

महासती जी- 'क्या आपने मृत्यु को वश में कर लिया है? क्या पता कि आपकी माता जी और आनन्दकुमारी जी की माता जी से पहले ही आनन्दकुमारी का जीवन समाप्त हो जाए? कौन जानता था कि तुम्हारा भाई इतना जल्दी चला जाएगा, पर काल का निमित्त पाकर वह भी कूच कर गया। अब आप इसको दीक्षा के लिए रोक रहे हैं, इससे फायदा क्या होगा? भगवान ने तो **'समयं गोयम! मा पमायए'** (समय मात्र भी प्रमाद न कर) ऐसा फरमाया है। ऐसी हालत में हम तो इसे मना नहीं कर सकते। चाहे हमें कोई तलवार से या किसी भी तरह से प्राण लेने का भय दिखाए तब भी हमारे मुख से शुभ कार्य करने में रुकावट की कोई बात नहीं निकलेगी। हाँ, हमें दीक्षा लेने वाले की योग्यता जरूर देखनी होती है, जो हमने इतने दिनों में देख ली है। वह दीक्षा के लिए सब तरह से योग्य है। कष्टसहिष्णु तो है ही साथ ही कई नियमों का पालन भी कर रही है और प्रारम्भिक ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है। इसलिए आपकी ओर से आज्ञा देने में विलम्ब करना मैं उचित नहीं समझती हूँ।'

महासती जी के मुख से यह बात सुनकर जेठ जी अवाक् रह गए। उन पर भी महासती जी की कोमलवाणी का असर पड़ा। वे वहाँ से सीधे घर आए और माता जी वगैरह से आपके विषय में परामर्श करने लगे। चर्चा पश्चात् अन्य कोई उपाय न देखकर आपके जेठ जी व पिता जी ने मिलकर यह निश्चय किया कि इन्हें महासती जी के यहाँ जाने न दिया जाए। इस प्रकार का प्रतिबन्ध हो जाने पर इनका वैराग्य थोड़े ही दिनों में उड़ जाएगा। **'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'** अर्थात् वैराग्य ही न रहेगा तो आज्ञा की धुन भी छूट जाएगी। आनन्दकुमारी ने वैराग्य बेल की जड़ सींची है। वह सिंचाई बंद हो जाएगी तो अपने आप वैराग्यबेल मुरझा कर सूख जाएगी। इस प्रकार आप पर महासती जी के यहाँ जाने का प्रतिबन्ध लगा दिया गया। ससुराल से पीहर जाते वक्त साथ में आपके देवर कुशलराम जी तथा पीहर से ससुराल आते समय आपके भाई साथ में नियुक्त कर दिए गए और समस्त घर वालों को सख्त हिदायत दे दी गई कि कोई एक व्यक्ति हर समय इनके साथ रहे और इन्हें साध्वी जी के पास न जाने दें। इस तरह आपकी कड़ी निगरानी रखी जाने लगी।

मनुष्य में अपने विचारों का प्रतिबिम्ब झलकता है। वह अनन्तकाल से अपने विचारों के अनुसार दूसरों को चलाने का प्रयत्न करता आ रहा है, पर सफलता नहीं मिलती। वह नए-नए अस्त्रों का प्रयोग करता है, फिर भी दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी आत्मा के विचारों को पलट नहीं सकता है। सब कुछ जानकर भी मानव अपने से प्रतिकूल बहते हुए घटना प्रवाह को अनुकूल बनाने की आकांक्षा में रहता है। यह है मानव जीवन की परिभाषा। आप इसे दुर्बलता कहें चाहे सबलता, पर ये है अवश्य।

आनन्दकुमारी जी के हृदय में वैराग्य की उत्ताल तरंगें हिलोरें ले रही थीं। उसका प्रवाह क्षुद्र नाली का प्रवाह नहीं था, वह तो बाढ़ का उग्र रूप था। गंगा के विशाल प्रवाह को कोई रोके तो कैसे रोके? उनके मन में, वचन में सर्वत्र प्रसन्नता थी। उनके आनन्दित मुखमण्डल पर वैराग्य भावना की उज्ज्वल प्रभा स्पष्टत: झलक रही थी। यही कारण था कि सबकी ओर से महासती जी के पास जाने का प्रतिबंध लगा दिए जाने पर भी उनके वैराग्य में कोई कमी नहीं आई। घर वाले समझते कि वातावरण के अनुसार इसकी प्रकृति बदल जाएगी, पर आप तो असाधारण संकल्पों की दुनिया में विचरण करने वाली अटल साधिका थीं। आप अपने निश्चय पर हिमालय की तरह अटल रहीं।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमश: श्रमणोपासक

Kids Corner

बालमन में उपजे ज्ञान

– मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

दीपावली का त्योहार प्रकाश का पर्व कहा जाता है तो क्या आप सभी ready हैं अपने-अपने जीवन की brightness बढ़ाने के लिए? सौरभ की माता जी द्वारा दिया जा रहा ज्ञान आपके जीवन में किसी light से कम नहीं है।

आइए! भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर सभी श्रमणोपासक परिवार संकल्प लें कि सभी के घरों में ज्ञान का दीया प्रतिदिन जले। कहने का आशय है कि प्रत्येक घर के बड़े-बुजुर्ग घर के बच्चों के साथ प्रतिदिन बैठें, उन्हें धर्म संस्कार देवें, धार्मिक कथाएँ सुनाएँ एवं उनकी धर्म सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान करें। तभी बढ़ पाएगी हमारे जीवन में आध्यात्मिक brightness... और इसी के साथ देखते हैं कि सौरभ की माता जी आज क्या सिखाएँगी?

हमेशा की तरह बच्चे समय पर सौरभ के घर पहुँच गए थे। सभी एक स्वर में- जय जिनेन्द्र आंटी!

सौरभ की माता जी- जय जिनेन्द्र बच्चो! आज पंकज नहीं आया?

सौरभ- माँ! उसके घर मेहमान आए हैं तो वह नहीं आएगा।

सौरभ की माता जी- कोई बात नहीं। हम सभी शुरू करते हैं।

(सभी लोग हाथ जोड़कर आँखें बद कर एक स्वर में नवकार महामंत्र का उच्चारण करते हैं)

सौरभ की माता जी- अच्छा बच्चो! बताओ किस-किस को याद करने में तकलीफ आई?

नीलिमा- आंटी! ये तो हमारी पढ़ाई से बहुत easy है। बहुत जल्दी याद हो गया।

नितिन- हाँ आंटी! ऐसा लगा कि ये तो हमें आता ही था।

सौरभ की माता जी- (मुस्कुराते हुए) देखो बच्चो, नवकार महामंत्र, सामायिक सूत्र और आपकी स्कूल की पढ़ाई, कुछ भी मुश्किल नहीं है। अगर ठान लें और समझाने का तरीका सही हो तो सब कुछ आसानी से याद किया जा सकता है।

सौरभ- बिल्कुल सही कहा माँ आपने। मुझे तो सामायिक सूत्र याद है तो मैं आज से ही जैन सिद्धान्त बत्तीसी जल्दी से जल्दी याद करने की कोशिश करूँगा।

सौरभ की माता जी- बहुत अच्छा! आज हम आगे पढ़ेंगे वंदना के बारे में। वंदना तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार की जाती है। विधिपूर्वक भावों सहित की गई वंदना के कई फायदे हैं। सबसे पहले वन्दना का पाठ और उसका अर्थ समझेंगे।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि (नमन् सामि)
सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामि।

(श्रीमद् रायपसेणी सूत्र 8)

तिक्खुत्तो	-	तीन बार
आयाहिणं	-	दक्षिण तरफ से
पायाहिणं	-	प्रदक्षिणा
करेमि	-	करता हूँ
वंदामि	-	गुणगान (स्तुति) करता हूँ
नमंसामि	-	नमस्कार करता हूँ
सक्कारेमि	-	सत्कार करता हूँ
सम्माणेमि	-	विशेष सम्मान देता हूँ
कल्लाणं	-	कल्याण रूप
मंगलं	-	मंगल रूप (जिसने अहंकार को गला दिया)
देवयं	-	धर्म देव रूप (दिव्य रूप वाले)
चेइयं	-	ज्ञानवंत अथवा सुप्रशस्त मन के हेतु रूप
पज्जुवासामि	-	पर्युपासना करता हूँ
मत्थएण	-	मस्तक नमाकर
वंदामि	-	वन्दना करता हूँ।

भावार्थ- हे पूज्य! दोनों हाथ जोड़कर दाहिनी ओर से तीन बार प्रदक्षिणा करता हूँ। आपका गुणगान (स्तुति) करता हूँ। पंचांग (दो हाथ, दो घुटने और एक मस्तक ये पाँच अंग) नमाकर नमस्कार करता हूँ, आपका सत्कार करता हूँ, आपको सम्मान देता हूँ। आप कल्याण रूप हैं, मंगल रूप हैं, आप धर्मदेव स्वरूप हैं, ज्ञानवंत हैं अथवा मन को प्रशस्त बनाने वाले हैं। ऐसे आप गुरु महाराज की सेवा करता हूँ और मस्तक नमाकर आपको वन्दन करता हूँ।

तिक्खुत्तो के पाठ से विधिपूर्वक वंदना करना सीखना बच्चों को बहुत उत्साहित कर रहा था। उन्होंने आज से पहले न कभी ऐसा देखा, ना सुना। अब उन्हें इस बात पर गर्व हो रहा था कि सौरभ उनका मित्र है और उसके कारण वे आनन्दानुभूति कर रहे हैं।

नितिन- आंटी! आपको पता है कि सौरभ के समझाने पर हमने भी इस साल पटाखे नहीं जलाए। उसने हमें बताया कि पटाखों को जलाने में कितना पाप है!

नीलिमा- हमारे मम्मी-पापा बहुत खुश हुए और हमें gift मिला, क्योंकि हमने उनके पैसे और अपना समय दोनों बचाए।

बच्चों के चेहरे पर गर्व के भाव देखकर सौरभ की माता जी बेदह संतुष्ट थी।

प्रतिज्ञा -

1. प्रतिदिन प्रात: नींद से उठते ही 11 बार नवकार मंत्र गिनना, फिर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके विधिपूर्वक 3 बार वंदना करना।
2. घर में सभी बड़ों को सुबह उठते ही प्रणाम करना।
3. जिससे से भी मिलें उसका अभिवादन हाथ जोड़कर 'जय जिनेन्द्र' कहकर करें।

श्रमणोपासक

आत्मीयता से प्रभावित सिंह

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

वह एक गरीब लकड़हारा था। सुबह उठते ही कुल्हाड़ी लेकर जंगल में जाता, लकड़ी काटकर लाता और उसे बेचकर जो कुछ प्राप्ति होती उससे अपना जीवन यापन करता था।

एक दिन दोपहर के समय वह जंगल में लकड़ी काट रहा था कि उसे अचानक शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी। पलट कर देखा तो खूँखार शेर सामने खड़ा था। वह काँप उठा। कुल्हाड़ी हाथ से गिर रही थी और आँखें बन्द हो रही थी। उसे लग रहा था कि अब शेर हमला करेगा और उसकी ईहलीला समाप्त हो जाएगी। पर ऐसा कुछ नहीं हो रहा था। शेर गुर्रा जरूर रहा था, पर आक्रमण नहीं कर रहा था। काँपते हुए लकड़हारे ने आँखें खोली तो देखा कि शेर आक्रमण नहीं कर रहा, वरन् बार-बार गुर्राता हुआ अपना पंजा उठा-उठा कर जमीन पर रख रहा था। अचानक उसकी नजर शेर के पंजे पर पड़ी। उसे वहाँ खून नजर आया। उसे लगा कि शेर के पंजे में कोई चीज गड़ी थी और उसके दर्द के कारण ही शेर गुर्रा रहा था। यह देखकर वह आश्वस्त हुआ और उसके मन में भय के स्थान पर अनुकम्पा जागी। उसे लगा कि इस शेर को पीड़ा से मुक्त किया जाए, परन्तु पास जाने पर शेर के आक्रमण का भी खतरा था। आखिर अनुकम्पा भावना की प्रबलता बढ़ी और वह साहस करके आगे बढ़ा। शेर ने भी उसे आगे बढ़ते देखकर अपना पंजा ऊपर उठा दिया। उसने काँपते हाथों से शेर का पंजा पकड़ कर देखा तो एक बड़ी कील गढ़ी थी। उसने प्रयत्न करके कील निकाल दी तथा खुद दूर हटकर खड़ा हो गया। शेर ने पीड़ा से राहत महसूस की। मूक प्राणी था सो मानवीय भाषा उसके बस की बात नहीं थी। अत: बोल तो कुछ नहीं पाया, पर लौटते समय बार-बार पलटकर देख रहा था।

कुछ दिनों बाद किसी राजकीय अपराध के संदेह में लकड़हारा पकड़ा गया और उसे मृत्युदण्ड की सजा सुनाई गई। सजा भी इस तरह तय की गई कि इसे भूखे शेर के पिंजरे में डाल दिया जाए। आज्ञा अनुसार एक दिन उसे तीन दिनों के भूखे शेर के पिंजड़े में डाल दिया गया। लोगों की बड़ी भीड़ जमा थी। सबको लग रहा था कि अभी शेर इस पर आक्रमण करेगा और चीर-फाड़ कर खा जाएगा।

भूख से व्याकुल शेर ने ज्यों ही शिकार को देखा तो उछल कर शिकार के सामने आ खड़ा हुआ। बस अब शेर आक्रमण करने ही वाला था कि अचानक उस लकड़हारे से शेर की दृष्टि मिली तो भूखा शेर आक्रमण को भूलकर धीरे-धीरे आगे बढ़ा और उस लकड़हारे के पाँव चाटने लगा।

यह एक आश्चर्यकारक दृश्य था। एक भूखा शेर अनजान मनुष्य के पाँव चाट रहा है। स्वयं राजा व राजकीय अधिकारियों सहित सारा जनसमुदाय स्तब्ध था। लकड़हारे ने आश्चर्यचकित होते हुए याद्दाश्त पर जोर दिया तो उसे वह शेर परिचित लगा। अब पूर्व का सारा दृश्य चलचित्र की भाँति उसके दिमाग में चलने लगा। दोनों ही मूक खड़े थे, परन्तु दोनों की आँखों में अनोखा वात्सल्य भाव झलक रहा था। लकड़हारा शेर के सिर पर हाथ से सहलाने लगा।

“ वह तो एक व्यक्ति व एक पशु की आत्मीय भावना का परिणाम था। यदि यह आत्मा संसार के समस्त प्राणियों के प्रति भी इस प्रकार की समीक्षण दृष्टि रखे तो उसकी क्या स्थिति बन सकती हैं। यह आप अपनी मति से विचार कीजिए।

श्रमणोपासक

मुक्ति एवं स्वचेतना का सशक्त माध्यम : स्वाध्याय

-पद्मचंद गांधी, जयपुर

''स्वाध्याय: परमं तप:'' स्वाध्याय को परम तप माना है। जो इन्द्रिय और मन को भली-भांति संयमित किए बिना नहीं हो सकता।

परिस्थिति से मन:स्थिति प्रभावित होने की मान्यता का नाम है- भौतिकवाद, लेकिन मन:स्थिति के अनुरूप परिस्थितियों को ढालने, बदलने की मान्यता अध्यात्मवाद है। आज भौतिकवादी जीवन-दर्शन ने मानवीय सत्ता को शिकंजे में कस रखा है। इसलिए मानसिक स्तर को ऊँचा उठाने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। मानसिक स्तर की कमी को स्वाध्याय एवं शास्त्र अध्ययन से पूरा किया जा सकता है। आज भौतिक संसाधनों से समृद्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति ही लोकपूज्य माना जाता है, जबकि गुणीजन गौण हो रहे हैं। फिर भी सच यह है कि गुणीजनों का चिंतन अपने आप में प्रचण्ड शक्ति सम्पन्न है। उनके मानवीय एवं आध्यात्मिक चिंतन में इतनी क्षमता एवं सामर्थ्य है कि वे विपरीत परिस्थितियों की दशा में भी परिवर्तन कर सकते हैं तथा उनकी दिशा को मोड़ सकते हैं, क्योंकि उनकी सकारात्मक चिंतन प्रक्रिया में अद्भुत एवं आश्चर्यजनक सामर्थ्य होता है। इस प्रक्रिया का आधार स्वाध्याय ही है, जिसके माध्यम से प्रतिकूलताओं में अनुकूलता का अनुभव कर जीवन को जीवन्त बनाते हैं।

श्रुतधर्म का अर्थ स्वाध्याय अर्थात् स्वाध्याय ही श्रुत धर्म है।

स्वाध्याय की महिमा सर्वत्र स्वीकृत है। ''स्वाध्याय: परमं तप:'' द्वारा इसे परम तप माना है। जो इन्द्रिय और मन को भलीभांति संयमित किए बिना नहीं हो सकता। इनके द्वारा ही हम अपने जीवन को ऊँचा उठाते हैं। इसलिए इसको समझना भी आवश्यक है।

(1) स्वाध्याय का अर्थ एवं विवेचन :

स्थानांग सूत्र में कहा है- ''सुयधम्मो सज्झाओ'' अर्थात् श्रुत धर्म स्वाध्याय है। शास्त्र मनीषियों ने कहा है- श्रुतधर्म का अर्थ स्वाध्याय अर्थात् स्वाध्याय ही श्रुत धर्म है। स्थानांग सूत्र के दूसरे स्थान में भगवान महावीर ने कहा है- ''दुविहे धम्मे पन्नते सुयधम्मे चेव चरित्त धम्मे य'' अर्थात् धर्म दो प्रकार का है- श्रुत धर्म और चारित्र धर्म। इस प्रकार स्वाध्याय को धर्म में प्रमुख तथा आभ्यन्तर तप के रूप में माना है।

धर्म दो प्रकार का है- श्रुत धर्म और चारित्र धर्म।

शाब्दिक अर्थों में देखा जाए तो स्वाध्याय दो शब्दों से मिलकर बना है- स्व+अध्याय, अर्थात् स्वयं का अध्याय। दूसरे शब्दों में स्वाध्याय आत्मचिन्तन है, आत्मानुभूति है। अपने भीतर झाँककर अपने आपको देखना, अपने विचारों, वासनाओं व अनुभूतियों को जानने व समझने का प्रयत्न स्वाध्याय है। आत्मा के दर्पण में अपने आप को देखना स्वाध्याय है। स्वयं का स्वयं द्वारा स्वयं के लिए अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है। ''स्वेन स्वस्थ अध्ययनं स्वाध्याय:'' अर्थात् अपना स्वयं का अध्ययन करना, आत्म-निरीक्षण करना स्वाध्याय है। जिसने स्वयं को देख लिया, स्वयं को परख लिया

स्वाध्याय आत्मचिन्तन है, आत्मानुभूति है। अपने भीतर झाँककर अपने आपको देखना, अपने विचारों, वासनाओं व अनुभूतियों को जानने व समझने का प्रयत्न स्वाध्याय है। आत्मा के दर्पण में अपने आप को देखना स्वाध्याय है। स्वयं का स्वयं द्वारा स्वयं के लिए अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है।

और समझ लिया, उसने सब कुछ जान लिया है। इसलिए आचारांग सूत्र में भगवान ने कहा है- **''जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ। जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ''**, अर्थात् जिसने एक अपनी आत्मा को जान लिया है उसने सब (संसार) को जान लिया।

स्वाध्याय का तीसरे प्रकार से अर्थ सद्साहित्य का अध्ययन करना है। इसे हम इस प्रकार भी परिभाषित कर सकते हैं- **''शोभनोऽध्याय: स्वाध्याय:''** अर्थात् सद्साहित्य का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। सद्शास्त्रों का मर्यादापूर्वक अध्ययन करना, विधि सहित श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन करना स्वाध्याय है। दूसरे अर्थों में जिसके पठन-पाठन से आत्मा की शुद्धि होती है वह स्वाध्याय है। स्वाध्याय की व्याख्या करते हुए ग्रंथकारों ने बताया है- **''जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिं अहिंसयं''**, अर्थात् जिन पुस्तकों को पढ़ने से अन्तर में तप, क्षमा और अहिंसा की ज्योति जगे, जिनके पठन-पाठन से काम, क्रोध, मद, लोभ उपशान्त हों, वही सु अध्ययन यानी स्वाध्याय है।

जिसने एक अपनी आत्मा को जान लिया है उसने सब (संसार) को जान लिया।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अपनी आत्मा का अवलोकन करना, स्व-पर का ज्ञान करना, आत्मस्वरूप को समझना, स्वाध्याय है। आत्मस्वरूप को समझने के लिए सम्यक् ज्ञान की आवश्यकता होती है। स्वाध्याय जिनवाणी का श्रवण, अध्ययन, सद्साहित्य का वाचन, पठन इत्यादि सम्यक् ज्ञान में सहायक होते हैं। इतना ही नहीं, इनके आधार पर ही हम हमारी आत्मा को विशुद्ध बनाते हैं। अपनी स्वकीय वृत्तियों, भावनाओं व वासनाओं अथवा विचारों का निरीक्षण स्वाध्याय के माध्यम से करते हैं।

(2) स्वाध्याय से गुणदृष्टि :

स्वाध्याय के द्वारा ही साधक अपनी गुणदृष्टि को परिपक्व एवं विकसित कर पाता है। निरन्तर स्वाध्याय करते रहने से साधक अपनी सुषुप्त शक्ति को प्रज्ज्वलित करता है, क्योंकि आत्मिक गुणों के विकास का उचित माध्यम स्वाध्याय ही है।

स्वाध्याय का एक निश्चित क्रम है, जिसमें वाचन, शंका-समाधान, ज्ञान की स्थिरता के लिए पुनरावृत्ति, उसका चिन्तन-मनन, गहराई से विचार और ठोस परिणामों को खोजकर अन्य श्रोताओं को प्रस्तुत करना आदि शामिल हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया द्वारा साधक अपने गुणों को प्रकट करता है, जिससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ता है। स्वाध्याय के द्वारा ही वह जिनवाणी से जीवन का मर्म जान पाता है। इसके द्वारा विचार शुद्धि, निश्छल व्यवहार के साथ अपने गुणों को विकसित करता है। स्वाध्याय से ही अन्त:करण की शक्तियाँ जागृत होती है। इससे अहंकार, ममत्व एवं संकीर्ण विचारों का निरसन तो होता ही है, साथ ही जीवन में सरलता, निर्लोभता, उदारता, वात्सल्यता, सहृदयता आदि भावों का भी उद्भव होता है। वह व्यक्ति पापी, दुराचारी व्यक्ति के प्रति भी घृणा को अवकाश नहीं देता। पापी व्यक्ति के प्रति भी सद्भाव रखकर उसका हृदय परिवर्तन करने का प्रयत्न करता है। अत: सुविचार, कुशल आचार और निपुण व्यवहार के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। स्वाध्याय, अध्येता को जीवन और जगत् को समझने की दृष्टि देता है। केवल अक्षरों को पढ़ना ही स्वाध्याय नहीं, बल्कि अक्षरों में छिपे सत्य को पढ़ना स्वाध्याय है। इसी के द्वारा साधक अपने विचारों में परिपक्वता, गंभीरता, सहिष्णुता तथा प्रत्येक परिस्थिति में समभाव में

रहने के गुण विकसित करता है। साधक स्वाध्याय से जब आत्मगुणों की परख कर लेता है तो उसका दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है, जिससे उसके मन में उठने वाले द्वन्द, विग्रह स्वत: ही शान्त हो जाते हैं। ये सभी स्वाध्याय की गुणदृष्टि के ही परिणाम हैं।

"जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिं अहिंसयं", अर्थात् जिन पुस्तकों को पढ़ने से अन्तर में तप, क्षमा और अहिंसा की ज्योति जगे, जिनके पठन-पाठन से काम, क्रोध, मद, लोभ उपशान्त हों, वही सु अध्ययन यानी स्वाध्याय है।

जिस तरह लौकिक उजाला और अन्धकार होता है, वैसे ही हमारे भीतर भी उजाला और अन्धकार व्याप्त है। जीवन का भीतरी उजाला हमें समाधि, संस्कार, सदाचार, सादगी, सरलता, सेवाभाव आदि प्रदान करता है। ऐसे ही क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा और प्रति हिंसा की भावना जीवन का भीतरी अंधकार फैलाते हैं। स्वाध्याय ही एक ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर हम भीतरी उजाले को महसूस कर सकते हैं तथा गुणदृष्टि को विस्तृत कर सकते हैं।

(3) स्वाध्याय से सम्यक् सोच :

व्यक्ति के विचार ही उसका आचरण हैं। जो जैसा सोचता है, वैसा ही करने को तत्पर होता है। यदि अच्छा सोचता है तो अच्छा बनता है अर्थात् व्यक्ति के सम्यक् विचार ही उसके सम्यक् आचरण को सुनिश्चित करते हैं। भगवान महावीर के चरणों में बाहुबल, धनबल, जनबल से सम्पन्न सभी प्रकार के प्रभावशाली व्यक्ति आकर नमन करते थे, क्योंकि उनकी विचार शक्ति की पराकाष्ठा थी। महात्मा गांधी दुबले-पतले ही थे, लेकिन अंग्रेजों ने उनके सामने घुटने टेक दिए। विचार शक्ति में वो ताकत होती है जो पहलवानों, धनवानों और नायकों को झुका देती है।

सम्यक् विचार उदित होने का यदि कोई माध्यम है तो वह सिर्फ स्वाध्याय ही है। सम्यक् विचार, सम्यक् ज्ञान से प्रस्फुटित होते हैं। जब विचार सम्यक् होते हैं तो व्यक्ति का आहार भी सात्विक होता है और आहार एवं विचार सात्विक होते हैं तो आचरण सम्यक् बनता है। स्वाध्याय हमें अनुप्रेक्षा का पाठ सिखाता है। स्वाध्याय हमें सीखे हुए ज्ञान, श्रुत या पठित तत्वों पर चिन्तन-मनन करना सिखाता है। चिन्तन के माध्यम से साधक अर्थबोध की गहराई में जाकर स्वयं की अनुभूति के स्तर पर उसे समझने का प्रयत्न करता है। इसके द्वारा ही साधक की सोच सम्यक् बनती है। स्वाध्याय से हमारा ज्ञान और दर्शन निर्मल होकर दृढ़ बनता है। जब हमारा ज्ञान एवं दर्शन शुद्ध होगा, निर्मल होगा तो हम चारित्र में भी आगे बढ़ते रहेंगे और अन्ततोगत्वा हम कर्मों को काटकर मुक्ति के अधिकारी बन जाएँगे। सम्यक् सोच को विकसित करने के लिए सुशास्त्रों का, सुग्रंथों का अध्ययन किया जाए, जिनसे काम, क्रोध, मद, मात्सर्य एवं अर्थलिप्सा आदि उपशान्त हो जाएँ। सम्यक् विचार वृद्धि के लिए धर्मग्रंथ, महापुरुषों के जीवन चारित्र, आत्मज्ञान सम्बन्धी साहित्य पढ़ने से निश्चय ही विचारों में तदनुकूल परिवर्तन होकर जीवन सुधरता है और मनुष्य आत्मोन्नति के मार्ग पर बढ़ने लगता है। अत: स्पष्ट है कि स्वाध्याय के द्वारा ही सम्यक् विचार एवं सम्यक् आचरण की प्राप्ति की जा सकती है।

स्वाध्याय के द्वारा ही जिनवाणी से जीवन का मर्म जान पाते हैं।

(4) स्वाध्याय से ज्ञान वृद्धि :

स्वाध्याय वह प्रकाश है, जिससे अज्ञान रूपी अंधकार का नाश होता है एवं मोक्ष रूपी चरम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से स्वयं का ज्ञान महत्वपूर्ण होता है। स्वयं के ज्ञान के बिना बाह्य जगत् का ज्ञान निरर्थक है। ज्ञान के द्वारा ही जड़ और चेतन के भेद को समझा जा सकता है। कहा भी है- **"णाणस्स सव्वस्स पगासणाए"** - लोकालोक को प्रकाशित करने वाला ज्ञान ही है, जिसे हम स्वाध्याय के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। जिस तरह सूर्य की किरणें बादलों को

चीरकर सूर्य को प्रकट कर देती है, उसी प्रकार स्वाध्याय की किरणें अज्ञान रूपी तम के स्थान पर सम्यक् ज्ञान को प्रकट कर देती हैं। **''तमसो मा ज्योतिर्गमय''** अर्थात् अंधकार से प्रकाश की तरफ आना ही ज्ञान है। वास्तव में अज्ञान अंधकार है और ज्ञान प्रकाश। स्वाध्याय एक ऐसा चिन्मय चिराग है, जो भव कानन में भटकने वाले व्यक्ति की राह को रोशन करता है। यह एक अनुपम सारथी भी है, जो मिथ्यात्व रूपी अज्ञान तिमिर का हरण करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्ञान आत्मा का स्वभाव है। जब तक आत्मा अपने स्वभाव को उजागर नहीं करेगी तब तक अपना बोध कैसे कर सकेगी। स्वाध्याय के द्वारा ही आत्मबोध प्राप्त किया जाता है।

स्वाध्याय से ही अन्त:करण की शक्तियाँ जागृत होती है। इससे अहंकार, ममत्व एवं संकीर्ण विचारों का निरसन तो होता ही है, साथ ही जीवन में सरलता, निर्लोभता, उदारता, वात्सल्यता, सहृदयता आदि भावों का भी उद्भव होता है।

स्वाध्याय हमारे लिए दीर्घकालीन फलदायी होता है, जो हमारा ज्ञान बढ़ाता है, मान बढ़ाता है और व्यक्तित्व में प्रखरता प्रदान करता है। उत्तराध्ययन सूत्र 29वें अध्ययन की 18वीं गाथा में स्पष्ट किया गया है– **''सज्झाएणं भंते! नाणावरणिज्जं कम्मं खवेई''** अर्थात् स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है। दूसरे अर्थों में आत्मा मिथ्या ज्ञान को दूर कर सम्यक् ज्ञान का अर्जन करता है। ज्ञान को दया धर्म से पूर्व स्थान पर रखते हुए शास्त्रकारों ने दशवैकालिक सूत्र में कहा है– **''पढमं नाणं तओ दया''**। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि साधक को जब तक स्व का ज्ञान नहीं होगा, वह जीवों पर दया कैसे करेगा, उनकी रक्षा कैसे करेगा, मोक्ष मार्ग पर आगे कैसे बढ़ेगा? इसलिए चरित्र से पूर्व ज्ञान होना आवश्यक है। इतना ही नहीं आचार्य कुन्दकुन्द ने दर्शनपाहुड़ में लिखा है– **''णाणं णरस्य सारो''** अर्थात् ज्ञान मानव जीवन का सार है। ज्ञान सम्यक् होना चाहिए, क्योंकि सच्चा ज्ञान वही हो सकता है जो आत्मा को भवभ्रमण से बचाए और मोक्ष मार्ग पर अग्रसर करे। कहा भी है– **''सा विद्या या विमुक्तये''** अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति का कारण हो।

स्वाध्याय और ज्ञान का परस्पर अभिन्न सम्बन्ध है। स्वाध्याय क्रिया है ज्ञान उसका प्रतिफल। स्वाध्याय के द्वारा ही हेय, ज्ञेय और उपादेय तत्त्वों का ज्ञान उपलब्ध होता है। तदनुरूप आचरण कर जीव अपना कल्याण कर सकता है। बिना ज्ञान के साधक की अवस्था ऐसी ही है जैसे चक्षुहीन यात्री की। बिना ज्ञान के क्रिया अंधेरे में लाठी चलाने के समान है। अत: ज्ञान रूपी दिव्य ज्योति प्राप्त करने के लिए उसमें स्वाध्याय रूपी स्नेह की आवश्यकता है। अपने अज्ञान का नाश करना ही साधक का लक्ष्य है। स्वाध्याय से विवेक रूपी सूर्य उदित होता है, जिसमें मिथ्या रूपी तिमिर तिरोहित हो जाता है।

(5) स्वाध्याय से दु:ख मुक्ति :

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है – **''सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे''** अर्थात् स्वाध्याय करते रहने से समस्त दु:खों से मुक्ति मिलती है। दु:ख का कारण इच्छा है। इच्छाएँ अनन्त होती हैं अर्थात् **''इच्छा हु आगास समा अणंतिया''** अर्थात् इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। इच्छाएँ कषायों को उत्पन्न करती हैं, जिनसे असन्तोष प्राप्त होता है और यही दु:ख का मूल कारण है। जब तक तृष्णा का अन्त नहीं होता, तब तक शान्ति नहीं मिलती। स्वाध्याय के द्वारा तृष्णा पर विजय पाना संभव है। स्वाध्याय से जीवन में समरसता का संचार होता है और सन्तोष की अभिवृद्धि होती है, जिससे हमें वास्तविक शान्ति व सच्चे सुख का अनुभव होता है। स्वाध्याय के विषय में कहा गया है कि अंधे व्यक्ति के लिए करोड़ों दीपकों का प्रकाश भी व्यर्थ है, जबकि नेत्र ज्योति वाले व्यक्ति के लिए एक दीपक का प्रकाश भी सार्थक होता है। स्वाध्याय द्वारा अन्तरचक्षु खुलने से भी कष्ट दूर हो जाते हैं। स्वाध्याय मनुष्य का ऐसा मित्र है, जो अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में इसका साथ निभाता है और मार्गदर्शन

कर मानसिक तनावों को दूर करता है। सद्साहित्य के स्वाध्याय से व्यक्ति को हमेशा आत्मसन्तोष और आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। स्वाध्याय मानसिक शान्ति का अमोघ उपाय है।

मुक्ति के लिए पूर्व कर्मों की निर्जरा या क्षय आवश्यक माना गया है। स्वाध्याय करने से साधक की बुद्धि निर्मल होती है। इसके द्वारा घर-गृहस्थी में भी क्लेश व वैर-विरोध का शमन संभव है। इसी से कष्ट भी दूर हो सकते हैं। यदि एकाग्रचित्त से शुद्ध स्थान पर नियमपूर्वक निरन्तर स्वाध्याय किया जाए तो स्वाध्याय में आनन्द प्राप्त होता है।

(6) स्वाध्याय परम औषधि :

जैसे हमारे शरीर के रोगों को डॉक्टर दवा आदि से ठीक करते हैं वैसे ही तीर्थंकर भगवान आगम रूपी दवा से कर्मरूपी रोगों को दूर करने वाले हैं। हमें उसे प्रतिदिन श्रद्धा के साथ सेवन करना चाहिए, जिससे हमारे ज्ञानावरणीय कर्म क्षय हों और हम कैवल्य को प्राप्त कर सकें। अगर श्रद्धा सहित इस स्वाध्याय रूपी दवा का सेवन करेंगे तो केवलज्ञान हमसे दूर नहीं होगा। प्रतिदिन स्वाध्याय करने से बुद्धि निर्मल होती है, जिससे पाप नष्ट होकर पुण्य का बन्ध होता है साथ ही निर्दोष दान देने की भावना में भी अभिवृद्धि होती है।

स्वाध्याय एक ऐसी औषधि है, जो जीवन को दूषित करने वाले मिथ्यात्व तथा आत्मा को कलुषित करने वाले सभी प्रकार के कार्यों व दुर्विचारों को निकट नहीं आने देती और साधक का अन्तर्मन शुद्ध चिन्तन, शुभ एवं परम कल्याणकारी कार्यों में निरत रहता है।

पातंजलि योग सूत्र (2.4) में कहा गया है- **''स्वाध्यायाष्टिदेवतासम्प्रयोग:''** अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता (आत्मा) का बोध होकर साधक को अभिष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है। अभिष्ट की सिद्धि से तात्पर्य है- अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और अनन्त चारित्र की सिद्धि। जब ये प्राप्त हो जाते हैं तो किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं रहती। अत: कहा गया है कि स्वाध्याय 'योग' की वह परम औषधि है जिसमें ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग का समन्वय है एवं जिससे परमात्म पद की प्राप्ति होती है। स्वाध्याय तो वह चाबी है जो सिद्धत्व के बन्द दरवाजे खोल देती है, क्योंकि स्वाध्याय द्वारा अध्यात्म भाव जागृत होते हैं और इसी से आत्मा को परमात्मा बनने का संदेश प्राप्त होता है। अत: स्पष्ट है कि सिद्धि का सफर तय करने के लिए स्वाध्याय स्पंदन है। इसमें बैठने वाला व्यक्ति कर्मशत्रुओं को आसानी से जीत सकता है।

जिस प्रकार हम शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहने के लिए नियमित रूप से दवा लेते हैं, वैसे ही कर्मों के रोगों को दूर करने के लिए स्वाध्याय की दवा लेना अनिवार्य है, जिससे परम शान्ति, परम आनन्द एवं आत्मसन्तोष की अनुभूति हो सके।

उपरोक्त छ: बातें यह सिद्ध करती है कि स्वाध्याय ही मुक्ति एवं स्वचेतना का सशक्त माध्यम है तथा मोक्ष की मंजिल तक पहुँचाने वाला उपाय भी। इसलिए नियमित स्वाध्याय से अपने जीवन को निर्मल एवं पवित्र बनाएँ।

> ***प्रभु ने स्वाध्याय के पाँच भेद कहे हैं- वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। अनुप्रेक्षा करेंगे तब ही धर्मकथा के अधिकारी बनेंगे अन्यथा नहीं। पहले वाचना की बात लें। वाचना गुरुमुख से हो। परन्तु क्या ऐसा होता है? छापेखानों के कारण आगम सर्वसुलभ हो गए हैं और गाँव-गाँव में, घर-घर में आगम उपलब्ध है। इसे लोग अपना सौभाग्य मान सकते हैं, पर मैं कहता हूँ- यह हमारा दुर्भाग्य है। प्रकाशन जितना बढ़ा है, उतना ज्ञान नहीं बढ़ा। कारण यह है कि धार्मिक साहित्य का प्रकाशन और उसकी उपलब्धि तो बढ़ी है, परन्तु लोगों की न ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा बढ़ी है, न ज्ञान के प्रति प्रेम और न ही उनका ज्ञान बढ़ा है। इसके विपरीत ज्ञान के लाघव की स्थितियाँ ही बढ़ी हैं। इस प्रकार ज्ञान का ह्रास ही हुआ है।***
>
> **- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

संस्कार सौरभ

स्वाध्याय में विवेक

-प्रो. सुमेरचन्द जैन, पूर्व प्राचार्य, बीकानेर

श्रुत का अध्ययन-अध्यापन, अनुशीलन स्वाध्याय कहलाता है। शास्त्रकारों ने स्वाध्याय की महिमा का वर्णन करते हुए इसे असाधारण तप बताया है। स्वाध्याय के बारे में तो यहाँ तक कहा गया है कि स्वाध्याय के समान कोई तप नहीं है। जिनवाणी का सारा आधार श्रुत पर है और श्रुत का आधार स्वाध्याय है। स्वाध्याय के आधार से ही श्रुत में स्थायित्व आता है।

:: स्वाध्याय के भेद ::

1. वाचना : सूत्र और अर्थ को शुद्धतापूर्वक पढ़ना वाचना है। शिष्यों को आगमों की वाचना देना और शिष्यों द्वारा गुरु से भक्तिपूर्वक वाचना लेना वाचना स्वाध्याय है। मन की एकाग्रता के साथ वाचना लेने या देने से ज्ञानावरणीय कर्म की निर्जरा होती है और नवीन ज्ञान की पर्यायें प्रकट होती हैं। श्रुत की भक्ति के साथ वाचना करने से धर्म के प्रति अनुराग बढ़ता है और इसके कारण कर्म की महानिर्जरा होती है।

2. पृच्छना : वाचना लेते समय होने वाली शंकाओं को विशिष्ट ज्ञानीजनों से पूछकर यथार्थ निर्णय लेना, पृच्छना नामक स्वाध्याय है। इस स्वाध्याय से सूत्र व अर्थ संबंधी भ्रांतियों और त्रुटियों का संशोधन होकर कांक्षामोहनीय कर्म का विच्छेद होता है। प्रश्न पूछने का प्रयोजन तत्त्व का निर्णय करना होना चाहिए। प्रश्नकर्त्ता को यह दृढ़तम विश्वास होना चाहिए कि तीर्थंकर देवों ने जो प्ररूपित किया है, वह यथार्थ ही है, परंतु मेरी मंदबुद्धि से या क्षयोपशम की विचित्रता के कारण उसका रहस्य मेरी समझ में नहीं आ रहा है। उसी रहस्य को समझने के लिए जिज्ञासा बुद्धि से प्रश्न किए जाने चाहिए।

3. परिवर्तना : उपार्जित ज्ञान को स्थिर रखने के लिए पुन:-पुन: उसको फेरना परिवर्तना स्वाध्याय है। इससे ज्ञान ताजा बना रहता है, विस्मृति से बचाव होता है, ज्ञान में स्पष्टता आती है और व्यंजन लब्धि की प्राप्ति होती है।

4. अनुप्रेक्षा : सूत्र और अर्थ का गहन चिन्तन करना अनुप्रेक्षा स्वाध्याय है। किसी भी राष्ट्रीय और आगमिक विषय पर एकाग्रतापूर्वक सम्पूर्ण मनोयोग के साथ गहन चिन्तन करने से अनेक गुत्थियों का समाधान तो प्राप्त होता ही है, साथ ही अपूर्व ज्ञान की प्राप्ति होती है। अनुप्रेक्षा का लाभ बताते हुए आगमकार ने कहा है कि अनुप्रेक्षा स्वाध्यायी आयुकर्म को छोड़कर शेष ज्ञानावरणीय आदि सात कर्म प्रवृत्तियाँ यदि गाढ़ बंधन से बंधी हुई हो तो उन्हें शिथिल बंधन वाली बना लेता है और असातावेदनीय कर्म को प्राय: नहीं बांधता तथा अनादि-अनंत संसार से शीघ्र ही पार हो जाता है।

5. धर्मकथा : एकान्त अनुग्रह बुद्धि से श्रोताओं को धर्म का उपदेश देना धर्मकथा नामक स्वाध्याय तप है। जो वक्ता एकान्त हितवृद्धि से धर्मोपदेश देता है, उसे एकान्त लाभ होता है। धर्मकथा करने वाला व्यक्ति महानिर्जरा करता है और प्रवचन की प्रभावना करता है। प्रवचन की प्रभावना करने वाला जीव शुभ कर्मों का बंध करता है।

धर्मकथा के चार प्रकार बतलाए गए हैं-

1. आक्षेपणी : जिस धर्मोपदेश के द्वारा श्रोताओं के चित्त को संसार और विषयों की ओर से हटाकर धर्मचर्चा में लगाया जाता है वह आक्षेपणी कथा है। इसके चार प्रकार हैं- आचार आक्षेपणी, व्यवहार आक्षेपणी, पर्याप्त आक्षेपणी और दृष्टिवाद आक्षेपणी।

2. विक्षेपणी कथा : इस कथा शैली में परपक्ष का खण्डन और स्वपक्ष का मण्डन किया जाता है।

3. संवेगनी कथा : जिस कथा द्वारा संसार की नीरसता बताकर मोक्ष या धर्म के प्रति रुचि जागृत की जाए वह संवेगनी कथा है।

4. निर्वेदनी कथा : ईहलोक और परलोक के पाप द्रव्य के शुभाशुभ फल को बताकर संसार से उदासीनता पैदा करने वाली कथा निर्वेदनी कथा है।

संस्कार सौरभ

स्वाध्याय : उत्तम तप

-सजग, नीमच

स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ है- ''स्वयं का अध्ययन करना''। किंतु जैन सिद्धांत के अनुसार स्वाध्याय से आशय है- ''सत्साहित्य पढ़ना, उनका चिंतन-मनन करना तथा उनका उपदेश देना।'' आगम के अनुसार बारह तप में से एक तप है- स्वाध्याय। यह आंतरिक तप है तथा इसे सर्वोत्तम तप की संज्ञा दी गई है। सर्वोत्तम तप की संज्ञा के पीछे मुख्य कारण है स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मों की निर्जरा होकर सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति होती है, जिसके द्वारा ही जीव अज्ञान रूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश को प्राप्त करता है।

:: स्वाध्याय-विवेक ::

स्वाध्याय-विवेक से आशय है कि स्वाध्याय करते समय कौनसी बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। आगमों का स्वाध्याय आगम में वर्णित विधि के अनुरूप ही किया जाना चाहिए अर्थात् द्रव्य, क्षेत्र और काल से संबंधित कुल 32 दोषों को टालकर ही स्वाध्याय किया जाना चाहिए। इसके अलावा कुछ सामान्य बिन्दु जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए, वे हैं-

(1) धार्मिक पुस्तक या आगम ग्रंथ को रखने के लिए किसी सुरक्षित स्थान का चयन किया जाना चाहिए, जिससे उनको किसी कीट या अन्य जीव द्वारा हानि न पहुँचाई जा सके।

(2) निश्चित समय अंतराल पर पुस्तकों का प्रतिलेखन अवश्य करें।

(3) यदि संभव को सके तो तिक्खुत्तो के पाठ से 3 बार वंदना करके ही स्वाध्याय प्रारंभ करें।

(4) पुस्तकों का रखरखाव ठीक प्रकार से किया जाना चाहिए, जिससे उन पर मौसम का कम से कम प्रभाव हो।

:: स्वाध्याय के लाभ ::

पाप कर्मों की निर्जरा, धार्मिक ज्ञान में वृद्धि, विनम्रता में वृद्धि, विवेक में वृद्धि, क्रोध आदि कषाय में कमी, मानसिक शांति, तनाव में कमी। स्वाध्याय के लाभ जान लेने के पश्चात् आपके मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि हम स्वाध्याय का लाभ कैसे प्राप्त करें? इस हेतु आपके लिए एक सुअवसर है 'महत्तम महोत्सव'। इस महोत्सव को ज्ञानार्जन, स्वाध्याय सहित कुल नौ प्रवृत्तियों में बाँटा गया है, जिनमें से एक प्रवृत्ति है **'स्वाध्याय'**। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकल्पों में से आप कोई भी धार्मिक पुस्तक मंगवाकर उसका स्वाध्याय कर सकते हैं।

::स्वाध्याय प्रवृत्ति में उपलब्ध धार्मिक पुस्तकें::

आचार्य भगवन् के प्रवचन व चिंतन की पुस्तकें, नौ महापुरुषों (आचार्यों) के जीवन परिचय की पुस्तकें एवं आध्यात्मिक आरोग्यम्।

:: ज्ञानार्जन प्रवृत्ति में उपलब्ध पुस्तकें ::

श्रुत रमण (आगम के अर्थ का स्वाध्याय) प्रकल्प के अंतर्गत लगभग 22 आगम उपलब्ध हैं। आप इस प्रकल्प में रजिस्ट्रेशन करवाकर ये आगम मंगवा सकते हैं।

इस लेख को पढ़ने के पश्चात् अपनी अनुकूलता के अनुसार स्वयं किसी धार्मिक पुस्तक का स्वाध्याय करें तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों को भी स्वाध्याय करने हेतु प्रेरित करें। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत आप जिस भी प्रकल्प को चुनते हैं उसके लिए रजिस्ट्रेशन अवश्य कराएँ।

संस्कार सौरभ

स्व का अध्ययन ही स्वाध्याय

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

स्व - स्व की अनुभूति
वा - वाणी का माधुर्य
ध्या - ध्यान में
या - याद आए प्रभु के वचन
य - यह स्मरण रहे
वि - विनय भावपूर्वक
वे - वैमनस्य हटे मन का
क - करते रहें ऐसे कर्म जिनसे बढ़ता रहे हृदय में धर्म

"स्वस्मिन अध्याय इति स्वाध्याय" अर्थात् स्व का अध्ययन ही स्वाध्याय है। जीवन में जितना जरूरी भोजन-पानी की पूर्ति है उतना ही जरूरी जीवन को निर्मल-पवित्र रखना है। हमारे चरण हमें मंजिल तक पहुँचाते हैं, पर अच्छा आचरण हमें भगवान तक पहुँचाता है। जीवन में सुख-शांति केवल सुविधाओं से नहीं मिलती। जीवन में मधुरता के लिए दिमाग में सच्चाई, चेहरे पर प्रसन्नता और हृदय में पवित्रता स्व की अनुभूति का पावन, पुनीत अवसर है। स्वाध्याय इसी भव में बन्धन से मुक्त होने का पराक्रम है। स्वाध्याय द्वारा हम स्व की अनुभूति कर सकते हैं। स्वाध्याय ही हमें हमारी पहचान देता है। जिस तरह शरीर की क्षुधा आहार से शांत होती है, उसी तरह आत्मा की क्षुधा की तृप्ति स्वाध्याय से होती है। अनन्त-अनन्त काल से यह आत्मा पराध्याय में लीन रही है। जिससे उसकी अनादिकालीन तृष्णा एक बूँद भी कम नहीं हुई है। यद्यपि इस आत्मा ने संसार के सभी पौद्गलिक सुख अनेक बार अनेक प्रकार से भोगे हैं, पर उनसे उसकी तृष्णा घटी नहीं प्रत्युत आकाशवत् बढ़ती ही रही है। आत्मा में अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ होना उसी अनंत तृष्णा का विपाक है। जिस तरह मृग को मरुस्थल में सूर्य के प्रकाश से दूर क्षितिज पर पानी का समुद्र नजर आता है और वह उसको पाने हेतु खूब दौड़ता है, पर अंत में उसे पानी की एक बूँद भी नहीं मिलती और वह प्राण गँवा बैठता है। उसी तरह यह आत्मा पराध्याय रूपी सूर्य के प्रकाश में पौद्गलिक मरुस्थल में सुख का सागर देखती है, पर उसे सच्चे सुख की एक बूँद भी नहीं मिल पाती और अन्त में दुर्गति का शिकार होना पड़ता है।

अनंत-अनंत आत्माएँ जो इस प्रकार मोह व अज्ञान के पराध्याय में भटक रही हैं, उन पर अनंत करुणा कर करुणावतार तीर्थंकर देव, सच्चे सुख का शाश्वत स्तोत्र वीतराग वाणी को स्वाध्याय हेतु श्रुत रूप में प्रकट करते हैं। "स्वस्थ अध्ययनम् स्वाध्याय" अर्थात् आलस्य त्याग कर ज्ञानाराधना करना स्वाध्याय है। "जं सोच्चा पडिवज्जंति तवं खंतिं अहिंसयं" अर्थात् जिसको पढ़ने से अन्तर में तप क्षमा और अहिंसा की ज्योति जगे, वही स्वाध्याय है। स्वाध्याय का एक भेद वाचन है, परन्तु मात्र वाचन ही स्वाध्याय नहीं है। वाचन का पाचन कर लेना, आत्मसात् कर लेना यथार्थत: स्वाध्याय है। स्वाध्याय के मुख्य पाँच भेद हैं-

1. वाचना : अध्ययन करना, पढ़ना।
2. पृच्छना : पठित विषय पर प्रश्न, जिज्ञासा आदि करना।
3. पर्यटना : पठित विषय की पुनरावृत्ति करना।
4. अनुप्रेक्षा : पठित विषय पर चिन्तन-मनन करना।
5. धर्मकथा : विषय को अच्छी तरह से समझकर कथानक पढ़ना, पढ़ाना।

आत्मा के लिए स्वाध्याय परम आवश्यक और

अनिवार्य है। साधु के लिए तो प्रतिदिन अष्ट प्रहर में चार प्रहर स्वाध्याय करने का विधान है। श्रावक के लिए भी स्वाध्याय करना कर्त्तव्य है। स्वाध्याय ऐसा आन्तरिक तप है जिसकी समानता अन्य तप नहीं कर सकते। प्रभु ने फरमाया है- **''न वि अत्थि, न वि अहो हि सज्झाय समं तवो''** अर्थात् स्वाध्याय के समान तप न तो है और न होगा। सब दु:खों की एक ही रामबाण दवा है स्वाध्याय। इससे अलौकिक शांति मिलती है।

जैसे माचिस की तिली में अग्नि छिपी रहती है, जो घर्षण से प्रकट हो जाती है, वैसे ही निरंतर स्वाध्याय से सुप्त आत्मिक-शक्तियाँ भी प्रकट हो जाती है और आत्मा स्वाध्याय से ध्यान और समाधि की स्थिति में पहुँच जाती है। स्वाध्याय टॉर्च के समान मार्गदर्शक है। एक सज्जन सपरिवार रात्रि में टॉर्च लेकर घूमने निकले। मार्ग में तूफान के कारण बिजली बंद हो गई और टॉर्च नीचे गिर गई। पत्नी ने कहा- टॉर्च जलाओ, लगता है कोई चीज गिर गई है तो सज्जन बोले- टॉर्च ही तो गिरी है, अब क्या जलाऊँ? यह एक दृष्टांत है। अज्ञान रूपी अंधकार में विषय-कषाय रूपी तूफान में फंसे व्यक्ति के लिए स्वाध्याय टॉर्च है। उसे साथ रखें तो संसार रूपी अटवी के संकटों से बचकर गंतव्य स्थान तक सानंद पहुँचा जा सकता है। जो स्वाध्याय रूपी टॉर्च को व्यर्थ का बोझ मान त्याग देता है, वह चौरासी लाख योनियों में मारा-मारा भटकता रहता है।

स्वाध्याय का झरना निरंतर बहे,
ध्यान की धारा हृदय में रहे।
पापी भी तिर जाएगा जग से,
यदि अन्तर में स्वाध्याय की गंगा बहे।।

श्रमणोपासक

भक्ति रस

स्वाध्याय

-धर्मेंद्र पारख, रायपुर

भक्ति रस

स्व का अध्ययन हो,
आत्मा का परमात्मा से मिलन हो।
सुविचारों का जीवन में आगमन हो,
ऐसा समीक्षण ही स्वाध्याय है।।

ज्ञान का विकास हो,
विज्ञान जिसमें स्वतः समाहित हो।
दूरदृष्टि जिसका आधार हो,
सत्मार्ग पर गमन ही स्वाध्याय है।।

शास्त्रों का वांचन हो,
ज्ञानीजनों के ज्ञान का मंथन हो।
जीवन में शुद्धता का उपार्जन हो,
ऐसी धार्मिक क्रिया ही स्वाध्याय है।।

आत्मा लोक-परलोक से पृथक हो,
मन शरीर द्वारा संचालित हो।
पाप कर्मों का उन्मूलन हो,
ऐसे सत्कार्य ही स्वाध्याय हैं।।

चारित्र से दर्शन अलौकिक हो,
साधना से संयम परिभाषित हो।
नित-प्रतिदिन गुणों का विकास हो,
ऐसी संयम साधना ही स्वाध्याय है।।

पंच-परमेष्ठी आराधना पर पूर्ण श्रद्धा हो,
जीवन का हर क्षण भक्ति में रमण हो।
स्वहित हो पर जनकल्याण समाहित हो,
ऐसी उपासना ही स्वाध्याय है।।

स्वाध्याय के रूप अनेक पर लक्ष्य एक हो,
ज्ञान-दर्शन-चारित्र का वो उद्गम हो।
चित्त विवेकशील शरीर संयम के अधीन हो,
जीवन करुणा और प्रेम से भरा हो।
ऐसा जीवन जीना ही स्वाध्याय है।।

श्रमणोपासक

अस्वाध्यायिक

-संकलित

निम्नलिखित बत्तीस अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए-

अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्यायिक

क्र.	नाम	अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्यायिक	काल मर्यादा
1.	उल्कापात	रेखायुक्त (पीछे पूँछ के समान) या प्रकाश युक्त तारे का गिरना	एक प्रहर तक
2.	दिग्दाह	किसी दिशा में महानगर जलने के समान ऊपर प्रकाश नीचे अधंकार दिखाई देना।	एक प्रहर तक
3.	गर्जित	मेघ गर्जना होना।	दो प्रहर तक
4.	विद्युत	बिजली चमकना।	एक प्रहर तक
नोट :-		सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र के योग से लेकर स्वाति नक्षत्र के योग होने तक मेघ गर्जना और बिजली चमकना संबंधी अस्वाध्यायिक नहीं माना जाता। आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र का काल तारीख के हिसाब से 21 जून से 25 अक्टूबर के लगभग होता है।	
5.	निर्घात	बादल के होने पर या न होने पर व्यन्तर कृत महागर्जना के समान ध्वनि का होना। (वर्तमान में बिजली कड़कना/गिरना इसके अन्तर्गत माना जाता है।)	आठ प्रहर तक
6.	यूपक	शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया को रात्रि की प्रथम पौरुषी पर्यन्त। (ये पक्खी के बाद की तीन रात्रियाँ समझना, चाहे पक्खी चतुर्दशी की हो या अमावस्या की।)	प्रहर रात्रि तक
7.	यक्षादीप्त	आकाश में एक दिशा में बीच-बीच में (एक-एक कर) व्यन्तर (देवता) कृत विद्युत के समान प्रकाश होना।	एक प्रहर तक
8.	धूमिका	काली धूँवर (अंधकार युक्त, धुएँ के समान) का आना।	जब तक रहे
9.	महिका	श्वेत धूँवर का आना।	जब तक रहे
10.	रज-उद्घात	चारों दिशाएँ धूल से भर जाने पर सब ओर अंधकार जैसा दिखाई दे। (चाहे वायु हो या न हो)। (दिग्दाह एवं यक्षादीप्त वर्तमान में कम दृष्टिगोचर होते हैं।)	जब तक रहे

औदारिक संबंधी 10 अस्वाध्यायिक

11-13.	हड्डी, रक्त, मांस

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय संबंधी अस्वाध्यायिक

*	रक्त सहित चर्म, रुधिर, मांस, अस्थि, अण्डा, अण्डे का कलल या पशु-पक्षी का शव आदि साठ हाथ के भीतर पड़े हो तो उपर्युक्त सभी, जब से जीव रहित हुए तब से (चर्म, रुधिर, मांस आदि के रहने पर भी तीन प्रहर के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)	तीन प्रहर तक

*	किसी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च (बड़ी कायवाले) की जहाँ घात (तिर्यञ्च या मनुष्य के द्वारा) हुई हो तो वहाँ चारों ओर साठ हाथ तक (कम से कम 3 प्रहर टालना आवश्यक है, चाहे सूर्योदय हो भी गया हो)		अगला सूर्योदय न होवे तब तक
*	पका हुआ मांस अस्वाध्यायिक नहीं है।		
*	साठ हाथ के भीतर जर वाले पशुओं की प्रसूति हो तो जर गिरे तब तक और जर गिरने के बाद		तीन प्रहर तक
*	साठ हाथ के भीतर बिना जर वाले पशुओं की प्रसूति के बाद		तीन प्रहर तक
	गर्भज मनुष्य संबंधी अस्वाध्यायिक		
*	सौ हाथ के भीतर रक्त सहित चर्म, खून, मांस यदि पड़े हो तो ये पदार्थ जब से जीव रहित हुए, तब से (उसके बाद नहीं, चाहे वह पदार्थ वहाँ पड़ा हो या न हो)		आठ प्रहर तक
*	जिस गली/गृहपंक्ति में से शव जब तक नहीं निकाला जाए तब तक उस गली/ गृहपंक्ति में अस्वाध्यायिक रहता है।		
*	मनुष्य की हड्डी सौ हाथ के भीतर हो तो जब से जीव रहित हुई तब से (12 वर्ष के बाद अस्वाध्यायिक नहीं। 12 वर्ष के पहले ही यदि अस्थि जली हुई हो या वर्षा आने से धुल गई हो तो जलने व धुलने के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)		बारह वर्ष तक
*	खून यदि विवर्ण हो गया हो यानी उसकी पर्याय/रंग बदल गया हो तो अस्वाध्यायिक नहीं होता)		
*	बालक-बालिका के जन्म से क्रमशः सात और आठ दिन तक 100 हाथ के भीतर अस्वाध्यायिक माना जाता है।		
14.	अशुचिसामन्त	मल, मूत्र, कलेवर आदि अशुभ पदार्थ	दिखाई दे या उनकी दुर्गंध आए
15.	श्मशानसामन्त	श्मशान भूमि के चारों ओर	100-100 हाथ तक
16.	चन्द्रग्रहण	चन्द्रग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 8 प्रहर व उत्कृष्ट 12 प्रहर तक
17.	सूर्यग्रहण	सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 12 प्रहर व उत्कृष्ट 16 प्रहर तक
नोट :- चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ अस्वाध्यायिक समझना।			
18.	पतन	प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के कालगत हो जाने पर जिस क्षेत्र में वातावरण विक्षोभ हो तो	जब तक विक्षोभ रहे
19.	राजव्युद्ग्रह	युद्ध भूमि के आस-पास	जब तक युद्ध जनित क्षोभ रहे
20.	उपाश्रय में औदारिक शरीर	उपाश्रय की सीमा में तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय या मनुष्य का शव पड़ा रहे	जब तक शव पड़ा रहे तब तक

21. से 28.	चार पूर्णिमा और इसके बाद की प्रतिपदा	आषाढ़, आश्विन, कार्तिक व चैत्र इन चारों पूर्णिमाओं को तथा इन पूर्णिमाओं के बाद की प्रतिपदाओं को	दिन-रात

* जिस दिन पंचांग (कैलेण्डर) में पूनम व प्रतिपदा बताई हो उस दिन अस्वाध्यायिक मानना।
* यदि दो पूनम हो तो दोनों पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना, प्रतिपदा को नहीं।
* यदि दो प्रतिपदा हो तो प्रथम प्रतिपदा और पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।
* यदि पूर्णिमा क्षय हो तो चतुर्दशी और प्रतिपदा को अस्वाध्यायिक मानना।
* यदि प्रतिपदा क्षय हुई हो तो चतुर्दशी व पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।

29. से 32.	संधि समय	सूर्योदय व सूर्यास्त, मध्याह्न व अर्धरात्रि- इन चार सन्ध्याओं में	एक-एक मुहूर्त्त

सामान्यतया (अस्वाध्याय काल के अलावा) प्रतिदिन कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन के प्रथम व चौथे प्रहर में तथा रात के प्रथम व चौथे प्रहर में कर सकते हैं। (4 संधिकाल छोड़कर) उत्कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन में व रात में कभी भी कर सकते हैं। (4 संधिकाल छोड़कर)।

4 संधिकाल - सूर्योदय, सूर्यास्त, मध्य दिवस (दो पोरसी आने का समय) व मध्यरात्रि - इनके 24 मिनिट पहले से 24 मिनिट बाद तक अर्थात् यदि 6 बजे सूर्योदय होता है तो प्रात: 5:36 से प्रात: 6:24 तक सूर्योदय का संधिकाल रहता है। इसी तरह शेष 3 संधिकाल के लिए भी समझना चाहिए।

अस्वाध्याय काल में 32 आगमों में से आवश्यक सूत्र को छोड़कर शेष 31 आगम का मूलपाठ, गाथाओं का स्वाध्याय/वाचनी/याद करना नहीं कर सकते हैं। मगर अस्वाध्याय काल में आगम का हिन्दी अर्थ, भावार्थ व अन्य जैसे- जैन सिद्धान्त बत्तीसी, कर्मसिद्धान्त, नानेशवाणी, राम उवाच, थोकड़े/बोल आदि का अध्ययन किया जा सकता है।

:: प्रहर गणना ::

हर ऋतु/हर मौसम में दिन के चार प्रहर व रात्रि के चार प्रहर होते हैं। यानी एक दिन-रात (24 घंटे) में 8 प्रहर होते हैं।

❊ दिन का एक प्रहर का समय निकालने का तरीका

सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच के घंटे ÷ 4

जैसे कि सूर्योदय होता है प्रात: 6:10 बजे, सूर्यास्त होता है सायं 6:50 बजे

इसके बीच के घण्टे-

प्रात: 6:10 से सायं 6:50 तक = 12 घंटे 40 मिनिट

1 प्रहर का समय = 12 घंटे 40 मिनिट ÷ 4 = 3 घंटे 10 मिनिट

❊ पोरसी आने का समय = सूर्योदय + 1 प्रहर का समय

पोरसी आने का समय = सूर्योदय प्रात: 6:10 + 3 घंटे 10 मिनिट यानी = प्रात: 9:20 पर

❊ डेढ़ पोरसी आने का समय = सूर्योदय + 1 प्रहर का समय + आधा प्रहर का समय

डेढ़ पोरसी आने समय = सूर्योदय प्रात: 6:10 + 1 प्रहर का समय 3 घंटे 10 मिनिट + आधा प्रहर का समय (1 घंटा 35 मिनिट)

प्रात: 6:10 + 3 घंटे 10 मिनिट + 1 घंटा 35 मिनिट = प्रात: 10:55 पर

❊ रात्रि का एक प्रहर निकालने का तरीका

सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच के घंटे ÷ 4

जैसे कि यदि सूर्यास्त सायं 6:50 पर होता है और सूर्योदय प्रात: 6:10 पर होता है तो इसके बीच के घंटे

सायं 6:50 से प्रात: 6:10 तक = 11 घंटे 20 मिनिट

1 प्रहर का समय = 11 घंटे 20 मिनिट ÷ 4 = 2 घंटे 50 मिनिट

यानी सूर्यास्त सायं 6:50 + 2 घंटे 50 मिनिट = रात्रि 9:40 तक

नैरयिक व परमाधार्मिक

15-16 अक्टूबर 2023 अंक से आगे....

प्रश्न 16. क्षेत्र वेदना कितने प्रकार की होती हैं?

उत्तर दस प्रकार की- क्षुधा, तृषा, शीत, ताप, महाज्वर, खुजली, रोग, अनाश्रय, शोक, भय।

प्रश्न 17. परस्परोदीरित वेदना का अर्थ क्या है?

उत्तर नैरयिक जीव परस्पर (आपस में) लड़ते हैं व दाँत और नाखून से एक-दूसरे को बहुत ही दु:ख देते हैं। उसका नाम परस्परोदीरित वेदना है।

प्रश्न 18. परमाधार्मिककृत वेदना का क्या अर्थ है?

उत्तर परमाधार्मिक जाति के क्रूर देवता हैं। वे देवता नैरयिक को छेदते-भेदते हैं और बहुत ही दु:ख देते हैं।

प्रश्न 19. परमाधार्मिक देवता कितनी जाति के हैं?

उत्तर 15 जाति के-

1. **अम्ब** (आकाश में उछालकर एकदम नीचे पटक देते हैं)।
2. **अंबरीष** (छुरी से छोटे-छोटे टुकड़े करके भाड़ में पकने योग्य बनाते हैं)।
3. **श्याम** (चोर को मारने की तरह जबरन प्रहार करते हैं)।
4. **शबल** (सिंह, रीछ, कुत्ते, बिल्ली आदि क्रूर रूप बनाकर नैरयिक को चीर-फाड़ कर माँस निकाल लेते हैं)।
5. **रौद्र** (जैसे बकरे आदि को त्रिशूल से छेदते हैं वैसे ही ये नैरयिक को त्रिशूल, भाले आदि से छेदते हैं)।
6. **महारौद्र** (कसाई की तरह नैरयिक के अंग को खण्ड-खण्ड करते हैं)।
7. **काल** (हलवाई जैसे तलते हैं)।
8. **महाकाल** (चिमटे से उसी का माँस तोड़-तोड़कर उसी को खिलाते हैं)।
9. **असिपत्र** (गर्मी की घबराहट से वृक्षों के नीचे बैठने वाले नैरयिकों पर तलवार जैसे वृक्षों के पत्र डालकर टुकड़े-टुकड़े करते हैं)।
10. **धनुष** (हजारों बाणों से नैरयिक को छेदते हैं)।
11. **कुंभ** (नींबू-मिरची के अचार की तरह जीवों को पचाते हैं)।
12. **बालुका** (भड़भूजे की तरह भुनते हैं)।
13. **वैतरणी** (धोबी की तरह वैतरणी नदी में नैरयिक को निचोड़ते, पछाड़ते हैं)।
14. **खरस्वर** (वज्रमय कंटकाकीर्ण सेमल वृक्ष पर बार-बार चढ़ाते-उतारते हैं)।
15. **महाघोष** (जैसे वाघरी बकरियों, भेड़ों को कोठे में भरता है वैसे नैरयिकों को अंधेरे और सँकड़े स्थान में खचाखच भर देते हैं। यहाँ माँसभक्षण करने वाले को उसी का माँस तोड़-तोड़कर खिलाते हैं और कहते हैं कि अरे मूर्ख! तुझे अन्य प्राणियों का माँस प्यारा था तो अब तेरे शरीर का भी माँस खाकर मजा ले। इसी तरह शराब तथा बिना छना जल पीने वाले को लोहा-शीशा आदि गरमागरम उबलता हुआ संडासी से पकड़कर मुँह में डालते हैं और कहते हैं कि तुझे शराब प्यारी थी तो जरा इसको भी तो चख ले। परस्त्री सेवन करने वाले को लोहे की गर्म पुतली से आलिंगन करव कर कहते हैं कि तुझे परस्त्री प्यारी थी तो अब इस सुन्दर लालवर्ण की स्त्री को आलिंगन करके क्यों रोता है?

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमश: श्रमणोपासक

भक्ति रस

मैं सुदामा

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

काश ऐसा हो....
आँखें बंद करूँ और दर्शन हो जाए,
राम दोनों नैनों में बस जाएँ।
मानो या ना मानो संध्या,
बिना चले मंजिल मिल जाए,
मुक्ति के द्वार खुल जाएँ....।।

जैसे बहुत दिनों का भूखा व्यक्ति,
भोजन कर तृप्ति को पाता है,
जैसे रेगिस्तान में भटका व्यक्ति,
पानी देख हर्षाता है।
आत्म तत्त्व के जिज्ञासु को,
जिनवाणी में ही आनंद आता है,
वैसा ही कुछ आनंद आया आज,
जब सुहाने दर्शन हुए गुरुवर के।।

मैं सुदामा! साथ ले गई अपने,
अंजुरी भर श्रद्धा के चावल,
और ले गई घट में अपने,
शुभ भावों का चंदन।
अभिषेक किया चुपचाप,
नयन नीर से बारम्बार,
और पखारे चरण गुरुवर के,
श्रद्धासुमनों से कई-कई बार।।

मैं अकिंचन हूँ गुरुवर,
साथ न ला पाई कुछ ज्यादा,
पर हे दीनदयाल! करुणानिधान,
कृपा करी आपने महान।
भेंट स्वीकार की मेरी और
जीवनभर का भाता बांध दिया मेरे साथ।।

जब संयम के चश्मे से झाँकती,
आँखों ने मुझको देखा,
उस निरामय दृष्टि ने मेरी,
जन्म-जन्म की पीड़ा को मेटा।
जब मांगलिक की हुई बरसात,
श्रद्धा से हृदय तरबतर हुआ,
अंतर वैराग्य नाचने लगा,
रोम-रोम पुलकित हुआ।।

कहा नहीं आपने मुझसे कुछ भी,
पर नैनों ने सब कुछ कह दिया,
उस रत्नत्रय की ऊर्जा ने,
दिव्य प्रकाश मुझमें भर दिया।
विधिवत् वंदन किया चरणों में मैंने,
मूक एक वादा किया,
सद्गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा,
ताबीज कंठ में बांध लिया।।

झूमने लगा हृदय आनंद से,
भक्तों ने यह उद्घोष किया,
जयवंता! जयवंता!
आज हमारो मन जयवंता।
हम भी जयवंता तुम भी जयवंता,
हुक्मशासन है आज जयवंता,
राम गुरु दरबार जयवंता,
उपाध्याय प्रवर का ज्ञान जयवंता।
साधु-साध्वी है आज जयवंता,
सकल संघ भी है जयवंता,
'संध्या' का आनंद जयवंता,
जयवंता! जयवंता!
आज हमारो मन जयवंता।।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

महत्तम चरण

युगपुरुष की स्वर्णिम संयम यात्रा पर आधारित - ओपन बुक परीक्षा

लगभग 500 प्रतिभागियों को

इनाम राशि जीतने का सुनहरा अवसर...

1ST — AIR 01 — ₹ 51000/-

2ND — AIR 02 — ₹ 31000/-

3RD — AIR 03 — ₹ 21000/-

AIR 04 — ₹ 11000/-

AIR 05 — ₹ 5100/-

AIR 06-10 — ₹ 3100/- each

AIR 11-100 — ₹ 1000/- each

AIR 101-500 — ₹ 500/- each

टॉप 5 में एक से अधिक समान अंक पर ड्रॉ द्वारा नाम निकाला जाएगा।

प्रत्येक उत्तीर्ण परीक्षार्थी को E-सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा।

Helpline (+91)7020661020 | mahattammahotsav@gmail.com | Mahattam Mahotsav

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन की झलकियाँ

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र जी गांधी को गुरुत्तर दायित्व प्रदान करते हुए निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतमचंद जी रांका

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की नवमनोनीत पदाधिकारियों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री अ.भा.सा. जैन संघ के नवीन पदाधिकारीगणों द्वारा शपथ ग्रहण

विशिष्ट अतिथि संजय जी देसरड़ा का आत्मीय अभिनंदन

मुख्य अतिथि दिनेश जी जैन को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए संघ प्रमुखगण

विशिष्ट अतिथि पल्लव जी भटनागर का आत्मीय अभिनंदन

आचार्य श्री नानेश पी.जी. हॉस्पिटल, पिपलियाकलां को आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान सुश्रावक किरण कुमार जी हिंगड़, रायपुर (भीलवाड़ा)

संघ महाप्रभावक सदस्य सोहनलाल जी पोखरना का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य रावतमल जी संचेती का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य शांतिलाल जी बच्छावत का सम्मान ग्रहण करते हुए परिजन

संघ महाप्रभावक सदस्य
जयचंदलाल जी मराठी का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य
गौरव जी पगारिया का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य
विनय जी अभाणी का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य
उत्तम जी रांका का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य प्रकाश जी सूर्या
एवं राजीव जी सूर्या का सम्मान ग्रहण
करते हुए उनके परिजन

कर्नाटक-आन्ध्रप्रदेश अंचल
को श्रेष्ठ अंचल सम्मान

श्री साधुमार्गी जैन संघ, नवी मुंबई
का श्रेष्ठ इमर्जिंग संघ सम्मान

समता संस्कार पाठशाला प्रवृत्ति
को श्रेष्ठ प्रवृत्ति का सम्मान

श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला सम्मान
खैरागढ़ पाठशाला को प्रदत्त

अविस्मरणीय क्षण

रियल रामेश रत्न अंडर 8 वर्ष आयु वर्ग में
वृति आस्तवाल, राजनांदगाँव

रियल रामेश रत्न 8 से 13 वर्ष आयु वर्ग में
हार्दिक पुगलिया, गंगाशहर

रियल रामेश रत्न 13 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में
युवराज गुरलिया, बेंगलुरु

संयुक्त संघ अधिवेशन के द्वितीय सत्र की झलकियाँ

मुख्य अतिथि वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर, नीमच का संघ प्रमुखगणों द्वारा आत्मीय अभिनंदन

विशिष्ट अतिथि विनोद जी दुग्गड़ का आत्मीय सम्मान

संघ के गौरवशाली शिखर सदस्य सुरेश जी दक को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए संघ प्रमुखगण

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच को श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान

ष्ठ दानपेटी सहयोग (अंचल) के लिए छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल का सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग में प्रथम श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु का सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग द्वितीय श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत का सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग तृतीय श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान, गंगाशहर-भीनासर का सम्मान

संघ अधिवेशन के गौरवमय क्षणों के साक्षी संघ प्रमुखगण

सुश्राविका इन्द्रा जी नाहर, नीमच को श्रेष्ठ तपस्विनी अलंकरण

स्व. प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार
विदुषी श्राविका कंचनदेवी कांकरिया को समर्पित

श्रेष्ठ शासन प्रभाविका सम्मान
विमलादेवी मालू, नोखा को

श्रेष्ठ महिला रत्न सम्मान
मनीषा जी भण्डारी, शिरूड़ को

श्रेष्ठ शासन सेविका सम्मान
किरण जी नाहर, सूरत को

उत्कृष्ट योगदान हेतु
कविता जी बरड़िया, कोलकाता का सम्मान

उत्कृष्ट योगदान हेतु
आकांक्षा जी कोठारी, कोलकाता का सम्मान

श्रेष्ठ स्वाध्याय सेवा पुरस्कार से
अंकित जी मुणोत का सम्मान

श्रेष्ठ स्वाध्याय सेवा पुरस्कार से
अंशुल जी बाघमार का सम्मान

शासन गौरव सम्मान
राकेश जी बोहरा, अक्कलकुआं को

समता युवा रत्न अलंकरण
डॉ. श्रेणिक जी नाहटा, दुर्ग को

श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्) का सम्मान
समता युवा संघ, चित्तौड़गढ़ को प्रदत्त

श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु) का सम्मान
समता युवा संघ, नगरी को प्रदत्त

श्रेष्ठ संगठन सम्मान
समता युवा संघ, शहादा को प्रदत्त

चातुर्मास पूर्णता की ओर
जन-जन में व्याप्त धर्म की लहर
मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता की बड़ी दीक्षा सोल्लास सम्पन्न
मासखमण एवं षट्रस तप की धूम
साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. के मासखमण पूर्ण
संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का पण्डितमरण

संघ सेवा हमारी साधना का रूप बने
-आचार्य श्री रामेश

गुरुचरणों में 100 दीक्षाएँ होनी चाहिए
-उपाध्याय प्रवर

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)।

कितने ऊँचे भाग्य हमारे, हमने राम गुरु का दर पाया है।
जलती हुई इस दुनिया में, मिलती इनकी शीतल छाया है।।

देश-विदेश से श्रद्धालु धर्मप्रेमी जनता दर्शन, प्रवचन एवं प्रेरणादायी आत्मसंदेशों से तृप्त हो रही है। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से अब तक 84 मासखमण के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। 440 से अधिक भाई-बहिनों ने एक माह तक षट्रस तप करके कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया है। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् एक सप्ताह बाद नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। अब तक 422 लोच सम्पन्न हो चुके हैं। संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का शुभ भावों के साथ महाप्रयाण हुआ।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने गुरुकृपा से अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण तप पूर्ण किया। चतुर्विध संघ धर्म एवं तप आराधना में सराबोर है। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, समता महिला मण्डल, बहू मण्डल, समता युवा संघ, नीमच की धर्मनिष्ठा, सेवाभक्ति सबके लिए प्रेरणादायी परिलक्षित हो रही है।

स्वार्थ त्याग कठिन तपस्या है

16 अक्टूबर 2023। भोर की मंगलमय बेला में प्रभु एवं गुरुभक्ति से परिपूर्ण प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रतिक्रमण व श्रुत आरोहक की कक्षा में मार्गदर्शन प्रदान किया।

राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों का गान करते हुए अपने दिव्यदेशना में फरमाया–

संघ हमारा अविचल मंगल,
नंदनवन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियाँ,
सुन्दरतम निज संघ अहा।।

''शास्त्रों में स्थान-स्थान पर संघ की महिमा गाई गई है। सारी आध्यात्मिक शक्तियाँ संघ में रही हुई हैं। हमारे भीतर वह शक्ति है जो हमारे जीवन को ऊँचाइयों पर ले जाने में समर्थ है, किन्तु हम धन-वैभव के पीछे अपनी सारी शक्तियों को नीरस, सत्वहीन बना रहे हैं। चरैवेति-चरैवेति अर्थात् चलते रहो, बढ़ते रहो, मंजिल जरूर मिलेगी। जो उद्यमी होता है, पुरुषार्थ करने वाला होता है, पराक्रम करने वाला होता है, वह मंजिल को पा लेता है। बिना उद्यम के कार्य सिद्ध नहीं होता। कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना होगा।

आज हम सब प्रण करें कि 31 दिसम्बर 2025 तक गुरुचरणों में 100 दीक्षाएँ हो इसके लिए जी-जान लगा देंगे।

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र जी गांधी ने अभी कहा कि 'हम साधक बनकर संघ सेवा करें। संघ सेवा हमारी साधना का अंग बने। अहंकार, मान-सम्मान हमारी इस सेवा में बाधक नहीं बने।'

हमारा लक्ष्य रहना चाहिए कि मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। मैंने अपना अस्तित्व संघ के साथ जोड़ लिया है। जब मेरे कदम चलेंगे, कदमताल मिलेगी तब मेरा उत्थान सुनिश्चित है। साठ साल पहले कठिन परिस्थितियों में संघ की स्थापना हुई। संघ के पास अपना सिर ढ़कने का स्थान नहीं था। मीटिंग के लिए जगह नहीं थी। एक-एक कर्मचारी को पाँच-पाँच लोग मिलकर वेतन देने की कोशिश करते थे और सोचते थे कि संघ को आगे बढ़ाना है। हमारे भीतर विनम्रता बढ़ती रहनी चाहिए। संघ की सेवा में हमारा सारा टेढ़ापन दूर हो जाए। तीन मनोरथ की भावना को अंतरदिल से भाएँ। साधु बनने का हमारा लक्ष्य हो, नहीं तो हम साधक अवश्य बनें। क्रोध, मान, माया, लोभ को जीतना है, राग-द्वेष को घटाना है, तभी हम आगे बढ़ पाएँगे। मन लगाकर संघ के कार्यों को करना है। तपस्या का क्रम जारी है। स्वार्थ त्याग की तपस्या कठिन है। संघ सेवा में आगे बढ़ेंगे, स्वार्थ को नजदीक नहीं आने देंगे, मान-सम्मान से दूर रहेंगे, संघ सेवा करते हुए अपनी आत्मा को साधने का लक्ष्य बनाएँगे तो सफलता निश्चित ही हमारे कदम चूमेगी और संघ उत्थान में हमारा योगदान सुनिश्चित हो पाएगा।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में फरमाया कि ''गुरु की भक्ति में सभी लगे हुए हैं। गुरु का आशीर्वाद निरंतर बरस रहा है। महत्तम महोत्सव ने भी अच्छा परिणाम दिया है। आज हम सब प्रण करें कि 31 दिसम्बर 2025 तक गुरुचरणों में 100 दीक्षाएँ हो इसके लिए जी-जान लगा देंगे। असंभव कुछ भी नहीं है। कृष्ण वासुदेव ने द्वारिका नगरी में ऐलान किया था कि जो भी दीक्षा लेना चाहे नि:संकोच लें, चिन्तामुक्त होकर लें। उनके परिवार की सार-सम्हाल मैं करूँगा। हम सारे श्रावक-श्राविकाएँ प्रतिज्ञा करें कि अपनी संतानों को आचार्य भगवन् के चरणों में अर्पित करेंगे। सभी दानों में श्रेष्ठ है अभयदान।''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अपनी आत्मा को जानने वाला सफल व्यक्ति है। आज श्रद्धा डांवाडोल हो रही है। इधर-उधर भटक रहे हैं। आज संघहित से लगाव नहीं है। संघ में बिना नाम के काम करें। जीवन में निष्काम सेवा का लक्ष्य रखें।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'मेरे गुरु के बराबर कोई नहीं''** भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने **'मेरे प्राणों के आधार वंदन है बारंबार'** भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज संकल्प दिवस के रूप में संघ समर्पणा महोत्सव को सफल बनाना है। कोई भी साधुमार्गी परिवार यदि उत्क्रांति, परिवारांजलि, महत्तम महोत्सव से नहीं जुड़ा है तो आज ही जुड़कर सच्ची समर्पणा का परिचय दें। परिवार का प्रत्येक सदस्य सभी आयामों से जुड़ें।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने **'गुरु राम के चरणों में झुकता चला जा'** गीत प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमने भगवान महावीर, गौतम स्वामी को नहीं देखा, लेकिन आज साक्षात् आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के रूप में भगवान महावीर एवं गौतम स्वामी की जोड़ी के दर्शन हो रहे हैं। यहाँ सारी जिज्ञासाओं का समाधान मिलता है। महत्तम महोत्सव के माध्यम से हम ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग अर्पण कर ज्ञानवान, क्रियावान बनें। मुझे सेवा का जो अवसर मिला उसके लिए मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगा।

राष्ट्रीय महामंत्री जी ने संकल्प सूत्र का सामूहिक रूप से वाचन करवाया। स्थानीय संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने सभी से संघ सेवा में जुटने की अपील की।

किरण कुमार जी हिंगड़, रायपुर (भीलवाड़ा) ने 112 उपवास के दिन 127 उपवास का प्रत्याख्यान लिया। देश-विदेश से श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति एवं श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के वार्षिक अधिवेशन पर आगत राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। सभी ने एक स्वर में संघ सेवा का संकल्प लेकर संघनिष्ठा के भाव प्रदर्शित किए।

वंदना आत्महित के लिए हो

17 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन मंगल बेला में **'सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो'** की मधुर स्वर लहरियों में प्रार्थना की गई। तत्त्वज्ञान की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जो भी आध्यात्मिक क्रियाएँ करें, वे सारी आत्महित के लिए होनी चाहिए, धन-सम्पत्ति के लिए नहीं। भौतिक सम्पदा के लिए वंदना नहीं करनी चाहिए। हमारा लक्ष्य आत्मशांति एवं समाधि का होना चाहिए। किसान को फसल के साथ-साथ अन्य चीजों की भी प्राप्ति होती है। वैसे ही धर्म क्रिया करते हुए भौतिक लाभ की प्राप्ति हो जाए तो बात अलग है। जब मन शांति की अनुभूति करता है तो वह वैभव है। सम्पत्ति होना अलग बात है, पर उससे लगाव नहीं होना चाहिए। मन की तृष्णा कभी शांति नहीं होती। जैसे लाभ बढ़ता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है और लोभ से अहंकार बढ़ता है। श्रावक का जीवन शांत एवं गंभीर होना चाहिए। उपासकदशांग सूत्र में आदर्श श्रावकों का वर्णन है। श्रावक को दिखावा, प्रदर्शन एवं आडम्बर से दूर रहना चाहिए।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक को यतना-विवेक का ध्यान रखना चाहिए। पापकर्म से बचने का निरंतर प्रयास होना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा. ने गीतिका

'राम गुरु पधारे हैं, तपस्या का ठाठ लगाए हैं' एवं 'रेल चली भाई रेल चली, दो पहियों की रेल चली' के माध्यम से जीवन के विभिन्न पड़ावों का दृश्य उपस्थित किया। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री चितरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा. आदि साध्वीरत्नाओं ने 'युग-युग जीओ गुरुवर' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र जी गांधी, राष्ट्रीय महामंत्री सुरेश जी बच्छावत, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष राजेश जी बच्छावत, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पा जी मेहता, राष्ट्रीय महामंत्री स्नेहलता जी कोठारी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा चन्दा जी खुरदिया, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमित जी बम्ब, राष्ट्रीय महामंत्री संदीप जी पारख एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनिल जी पोरवाड़ ने गुरुदर्शन कर आशीर्वाद सहित मार्गदर्शन प्राप्त किया। इन्द्रा जी नाहर के 117 उपवास के उपलक्ष्य में वक्ताओं ने अनुमोदना के भाव प्रस्तुत किए।

मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता का भव्य वरघोड़ा एवं अभिनन्दन

दीक्षाओं की झड़ी लगी, छाई संयम की बहार।
चारों दिशा में गूँज रही, राम गुरु की जय-जयकार।।

दीक्षा आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है। इसी राजमार्ग पर चलने हेतु जन-जन के भगवान युग निर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने जा रहे 23 वर्षीय वीर मुमुक्षु नमन जी मेहता सुपुत्र विजय जी-सुनीता जी मेहता, सुपौत्र सुजानमल जी-कंचनबाई मेहता, रतलाम का श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवा संघ, नीमच एवं संघ की तीनों इकाइयों, आरुग्गबोहिलाभं तथा अन्य अनेकानेक संस्थाओं व संघों द्वारा शानदार आत्मीय अभिनंदन किया गया। सभी ने समवेत स्वरों में आपके आदर्श त्याग को नमन करते हुए हर्ष भाव व्यक्त किए।

भव्य वरघोड़ा भाग्येश्वर मंदिर भोजनशाला से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए जैन कॉलोनी, राठौर परिसर पहुँचा। एक आकर्षक रथ पर शोभायमान दीक्षार्थी भाई एवं परिजनों ने मार्ग में अनेक स्थानों पर भावाभिनंदन किया गया। वरघोड़े में शामिल श्रावक-श्राविकाएँ व युवा वर्ग राम गुरु की जय-जयकार एवं दीक्षार्थी भाई के त्याग के गगनभेदी जयकारे गूँजा रहे थे। मुमुक्षु नमन जी मेहता द्वारा युवावस्था में संसार त्याग की अनुमोदन हर कोई अचंभित होकर कर रहा था।

प्रारंभ में समता महिला मण्डल, बहू मण्डल ने मंगलाचरण व स्वागत एवं दीक्षा गीत प्रस्तुत किया। नीमच संघ अध्यक्ष जी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की कृपा से दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है।

संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि महापुरुषों की कृपा से मुमुक्षु भाई नमन सांसारिक सुविधाओं व भोग-विलास को ठोकर मार कर स्व-पर कल्याण की साधना में आगे बढ़ने जा रहे हैं। हम भी जिनशासन व संघ सेवा में आगे आएं।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि विरले माता-पिता होते हैं जो अपनी संतानों को वीतराग पथ पर आगे बढ़ाते हैं। धन्य है मुमुक्षु भाई, परिजनों व नीमच संघ। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अद्भुत अतिशय से मुमुक्षु आत्माएँ निरंतर संयम पथ पर अग्रसर हो रही हैं।

मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता ने अपने उद्गार में कहा कि "उभय गुरु-भगवंतों एवं परिजनों की कृपा से मेरी संयम पथ पर आगे बढ़ने की तमन्ना पूरी हो रही है। इस उपकार के लिए मैं सदैव इनका ऋणी रहूँगा। संयम में जो आनंद है वह संसार में नहीं। यह स्वागत, अभिनंदन मेरा नहीं

अपितु त्याग, वैराग्य, संयम, भगवान महावीर, आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय भगवन् का है। मैं अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकूँ, ऐसा आशीर्वाद सभी से चाहता हूँ।''

अभिनंदन-पत्र का वाचन स्थानीय संघ मंत्री ने किया। दीक्षार्थी परिजनों ने संयम जीवन पर सुन्दर अभिव्यक्ति देते हुए मुमुक्षु भाई के उज्ज्वल संयम जीवन की मंगलकामना की। महेश नाहटा ने मुमुक्षु परिचय प्रस्तुत किया। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवा संघ, नीमच तथा केन्द्रीय संघ ने पधारे हुए अतिथियों एवं मुमुक्षु नमन जी मेहता व परिजनों का तिलक, शॉल व माला से स्वागत कर अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया। नीमच सहित देशभर से पधारे धर्मप्रेमी भाई-बहिनों से कार्यक्रम शोभायमान हो रहा था।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु नमन जी मेहता की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

नवीन नामकरण हुआ नमन मुनि जी म.सा.

ममुक्षु अंकिता जी बाफना की दीक्षा 22 जनवरी एवं मुमुक्षु नेहा जी शाखेचा की दीक्षा 17 फरवरी के लिए घोषित

दीक्षा का है मौका,
संयम भावना भाएँगे।
सौ दीक्षाओं का आह्वान,
जरूर सफल बनाएँगे।।

18 अक्टूबर 2023।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता, रतलाम की जैन भागवती दीक्षा हजारों जनमेदिनी की साक्षी में उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**साधुता सिद्धता का द्वार है। जो साधु बनेगा वो निश्चित रूप से सिद्धता को प्राप्त करेगा। दीक्षार्थी नमन आज उसी सिद्धता के द्वार को खोलने का प्रयत्न कर रहा है। संयम एक खेल है, जो खेले वह शूरवीर है। पूरी दुनिया के सभी प्राणी मोह के प्रवाह में नरक निगोद में भिन्न-भिन्न योनियों में प्रवाहित हो रहे हैं। महान् पुण्यवानी का जब योग होता है तब किसी विरल आत्मा के मन में मोह की विपरीत दिशा में गमन करने का भाव बनता है कि अब मुझे भी मेरी आत्मा को ऊँचाइयों तक पहुँचाना है ताकि वहाँ से वो सिद्ध बनने में समर्थ बन जाए। साधुता, सिद्धि का द्वार है। एक बार संयम के द्वार में जो प्रवेश कर लिया तो सिद्ध जरूर बनेंगे। साधु जीवन राजा जीवन है। सुख-शांति, समाधि का जीवन है। साधुता का अर्थ है श्रेष्ठता। श्रेष्ठ जीवन की ओर गमन करना हर किसी का लक्ष्य होना चाहिए।**''

आचार्य भगवन् ने लगभग 11 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए मुमुक्षु भाई नमन जी मेहता से दीक्षा की तैयारी के लिए पूछा तो मुमुक्षु भाई ने शीघ्र ही दीक्षा प्रदान कर उद्धार करने के भाव श्रीचरणों में रखे। उपस्थित जनों से दीक्षा की अनुमति के लिए जब गुरुदेव ने पूछा तो सभी ने अपने दोनों हाथ खड़े कर दीक्षा की अनुमति रूप

साधुता सिद्धता का द्वार है-आचार्यश्री रामेश

(विनोद जैन)

नीमच, 18 अक्टूबर (नप्र)। साधुता सिद्धता का द्वार है। जो साधु बनेगा वो निश्चित रूप से सिद्ध बनेगा। एक बार जिसने संयम के द्वार में प्रवेश कर लिया, निश्चित रूप से वह सिद्धता को प्राप्त करेगा। दीक्षार्थी नमन आज उसी साधुता के द्वार को खोलने का प्रयत्न कर रहा है। बुधवार प्रातः दीक्षार्थी नमन मेहता की दीक्षा के साक्षी बनने आए श्रावक- श्राविकाओं से भरे विशाल साधना महोत्सव पाण्डाल में संयम जीवन विषय पर उक्त मार्मिक विचार प्रशांतमना, संयम साधना के शिखर आचार्यश्री रामेश ने अमृत देशना में व्यक्त किए।

आचार्यदेव ने कहा कि संयम एक खेल है। एक क्रीड़ा है। जो खेले वो शूरवीर है। पूरा विश्व, पूरी सृष्टि, पूरा प्राणी वर्ग मोह के प्रवाह में नरक निगोद की भिन्न-भिन्न योनियों में प्रवाहित हो रहा है। महापुण्य का योग होता है। महापुनवानी का योग बनता है, तब किसी विरली आत्मा के मन में मोह की विपरीत दिशा में गमन करने का भाव या विचार बनता है। अब मुझे मेरी भावना को उंचाइयों पर नियोजित करना है, जहां से वो सिद्ध बनने में समर्थ बन जावे। गुरुदेव ने कहा कि साधु जीवन राजा जीवन है। उंचा जीवन है। सुख शांति समाधि का जीवन है। साधुता का अर्थ है, श्रेष्ठता। श्रेष्ठ जीवन हासिल कर लेना हर किसी के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। नमन की माता ने पाण्डाल में गीत गाया, मैंने बेटा खोया नहीं गुरुराम को दिया। इस पर गुरुदेव ने पूछा- नमनजी तैयार हो। सोच समझ लेना इस कठिन मार्ग को। हमारी दृढ़ता नमन की माताजी जैसी होना चाहिए। यदि हमारी संतान मोह से हटना चाहती है, तो हमे उसे पूरा अवसर देना चाहिए नमन अभी तक साधुता के द्वार के बाहर खड़े थे। दरवाजा खटखटाया। आज खुल गया। और वो उसमें प्रवेश कर गए। जिस भावना श्रद्धा से संयम जीवन स्वीकार किया, उसे मंजिल प्राप्ति तक उसी भावना से निभाना चाहिए।

लगभग 11 बजे दीक्षा विधि शुरू करते हुए गुरुदेव ने साधु के परिवेश में उपस्थित दीक्षार्थी नमन को दीक्षा जीवन की प्रतिज्ञा व संयम की सामायिक के प्रत्याख्यान ग्रहण करवाए। जय-जय हर्ष-हर्ष से पाण्डाल गूंज उठा। गुरुदेव ने कहा कि नमन ने नए जीवन में प्रवेश कर लिया। अब इनकी नए रूप में पहचान होना चाहिए। गुरुदेव ने नया नाम दिया-नमन मुनि आज से नमन मुनि के रूप में पहचाने जाएंगे। इसके बाद जब नमनमुनि ने आचार्यश्री रामेश के चरणों में शीश झुकाया, तब गुरुदेव व उपाध्याय प्रवर ने नमनमुनि के सिर से कुछ केश लोच किये। उपाध्याय प्रवर राजेशमुनिजी ने कहा कि गुरु संयम प्रदान करते हैं। संयम दुनिया सर्वोत्तम जीवन है। यह संयम सदा जयवंत है। निर्वाणमुनिजी ने कहा कि ये मन और पांच इंद्रियां हमारी बहुत बड़ी दुश्मन हैं। गगनमुनिजी ने कहा कि इच्छा और अच्छा। जिसके भीतर इच्छा हैं, वो कभी अच्छा नहीं हो सकता है। जो व्यक्ति अच्छा है, उसके भीतर में किसी प्रकार की इच्छा नहीं होती है। महासती ज्योतिप्रभाजी व चेतनश्रीजी ने भी विचार प्रस्तुत किए। संचालन सुश्रावक महेश नाहटा ने किया।

नमन को मिल गया नया नाम नमनमुनि

राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है।

दीक्षार्थी नमन मेहता की दीक्षा को लेकर बुधवार को राठौर परिसर व भागेश्वर मंदिर क्षेत्र में सुबह से भारी चहल पहल बनी हुई थी। साधना महोत्सव का विशाल पाण्डाल शुरुआत में ही भर गया। हजारों लोग दीक्षा के क्षणों के साक्षी बनना चाहते थे। प्रवचन चल रहे थे। सभी जन बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे। 10 बजे महाभिनिष्क्रमण यात्रा पूर्ण कर मुनि वेश में सजा सँवरा दीक्षार्थी नमन ने परिजनों सहित गूंजते जय जयकार के नारों के बीच पाण्डाल में प्रवेश किया। आगे-आगे नमन की माताजी सिर पर एक टोपला उठाये चल रही थी, जिसमें दीक्षार्थी नमन के साधु उपकरण व पात्र रखे हुए थे। परिजनों ने भाव गीत प्रस्तुत किये। जब मां सुनीताजी ने गीत प्रस्तुत किया। पूरा पाण्डाल भावुक हो गया। पलक झपकते ही नमन संसार के सारे मोह-प्रपंचों से मुक्ति पाकर मुनि बन गया। अपलक निहारती हजारों आंखों के सामने वैरागी से मुनि बन जाने का रोमांचक नजारा था। पाण्डाल में बेशुमार मुस्कराहटें थी, खुशियां ही थी, लेकिन आंखों की किनारियां फिर भी नमन के लिए नम थी, अश्रु से भीगी हुई थी। पाण्डाल दूसरी बार भावुक हुआ, जब शिरपुर महाराष्ट्र की दीक्षार्थिनी अंकिता बाफना के पिता ने उसको दीक्षा देने का आज्ञा पत्र का वाचन रोते-सिसकते हुए किया। शिरपुर निवासी एक और दीक्षार्थिनी नेहा पिता नवनीत राखेचा की दीक्षा भी घोषित हुई है। इस तरह नमन को मिल गया नया परिधान, नया नाम और नया धाम। अब नमनमुनि नाम से पहचाने जाएंगे।

अनुमोदना की। 11:05 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य योगों, पापकारी क्रियाओं का त्याग कराकर नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। दीक्षा की विधि सम्पन्न होते ही सम्पूर्ण पांडाल **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है'** से गूँज उठा।

नवीन नामकरण के रूप में नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. के नाम की घोषणा से सभी जन भावविभोर हो गए। सभी ने नवदीक्षित संत के त्याग को अद्भुत बताया। केशलुंचन का कार्य आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने सम्पन्न किया।

परम पूज्य आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''दीक्षा लेना एक बात है, पर उसकी सम्यक् आराधना अलग बात है। सिंह की तरह दीक्षा लेना और उसका सिंह की तरह पालन करना वीर आत्माओं का काम है।''** आचार्य भगवन् के आह्वान पर दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प हजारों भाई-बहिनों ने ग्रहण किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु संयम प्रदान करते हैं। संयम जीवन सर्वोत्तम जीवन है। यह संयम सदा जयवंत है। अब तक हमारे श्रावक-श्राविकाएँ उत्तम कार्य के अवसर पर केसरिया धुन से माहौल गूँजाते थे, लेकिन अब से उत्तम कार्यों के अवसर पर जयवंता की ध्वनि गूँजाएँगे। लाखों युद्धों को जीतने की अपेक्षा अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त करनी है। वह जयवंत है। संयम जयवंत बने। संयम में रमकर अपने आपको जयवंत बनाएँ।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज के प्रसंग से हमें प्रेरणा लेनी है कि हम भी मुक्ति की राह पर चलें, भोग से योग की ओर कदम बढ़ाएँ। यह मन और पाँच इन्द्रियाँ हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। हमें भी पाँच इन्द्रियों और मन को जीतने का लक्ष्य रखना है।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने **'निर्मल जल सा मन है जिनका, सागर सम गंभीरा है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मानव जीवन का सार संयम है। जिसके भीतर इच्छा है, वो कभी अच्छा नहीं हो सकता। जो व्यक्ति अच्छा है, उसके भीतर किसी प्रकार की इच्छा नहीं होती है।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'बधाई हो बधाई, राम गुरु को बधाई'** गीत प्रस्तुत किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री सुमित मुनि जी म.सा. आदि संतवृंद ने **'जीवन का सार है संयम, मुक्ति का द्वार है संयम'** गीत प्रस्तुत किया। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने **'खुशियाँ हैं छाई, देते हैं बधाई गुरु सा को'** भजन प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री रामेश के शासन में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं।

नीमच जिला मजिस्ट्रेट कुलदीप जी जैन ने कहा कि आचार्य भगवन् का सुदृढ़ साहित्य पढ़कर ऐसा लगा जैसे कि यह साहित्य प्राणीमात्र के कल्याण के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

इसी बीच **मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफना** सुपुत्री अनिल जी-शोभा जी, सुपौत्री छगनलाल जी बाफना, शिरपुर की जैन भागवती दीक्षा हेतु अनुज्ञा पत्र गुरुचरणों में समर्पित हुआ। उपस्थित हजारों की जनता हर्षित और प्रफुल्लित हो गई। प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफना ने कहा कि आज वर्षों की तमन्ना गुरुकृपा एवं परिजनों के सहयोग से पूर्ण होने जा रही है। अनुज्ञा पत्र का पठन वीर पिता अनिल जी बाफना ने किया। विजय जी बाफना ने शिरपुर में दीक्षा आयोजन हेतु विनती प्रस्तुत की। परिवार जनों ने

गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र जैसे ही समर्पित किया सम्पूर्ण स्थल जय-जयकारों से गूँज उठा।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके **मुमुक्षु अंकिता जी बाफना की दीक्षा 22 जनवरी 2024 एवं मुमुक्षु नेहा जी नवनीत जी राखेचा, शिरपुर की जैन भागवती दीक्षा हेतु 17 फरवरी 2024** के लिए आगारों सहित जैसे ही घोषणा की, सम्पूर्ण पाण्डाल '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है**' जैसे नारों से भक्तिमय बन गया। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने आज के पावन प्रसंग को अलौकिक, अविस्मरणीय बताया।

बेगूँ सकल जैन समाज व श्री साधुमार्गी जैन संघ ने 22 जनवरी की दीक्षा बेगूँ में सम्पन्न हो इस हेतु पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। शालीमार बाग, दिल्ली ने भी श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की। वीर माता सुनीतादेवी विजय जी मेहता, रतलाम ने अपने भावोद्गार में कहा कि मैंने बेटा खोया नहीं अपितु गुरु राम के चरणों में अर्पित किया है। पीयूष जी मेहता ने गुरु-भगवंतों के प्रति अहोभाव प्रकट किए।

समभाव की आराधना से मोक्ष निश्चित

19 अक्टूबर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में अध्यापन कराया। शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म की आराधना बहुत कठिन है। इसमें हमारा मन, हमारा अहंकार और गर्व बीच में बाधक बन जाता है। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रखी जा सकती। वैसे ही धर्म के साथ कषायों (पाप) का संबंध नहीं रह सकता। सम्यक्त्व का पहला लक्षण समभाव होना, उत्तम भाव होना है। न क्रोध की उपस्थिति होती है, न मान परेशान करता है और न लोभ व माया आते हैं। ये सारे धर्म से दबे हुए रहने चाहिए। धर्माराधना से हमारी आत्मा हलकी हो जाती है। आत्मा में कषायों से जीतने का युद्ध चलता रहता है। कषायों को जिसने जीत लिया, वो निर्विष हो जाएगा। कषाय जहर हैं, जो हर समय आत्मा को परेशान करते रहेंगे। कषाय हमारे भीतर बने रहेंगे तो हमें संसार में भ्रमण करना पड़ेगा। जो वीतरागी हो जाता है उस पर कषाय हावी नहीं होते हैं। यदि हम मन से धर्माराधना करें तो कषाय हमें परेशान नहीं कर सकते, क्योंकि मनोबल मजबूत बन जाता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना कषायों के उपशमन से होती है। समभाव सबसे बड़ी तपस्या है। जिसने तपस्या की, लेकिन समभाव की आराधना नहीं की, वह आराधक नहीं बन सकता। जिसने समभाव से अपनी आत्मा को भावित कर लिया, वो मोक्ष को प्राप्त कर लेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है।''** आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र की सुंदर व्याख्या फरमाई।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें हमारे भीतर के गुणों का अहसास नहीं है। अन्दर के गुण गुरु बताते हैं। हमें सभी के साथ सुंदर व्यवहार रखना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु हमें सच्ची राह दिखाते हैं। उस राह पर चलने से ही हमारा उद्धार होगा। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर के अद्भुत अतिशय के फलस्वरूप धर्म तप का अनुपम ठाठ नीमच में लग रहा है।

साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'तप अनुमोदना करते हैं, तपस्या से तन तपाया, तपस्या से कर्म खपाया'** तपस्या गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा. के मासखमण पर **'धन्य तपस्वी, धन्य तपस्या'** तप गीत से सभा गूँज उठी। वीर पिता मांगीलाल जी ढेलड़िया, बालोद ने तप अनुमोदना के सुंदर भाव व्यक्त किए। **'जयवंता, जयवंता, आज हमारो मन जयवंता'** का सामूहिक संगान किया गया।

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने तपस्या बधाई गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से 82

मासखमण के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। कई भाई-बहिनों ने तपस्याओं की अनुमोदना में तेले तप के प्रत्याख्यान लिए। दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बहिनों को तत्त्वज्ञान, श्रुत आरोहक एवं धार्मिक ज्ञान की वृहत् जानकारी दी।

धर्म आत्मा को निर्भय बनाता है

20 अक्टूबर 2023। सूर्योदय के साथ ही पावन प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित हुए। प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक, दशवैकालिक सूत्र एवं साधुमार्गी धारणाओं के विषय में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुंदर समझाइश दी।

राठौर परिसर में आयोजित प्रवचन सभा में गुरुभक्तों का हुजूम उमड़ रहा है। यहाँ उपस्थित जनमानस को अमृतवाणी का रसपान कराते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियों के उच्चारण के साथ अपनी सिंह गर्जना में फरमाया-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख प्राण।।

''सच्चाई धर्म के साथ जुड़ी हुई है। सत्य धर्म के साथ जुड़ा हुआ है। सत्य जहाँ जुड़ जाता है वहाँ निर्भयता आ जाती है। एक निर्भयता आ जाए तो सारे भय निर्लिप्त हो जाते हैं। धर्म हमारी आत्मा को निर्भय बनाता है। निर्भयता आ जाएगी तो कोई शंका नहीं, कोई आकांक्षा नहीं, कोई आकर्षण नहीं, किसी भी पदार्थ की तृष्णा नहीं होगी। यह बहुत बड़ी बात है। जिसके मन में भय होता है, उसका मन शंकित बना रहता है। बाह्य प्रदर्शनों को देखकर मन में आकांक्षा बन जाती है। ऊपर की लुभावनी बातों को देखकर मन आकर्षित होने लगता है। तीर्थंकर देवों ने जो कहा है वो निःशंकित है। वैसी आस्था बन जाती है तो मन में कोई प्रदर्शन देखने की इच्छा नहीं रहती है।'' आपश्री जी के श्रीमुख से सुनंदा चारित्र का सारगर्भित वर्णन सुनकर हर कोई आत्मलीन हो गया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु नहीं तो आदर्श श्रावक बनें। 15 कर्मादान से दूर रहें, जिसमें जीवों की बहुत हिंसा होती है। बेईमानी, धोखाधड़ी का व्यापार नहीं करें।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

परमात्मा से प्रीत वैराग्य है

21 अक्टूबर 2023। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में धर्म का बोध कराया। प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को अपनी पतित पावनी वाणी से पावन करते हुए फरमाया कि **''वैराग्य की पहचान हमने किस प्रकार से की है, वो थोड़ी भिन्न है। हमने जान लिया कि जो दीक्षा के लिए तैयार होता है ये परिवर्तन उसका वैराग्य है। भरत चक्रवर्ती घर में रहते हुए वैरागी थे। वैराग्य की पहचान हमें करनी है। मेरे ख्याल से तब आपको लगेगा कि कहीं न कहीं हम भी वैरागी हैं। वैरागी के नाम से घबराना मत। कई लोग घबरा जाते हैं। वैराग्य की प्रीत जगती है तो मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है। प्रीत दो प्रकार की है- दो हृदय के मिलने को प्रीत कहा जाता है, जो दो तरफा होती है। वैराग्य की पहचान एक तरफा प्रीत है। भगवान से प्रीत, परमात्मा से प्रीत ही वैराग्य है। मीरा को भगवान से प्रीत लगी और उसे दुनिया से उदासीनता हो गई। रास-रंग में उसका मन नहीं लगता। हर समय भगवान की प्रीत में लीन हो जाती। उसी का नाम वैराग्य है। वैरागी जब वैराग्य की ऊँचाइयाँ छूने लग जाता है तब उसे संसार से विरक्ति हो जाती है। आप संसार छोड़ नहीं पा रहे हैं, ये अलग बात है किंतु आपका संसार के प्रति अनुराग है या धर्म के प्रति अनुराग है, इसका चिंतन करें। श्रावक बोल गए धर्म के प्रति अनुराग है। हकीकत में वैराग्य बहुतों में होता है और वे संसार से उदासीन भी**

होते हैं। वैराग्य से आत्मबल प्रकट होता है। वैराग्य एक बार आत्मा में आ जाए तो परमात्मा की छवि हमारे दिल में अंकित हो जाती है। फिर इस संसार से पार हो पाना बहुत आसान है। आज नहीं तो कल हमारे मन में भावना रहेगी कि वह धन्य दिन कब आएगा जिस दिन अणगार प्रव्रज्या स्वीकार कर पाऊँगा। पंछी पिंजरे में कभी सुखद अनुभूति नहीं कर सकता। अत: आत्मानुभूति कर इस आत्मा को कषायों से मुक्त करें।''

छोड़ने एवं ग्रहण करने योग्य का हो विवेक

22 अक्टूबर 2023। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त अतिविशिष्ट आयाम रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु प्रात: ही हजारों कदम स्थानक की ओर बढ़ रहे थे। सामूहिक समता आराधना के स्वरों में प्रार्थना से सम्पूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सैद्धांतिक धारणाओं की जानकारी जिज्ञासुओं को दी।

सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य श्री रामेश ने धर्मसभा में अपनी पावन वाणी में उपस्थित जनसमूह को जिनवाणी का मर्म समझाते हुए फरमाया कि **''सच्चा ज्ञान वह है जिसमें हेय, ज्ञेय और उपादेय का बोध होता है। जानने लायक क्या है? छोड़ने योग्य क्या है? ग्रहण करने योग्य क्या है? इसका ज्ञान आवश्यक है। जो मेरा नहीं है, वो मुझे सुख नहीं दे सकता है। इस कारण वो छोड़ने योग्य है। अज्ञानी कहता है- मेरे पास क्या नहीं है? माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पत्नी-पति सब मेरे हैं। ज्ञानी कहते हैं कि यह अज्ञान है। जो अपने नहीं हैं, उन्हें अपना मानना अज्ञान है। अविद्या रहेगी तो सुखी नहीं बन पाओगे। दु:ख रहेंगे। कितना भी दु:खों से मुक्त होना चाहें तो भी दु:खों से पीछा नहीं छूटेगा। दृष्टियाँ दो होती हैं- एक सम्यक् दृष्टि और दूसरी व्यवहार दृष्टि। व्यवहार दृष्टि में हम मानते हैं कि ये मेरा है, परिवार मेरा है, सब मेरे हैं। इनको वहीं तक समझना चाहिए। उसके साथ घनीभूत नहीं बनना चाहिए। जितना उनके साथ संबंध है वो केवल जानकारी के लिए होना चाहिए। ये संबंध केवल जोड़ है। मेरा वह होगा जो सदा मेरे साथ रहने वाला है। माता-पिता मेरे से पहले थे, मैं बाद में आया। पत्नी, पुत्र बाद में आए। ये मेरे होते तो पहले-बाद का संबंध क्यों होता? आगे-पीछे आने का कारण सदा आत्मा में विद्यमान रहता है। ऐसा कोई काल नहीं जिसमें आत्मा को ज्ञान नहीं होता। परिस्थितिवश यह हो जाता है कि उसमें विवेक पैदा नहीं हो पाता कि मेरा क्या है? पराया क्या है? बहुतों की चिंता उसे सताती रहती है। ज्ञान-दर्शन मेरे हैं। इसके अलावा यह शरीर भी मेरा नहीं है। यह भाव आत्मा का गुण है। जीवन चलाने के लिए शरीर की आवश्यकता होती है। किंतु यह शरीर रहने वाला नहीं है। शरीर का कितना भी यत्न किया जाए, सुविधाएँ दी जाएँ, इसके बावजूद हमारा शरीर छूटेगा। मेरे साथ रहने वाला नहीं है। यह ज्ञान होगा तो शरीर छूटते हुए वेदना, दु:ख नहीं होगा।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म कार्य करते हुए भी मन अशांत रहे तो हमारा आशय सही नहीं है। धार्मिक व्यक्ति का चित्त सदैव शांत रहता है। हमें संसार बढ़ाने का नहीं अपितु घटाने का कार्य करना है। उपाध्याय प्रवर के 100 दीक्षा के आह्वान को पूर्ण करना है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''जीवन में उत्साह है तो जवानी है। नहीं तो जीवन बुढ़ापा है। हमारा संसार के कार्यों में उत्साह रहता है, लेकिन धर्म के कार्यों में उत्साह रहना चाहिए। हमें जिनशासन मिला है। सदैव यह चिन्तन रहे कि मैं भी सुखी रहूँगा। आत्मा की प्रगति सच्ची प्रगति है।''**

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। परम गुरुभक्त कन्हैयालाल जी बोथरा, गंगाशहर-

रायपुर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। बच्चों के शिविर में संस्कार निर्माण की जानकारी दी गई।

आचरण के बिना विचारों का महत्त्व नहीं

23 अक्टूबर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना से दिन का शुभारंभ होने के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में बोध दिया। तत्पश्चात् धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **''विचारों में ज्यादा ताकत है या आचरण ज्यादा प्रभावी है? विचारों की पवित्रता से ही आचरण उच्च शिखर तक ले जाने वाला बनेगा। सिर्फ विचारों से ही मंजिल नहीं मिलती। आचरण में शुद्धता आनी जरूरी है। आचरण के बिना विचारों का महत्त्व नहीं है। आचरण से कई बार विचार बदल जाते हैं। आचरण में बहुत ताकत होती है। आचरण में वह ताकत है जो विचारों को गहराई में ले जाता है। जो हिंसा करता है वह अहिंसा के गुणों को नहीं जानता। जो अहिंसा का पालन करता है उसे हिंसा के अवगुण अच्छी तरह पता हैं। हिंसा करने वाले को अहिंसा की शांति का अनुभव नहीं हो सकता है। वीतरागता में जो संयम ग्रहण करता है वह नाथ होता है।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इच्छाओं ने मनुष्य को अधीर बना दिया है। इच्छाएँ अल्प होंगी तो जीवन शांतिपूर्वक चलेगा। आजीविका नीतिपूर्वक चलानी चाहिए। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने **'राम गुरु के चरणों में अर्पित जीवन सारा है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दोपहर में श्रुत आरोहक, तत्त्वज्ञान का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने महिलाओं व बालिकाओं को प्रदान किया।

पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. को आराध्यदेव आचार्य भगवन् की महत्ती कृपा से बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने सायं 5:35 पर चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान कराया। साध्वीवर्या ने अपूर्व आत्मबल एवं सजग अवस्था में संथारे हेतु स्वीकृति प्रदान की।

हिम्मत की कीमत

24 अक्टूबर 2023। मंगलमय प्रार्थना से गुरुभक्तों के मन में धर्मजागृति के पश्चात् प्रतिक्रमण एवं श्रुत आरोहक कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ज्ञानार्जन कराया। प्रवचन सभा में दयानिधि आचार्य भगवन् ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को धर्म का अमृतपान कराते हुए अपनी पियूषवर्षिणी वाणी में फरमाया कि **''जैसे सूर्योदय होने पर दसों दिशाएँ आलोकित हो जाती हैं, वैसे ही हमारे मन में धर्म की तमन्नाएँ जगते ही सम्यक्त्व के सूर्य का उदय होता है। हमारा हृदय विकसित, आलोकित होने लगता है और हिम्मत स्वत: ही आ जाती है। धर्म सत्य से जुड़ा हुआ है। कुछ कारणों से मन कमजोर होता है। जब हमारा मन स्पष्ट नहीं होता है तो मन में अनेक प्रकार के विचार पैदा होते रहते हैं। जब मन एक विषय पर निश्चित हो जाता है तो हिम्मत अपने आप आ जाती है। साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. चातुर्मास के प्रारंभ से ही संथारे के लिए तैयार थे। उन्होंने उपचार लेने से भी मना कर दिया था। उनके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव को देखते हुए 16 अक्टूबर को सागारी संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। उनमें ये हिम्मत कहाँ से आई? जब हमारा मन एक लक्ष्य पर निर्धारित हो जाता है तब हिम्मत अपने आप पैदा हो जाती है। हिम्मत मन की दृढ़ता से होती है। पुण्य का योग होता है तो ही मन में संथारे का विचार आता है। बहुत सारे विचार केवल सोचने के लिए हो सकते हैं, किन्तु हमें चिन्तन करना है कि आत्महित क्या है? जो चुनौतियों से घबराएगा वो कदम आगे नहीं बढ़ा पाएगा। जो सक्षम होता है वो बाजी मार लेता है। जय जयवंता बनना है तो हिम्मत को धारण करना होगा।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो प्राप्त है वो पर्याप्त है। यह बोध हमें प्रतिपल होना चाहिए। मन को सुधारना बड़ा काम होता है। मन के प्रति हमें थोड़ा कड़क होना जरूरी है।

संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का संथारा शुभ भावों के साथ गतिमान रहा। दिनभर धर्म-ध्यान, भजन, गीत, स्तवन श्रवण कराने एवं महामंत्र नवकार का जाप गतिमान रहा। दर्शनार्थियों का क्रम भी जारी था।

नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) सम्पन्न

25 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन दैनिक क्रम अनुसार प्रार्थना श्री गगन मुनि जी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् आयोजित तत्त्वबोध कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रुत आरोहक आदि का महत्त्वपूर्ण अध्यापन करवाया।

आत्मा की आवाज दीक्षा है। इसी मार्ग पर भव्यजनों को आगे बढ़ाने में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का विशेष योगदान है। एक सप्ताह पूर्व दीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) कृपानिधि परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई।

प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया। उपाध्याय प्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षित संत को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि पाँच महाव्रतों में आबद्ध कर तीन करण तीन योग से इन पाँच महाव्रतों के शुद्ध पालन हेतु प्रतिज्ञा करवाई। बड़ी दीक्षा की सम्पूर्ण विधि उपाध्याय प्रवर के श्रीमुख से सम्पन्न हुई।

नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि हे आचार्य भगवन्! आपने मुझे पंच महाव्रत रूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र का अनमोल खजाना प्रदान कर महान उपकार किया है। आपश्री जी की आज्ञा एवं निर्देश का मन, वचन, काया से सदैव पालन करता रहूँगा। शुद्ध संयम की आराधना करते हुए मैं अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करूँ, बस यही मंगलकामना है।

साध्वीवृंद ने **'संयम की महिमा क्या है, जी कर के दिखा देना'** एवं **'हृदय मंदिर ना म्हारा देव, तमे मान्या छे'** भाव गीत प्रस्तुत किए।

'राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाठ है', **'जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'**, **'जयवंता जयवंता, आज हमारो मन जयवंता'** आदि गगनभेदी नारों से सम्पूर्ण वातावरण संयममय बन गया। बड़ी दीक्षा सम्पन्न होने के बाद महापुरुषों के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम में जिज्ञासुओं ने अपने प्रश्नों का सटीक व आगमसम्मत समाधान प्राप्त किए।

बड़ी दीक्षा के अवसर पर नवदीक्षित संत श्री नमन मुनि जी म.सा. के वीर परिवार से विजय जी मेहता सहित सांसारिक परिवारजन एवं देश के अनेक स्थानों से पधारे हुए गुरुभक्तों ने बड़ी दीक्षा की अनुमोदना का लाभ लिया। मंगलपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

गुणानुवाद सभा में संथारा साधिका जी के गुणों का स्मरण

26 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन प्रार्थना एवं धार्मिक कक्षा पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में सरल, सौम्य गुणों की धनी संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के पण्डितमरण पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। प्रशान्तमना, ज्ञान और क्रिया के संगम आचार्य भगवन् ने धीर, गंभीर भावों में फरमाया कि **''संथारा साधिका साध्वी जी सौभाग्यशाली थीं, जिनको तीर्थंकर गुरु-भगवंतों**

की छत्रछाया मिली, जिनशासन मिला, जिनवाणी श्रवण का सौभाग्य मिला, जैन धर्म का ज्ञान मिला और चारित्र पथ मिला। साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. ने तीनों मनोरथ पूर्ण कर अपना जीवन धन्य बना लिया। उन्हें ज्ञान, दर्शन, चारित्र का संयोग मिला। हर व्यक्ति का जन्म-मरण अवश्यंभावी है। कोई भी शक्ति उसे बचा नहीं सकती। शरीर जीर्ण-शीर्ण होगा, क्षय होगा और मृत्यु को वरण करेगा। जब तक शरीर सुदीर्ण है, हमें धर्माराधना कर लेनी चाहिए। साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. कैंसर रोग की वेदना सहन कर रहे थे। उन्होंने इलाज लेने से मना कर दिया। वे एक ही बात कहते रहे कि मुझे संथारा करवा दीजिए। संथारे का लक्ष्य बनाए रखा और संयोग भी बन गया। सहवर्ती महासतीवर्याओं ने सेवा का अनुपम लाभ लिया। 'संयम पथ पर चलते रहें निरन्तर, कभी न फिसले पाँव, पाई है हमने जिनवर की छाँव' ये प्रत्येक का लक्ष्य होना चाहिए कि इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठा लें। अन्तिम समय में हॉस्पिटल की जगह धर्मस्थान ले जाना चाहिए।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि वीतरागी बनने से पहले आराधक बनें। पापों की आलोचना सरलता के साथ गुरु के समक्ष करें। दोषों की आलोचना नहीं करने से विराधक की श्रेणी में आ जाएँगे। सरलता व साधना के प्रतिफल रूप में साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. को उभय गुरु-भगवंतों का सान्निध्य मिला। महासतियों ने उन्हें पाथेय दिया। हमें भी समाधिमरण प्राप्त हो ऐसा लक्ष्य रखें।

साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. ने फरमाया कि उभय गुरु-भगवंतों की शरण में उन्हें समाधिमरण प्राप्त हुआ। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र का संयोग प्राप्त होता है तब जीवन मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ता है। साध्वी जी की ज्ञान के प्रति विशेष रुचि थी। तन में व्याधि व मन में समाधि थी। महासती जी का वात्सल्य भाव हमें मिला।

साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. ने समभावों के साथ वेदना में समाधिस्थ रहकर अपना मनोरथ पूर्ण किया। 'गुरुवर तेरे चरणों की अगर धूल मिल जाए' गीतिका के साथ आपने गुरु समर्पणा के भाव फरमाए।

स्थानीय संघ मंत्री व महेश नाहटा ने संथारा साधिका साध्वी श्री जी का आत्मिक परिचय देते हुए आपके देवलोकगमन को संघ के लिए अपूरणीय क्षति बताया।

धैर्य हर समस्या का समाधान

27 अक्टूबर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में पंच परमेष्ठी को वंदन करने के पश्चात् आयोजित धार्मिक कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र, प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक एवं तत्त्वज्ञान का बोध प्रदान किया।

प्रवचन सभा में भक्तों की उमड़ी भीड़ संघ एवं गुरुनिष्ठा का परिचय दे रही थी। हर कोई गुरुवचनों का श्रवण कर अपने आपको धन्य करने हेतु लालायित नजर आ रहा था। जैन धर्म के सार रूप अमृत का पान कराते हुए जन-जन की आस्था के केन्द्र परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''धर्म मेरा प्राण हो, धर्म के लिए जीना और धर्म के लिए मरना आना चाहिए। कितनी भी कठिनाई आ जाए फिर भी निर्भय बने रहना है। जहाँ धैर्य होगा वहाँ कठिनाइयाँ आ सकती हैं, पर ठहर नहीं सकती। श्रमण की उपासना करने वाला श्रमणोपासक कहलाता है। साधु जीवन के संयम की सुरक्षा की जिम्मेदारी श्रमणोपासक की होती है। साधु जीवन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र निर्मल व पवित्र बना रहे ऐसा लक्ष्य श्रमणोपासक का होना चाहिए। साधु के लिए आहार जल्दी व ज्यादा बनाना नहीं चाहिए। अनीति का पैसा कभी टिकने वाला नहीं है। वायदा बाजार से कई लोग कंगाल**

हो गए हैं।'' कई भाइयों ने तुरंत ही वायदा बाजार से दूर रहने का संकल्प लिया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें धन नहीं, धर्म के पीछे दौड़ना है। धैर्य, संतोष हमारे जीवन की पूँजी बने। जितना भी ज्ञान सीखा है उसे नित्य 10 मिनट चिन्तन व अनुप्रेक्षा करना चाहिए ताकि सत्य मजबूत हो। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

संयम हमारे मन को साधता है

28 अक्टूबर 2023। सामूहिक प्रार्थना सभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने उपस्थित गुरुभक्तों को सामूहिक प्रार्थना करवाई तत्पश्चात् धार्मिक कक्षा का आयोजन हुआ। धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति समवसरण का दृश्य उपस्थित कर रही थी। प्रवचन के माध्यम से उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म का अनुसरण कराते हुए दयानिधि, कृपानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतवाणी में फरमाया कि ''**संयम की आराधना हमें अमृतत्व प्रदान करने वाली है। संयम हमारे मन को साधता है, तराशता है। संयम से सारी शंकाएँ निर्मूल हो जाती है और मन मोक्षगामी बन जाता है। राग में जीना आसान है, मगर वैराग्य में जीना बहुत ही कठिन है। वैराग्य मोह-माया, राग-द्वेष रूपी पानी को चीरकर आगे बढ़ना है। हमारा प्रवाह संसार सागर में गोता लगाने वाला है। इसे वैराग्य की दिशा में चलने वाला बनाना है। जहाँ ममत्व, मोह शांत हो जाता है वहाँ हमारा जीवन शांत सुधारस बन जाएगा। मोह, आसक्ति, लगाव ने हमको दूषित कर दिया है। दीक्षा लेना आत्मा को स्वतंत्र बनाना है। यदि हमारी दृष्टि बदल गई और संसार से कोई मोह-ममत्व नहीं रहा तो संसार हमें कारागृह लगने लगेगा।**''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो भी हमें प्राप्त है उसे देव, गुरु, धर्म का प्रसाद मानकर चलेंगे तो सब अच्छा ही होगा। सिलचर संघ ने गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत की एवं साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जगदलपुर के पूर्व विधायक संतोष जी बाफना ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर जीवन उत्थानकारी मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आत्मा को नहीं जानना अज्ञान है

29 अक्टूबर 2023। अवकाश का दिन होने से आज उन लोगों की भी उपस्थिति रही, जो कार्यवशात् प्रतिदिन के कार्यक्रमों में शामिल नहीं हो पाते। प्रात:काल धार्मिक कार्यक्रमों का शुभारंभ धर्म के रंग से ओत-प्रोत समता स्वर से हुआ। आज रविवारीय समता शाखा के आयोजन में सभी ने सामूहिक रूप से समता आराधना का लाभ लिया। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम में पावन होकर हर कोई धर्म के मार्ग पर उन्मुख हो रहा था।

धर्मसभा में मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने गुरुभक्तों के सम्मुख अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**मोह दु:ख का हेतु है। व्यक्ति दु:ख नहीं चाहता, पर वह मोह को नहीं छोड़ पाता। बीज नष्ट करेंगे तो फल अपने आप नष्ट हो जाएगा। दु:ख रूपी फल मोह रूपी बीज का प्रतिफल है। धर्म ऐसा तत्त्व है जिसमें मोह पराजित होता है। जैसे प्रकाश प्रकट होने पर अंधेरा छँट जाता है, वैसे ही धर्म श्रद्धा जितनी प्रबल होगी मोह का नाश उतनी ही जल्दी हो पाएगा। अपनी आत्मा को नहीं जानना अज्ञान है। आत्मा का ज्ञान कैसे होगा? अपने भीतर संवेदन से कि मैं हूँ। शरीर में ऐसा कोई तत्त्व है यह बोध हमारे अनुभव में आना चाहिए। अपने होने की हमें अनुभूति होती है। यह अनुभूति ही आत्मा का ज्ञान कराती है। मेरी आत्मा अनन्त शक्तिशाली है। पर क्यों शरीर से बंधी हुई है? कर्म और कषाय मेरी आत्मा को बंधन में जकड़ लेते हैं। बंधन को काटने का उपाय साधु जीवन की पालना है। मोह कर्म हमें चंचल, चपल बनाता है। सुनने के लिए अभिमुखता जरूरी है। हम जहाँ होते हैं वहाँ जीते नहीं और जहाँ जीते हैं वहाँ होते नहीं।**''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जितना हित-अहित का गहरा बोध होगा उतना ही त्याग गहरा होगा। साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'निर्मल जल सा मन है जिनका, सागर सम गंभीरा है'** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् के वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु जलगाँव संघ ने पुरजोर विनती प्रस्तुत की। बांसवाड़ा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती श्रीचरणों में रखी।

मोह का वर्चस्व नहीं बने

30 अक्टूबर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना के स्वरों से सम्पूर्ण माहौल भक्तिमय हो गया। तत्पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व का ज्ञान कराया। धर्मसभा में ज्ञान का प्रसार अनवरत गतिमान है। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के श्रीमुख से धर्म का सार सुनकर आमजन अपने जीवन को तीर्थंकरों के मार्ग पर बढ़ाने हेतु दृढ़ संकल्पित हो रहे हैं। प्रवचन सभा में अपनी सिंह गर्जना के साथ बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**कर्मों का राजा मोह कर्म है। गुरु के उपदेश आत्मप्रदेश समुदाय को सही दिशा में गति देते हैं। आत्मा में आने वाले मोह से बचाने वाले गुरु के वचन ही होते हैं। मोह आत्मा पर हावी होने की पूरी कोशिश करता है, लेकिन पुरुषार्थी उसे वर्चस्व नहीं बनाने देता। आत्मीय पुरुषार्थ से अरुचि होना ही प्रमाद है। प्रमाद पाँच हैं-**

1. **मद्य- नशीले पदार्थों का सेवन,**
2. **पाँच इन्द्रिय विषयों के प्रति गहरी आसक्ति,**
3. **तीव्र कषाय- क्रोध, मान, माया, लोभ,**
4. **समय से ज्यादा आलस्य (निद्रा) सोए रहना,**
5. **सांसारिक पौद्गलिक जड़ पदार्थों के खाने-पीने की चर्चा, सुन्दरता को निहारना (चर्चा करना), अपनी आवश्यकताओं को अधिक बढ़ाना। ऐसा पैसा किस काम का जो संस्कारों को जला दे।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आंतरिक गुणों का विकास सच्चा विकास है। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् के आह्वान पर तीस दिवसीय षट्रस तप में 440 से अधिक भाई-बहिनों ने भाग लेकर कर्मनिर्जरा की।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती शोभा जी बैद, मुम्बई के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश का 24वाँ पुण्य स्मृति दिवस व परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य श्री रामेश का आचार्य पदारोहण दिवस सोल्लास सम्पन्न

दाता के दाता ने, दिया है आचार्य श्री रामेश।
ऐसे युगल विभूति को, हम हैं नमाते शीश।।

31 अक्टूबर 2023। समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. का 24वाँ पुण्यस्मृति दिवस एवं उन्हीं के पट्टधर युग निर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस अत्यन्त ही श्रद्धा-भक्ति के साथ सामायिक, स्वाध्याय आदि धर्माराधना करते हुए आयम्बिल दिवस के रूप में मनाया गया।

शांत-प्रशांत, धीर-वीर-गंभीर मुद्रा में नानेश पट्टधर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में भक्तों को धर्मज्ञान करने हुए गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया-

मन गौरव गाथा गाए जा, जीवन को धन्य बनाए जा।

''गुरुवर नाना समताधारी थे, उनको समता ही प्यारी थी। आपका जन्म दांता गाँव में हुआ। दीक्षा कपासन में हुई। संयम पथ पर अनेक प्रकार के कष्ट, परीषह आते हैं, लेकिन उनमें मन भटकना नहीं चाहिए। कठिनाइयाँ आएँगी किन्तु रास्ता नहीं रोकेंगी। वे तो किनारे से चली जाएँगी। यह साधना का विषय है। पूज्य आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. अन्तिम समय में उदयपुर विराज रहे थे। संघ वालों ने निवेदन किया कि हमारा आधार क्या होगा? उन्होंने पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का नाम लेते हुए कहा कि आप सभी को इन्हीं की नेश्राय में इनके आदेश-निर्देश का पालन करते हुए संघ सेवा करनी है। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने संघ को खूब दीपाया। जिन्होंने उनको जाना है, देखा है, उनको ज्ञात है कि उनकी शरण में आने वाला मोक्ष मार्ग पर बढ़ गया। आचार्य पद काँटों की पगडंडी पर चलने के समान है। बाधाएँ कायरों के लिए बनी रहती हैं। नाना गुरु प्रतिरोध के बजाय अवरोधों को झेलते हुए चले गए और सारी बाधाएँ अपने आप दूर होती चली गईं। समता दर्शन और व्यवहार उनके पहले विचार मंथन पर आधारित है। आचार्य पद पर विराजने के बाद आपने चिंतन के चार आयाम दिए- समता सिद्धान्त दर्शन, समता जीवन दर्शन, समता आत्म दर्शन और समता परमात्म दर्शन। नाना गुरु ने मृत्यु को महोत्सव बना दिया। आज के दिन समता को जीवन में उतारें और सदैव के लिए जीवन का अंग बना लें।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु के अलावा कोई कारण नहीं कि जिससे सुख की प्राप्ति हो। गुरु के द्वारा बताए मार्ग पर चलने वाला ही सुखी होता है। गुरु की स्तुति व गुणगान से हमारा जीवन बेहतर परिणाम देने वाला होगा।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि नाना गुरु को छठे आरे का वर्णन सुनकर वैराग्य हुआ था। हम भी पाप कर्मों से डरें और सरलता, समता के सच्चे पुजारी बनें। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् धर्म के बल पर जन-जन के मन में भावनाएँ जागृत करते हैं और सुप्त शक्ति को जगाते हैं। उनके चरण पड़ने से नीमच शहर का कायाकल्प हो गया। तप-त्याग व नियम में वृद्धि हुई। उपाध्याय प्रवर भी महापुरुषों का अनुसरण कर रहे हैं। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने मासखमण तप कर शासन का गौरव बढ़ाया है।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने भजन **'तन से गए हो गुरुवर, मन से नहीं गए'** प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर करते हुए '**अनन्य दंसी से अनन्य रामी**' आत्मा में रमण करने वाले अनन्य रामी नाना गुरु से एवं वर्तमान आचार्य भगवन् के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि तप करने से आत्मशुद्धि होती है। अपनी मंजिल को पाना है। तप से समाधि मिलती है। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. तप में लीन रहे। आज उनका 20 वर्ष पुराना मासखमण का सपना पूरा हुआ।

साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा. ने **'सागर की गहराई से, पर्वत की ऊँचाई से'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि नाना-राम गुरु करुणा एवं दया के सागर हैं। जन्मों-जन्मों के पुण्य से ऐसे राम गुरु को पाया है। उपाध्याय प्रवर भी हमें पुण्ययोग से मिले हैं।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि जी म.सा., साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. ने **'गुरुवर राम को नाना ने सजाया'** गुरुभक्ति भावों से ओत-प्रोत भजन प्रस्तुत कर सभा को राममय बना दिया। इस अवसर पर नानेश-रामेश प्रश्नमंच का भी आयोजन किया गया।

साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. के मासमखण तप पर बधाई गीत **'गुरु कृपा बरस रही, ओ तपस्वी धन्य है तुम्हें'** प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. पूर्व में 6, 8, 9, 10, 11 एवं छः वर्ष एकान्तर तप, 7-8 बार लगातार 120 एकासन आदि तप कर जीवन को पावन कर चुके हैं।

सुश्राविका चंदूबाई धर्मपत्नी सम्पतराज जी बोहरा-ब्यावर एवं कमलाबाई धर्मपत्नी घीसूलाल जी पगारिया-बड़ीसादड़ी के देहावसान पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व संदेश प्राप्त किया।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा.	मासखमण	साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा.	मासखमण
साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा.	मासखमण	साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.	सिद्धि तप (गतिमान)

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	सिद्धराज जी देवड़ा-रतलाम, किरण जी कोठारी-राजनांदगाँव, कस्तूरचंद जी सांखला-बागबहारा, बसन्तीलाल जी दक-उदयपुर, श्रीमती विजयादेवी गोदावत-छोटीसादड़ी, लालचंद जी जैन-अक्कलकुआं, शांतिलाल जी सुशीलादेवी चतर-रतलाम, रमेश जी मधुबाला जी कटारिया-रतलाम, राजेन्द्र जी जैन-कंजार्ड़ा, किरण जी धारीवाल-गंगाशहर, जालम जी दुग्गड़-नन्दुरबार, सुरेन्द्र जी टाक-कांकरोली, छबील भाई अलका बेन सोमानी-खड़गपुर, सागरमल जी मंजू जी दुग्गड़-अलाय, दिल्ली, वीणा जी बांठिया-हावड़ा, गौतम जी कोठारी-ब्यावर, केशरीचंद जी बोथरा-हावड़ा, इंदरचंद जी बोथरा-हावड़ा, धनपत जी बाफना-भीलवाड़ा, विजय जी शोभा जी चोरड़िया-डोंगरगढ़, राजकरण जी सरोजदेवी संचेती-पूर्णिया, सुभाष जी सेठिया-पूना, रमेश जी सुमित्रादेवी रामपुरिया-बनमनखी, नेमीचंद जी ललिता जी-बेगूँ, समुद्र जी नाहर-बेगूँ, शांताबाई मेहता-बेंगलुरु, रतनलाल जी बोथरा-गंगाशहर, विजय जी मुणत-रतलाम, बसंतीलाल जी राजकुमारी जी मारू-उदयपुर
उपवास	**127 :** किरण कुमार जी हिंगड़-रायपुर, **117 :** इन्द्रा जी नाहर (सम्पन्न)-नीमच, **33 :** प्रेमलता जी जैन, **31 :** श्वेता जी गांग, राखी जी ओसवाल, **30 :** (मासखमण)-ज्योति जी कच्छारा, **9 :** पंकज जी कांठेड़, सुनीता जी कांठेड़, लता जी बोकड़िया, जुबिन जी मुणत, **8 (अठाई) :** सिद्धि जी कांठेड़
गाथा स्वाध्याय	वर्ष में 5 लाख- किरण जी कांठेड़-जावरा वर्ष में 2 लाख- अर्चिता जी खेमलीवाला, मधुर जी नाहटा-हावड़ा
एकासन	लगातार 301- वीर भ्राता रमेश जी बोहरा-अक्कलकुआँ

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का पण्डितमरण

सांसारिक नाम :
श्रीमती राजमती जी लोढ़ा
जन्म वर्ष :
1953
जन्म स्थल :
अंजड़, बड़वानी (म.प्र.)
दीक्षा स्थल :
उदयपुर (राज.)
दीक्षा तिथि :
माघ सुदी 13 संवत् 2060, 04 फरवरी 2004
व्यावहारिक शिक्षा :
कक्षा 6 तक
आध्यात्मिक ज्ञान :
नंदी सूत्र, सुखविपाक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि
परिवार से दीक्षित :
साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय पौत्री)

पिता का नाम :
श्री मिश्रीलाल जी चौपड़ा
माता का नाम :
श्रीमती जतनबाई चौपड़ा
भाई का नाम :
स्व. श्री भंवरलाल जी चौपड़ा,
उत्तमचन्द जी चौपड़ा, हेमचन्द जी चौपड़ा
बहिन का नाम :
श्रीमती पारसबाई, श्रीमती लीलाबाई,
श्रीमती चन्द्रकांताबाई, श्रीमती मधुबाई
पति का नाम :
श्री लक्ष्मीचन्द जी लोढ़ा
सांसारिक पता :
श्री कमलचन्द जी लक्ष्मीचन्द जी लोढ़ा
बस स्टैंड, पो. अंजड़,
जिला- बड़वानी (म.प्र.)

मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है। गुरुवर सामने हो मेरे, और प्राण निकल जाएँ।।

नीमच, 25 अक्टूबर 2023। ऐसा ही पावन संयोग नीमच की पावन धरा पर संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. को मिला। युग निर्माता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. का प्रात: 7:02 बजे समाधि भावों के साथ महाप्रयाण हो गया। साध्वी श्री राजुल श्री जी को प्रबल पुण्योदय से प्रात: 6:50 बजे परमाराध्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शनों व गुरुमुख से मंगलपाठ श्रवण करने का सौभाग्य मिला। किसको पता था कि ये उनके जीवन में गुरुमुख से अंतिम मंगलपाठ श्रवण होगा। मंगलपाठ के श्रवण के कुछ समय पश्चात् ही आपने नश्वर देह का त्याग कर मोक्ष मार्ग की ओर गमन किया। सेवा में उपस्थित महासतीवर्याओं ने **'अरिहंते सरणं पवज्जामि'** का जाप अंतिम क्षणों तक संथारा साधिका जी को श्रवण कराया।

संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. की डोलयात्रा प्रात: 10 बजे राजस्व कॉलोनी से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए मुक्तिधाम पहुँची, जहाँ आपके संसारपक्षीय पुत्र कमल जी, विमल जी, पंकज जी लोढ़ा, पुत्री हीरामणि छाजेड़ एवं स्थानीय संघ प्रमुखों ने मुखाग्नि दी। मार्ग में जैन-जैनेतर जनों ने आपश्री को अंतिम भावांजलि अर्पित की। सम्पूर्ण मार्ग जय-जयकारों से गुँजायमान हो रहा था। मुक्तिधाम में हुई गुणानुवाद सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, उपाध्यक्ष जी, नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष सहित अनेक पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने गुणानुवाद में संथारा साधिका साध्वीवर्या के दिव्य गुणों का स्मरण करते हुए इसे शासन की अपूरणीय क्षति बताया। अंत में सभी ने 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। **-महेश नाहटा**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

61वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

अधिवेशन समाचार

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्‌बोधन

दिनांक : 16 अक्टूबर 2023 **स्थान : नीमच (म.प्र.)** **नरेन्द्र गांधी**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति, समता युवा संघ के पदाधिकारी एवं पूरी टीम, इस गौरवशाली नीमच संघ जिसे 5 माह का चातुर्मास प्राप्त हुआ है, उसके अध्यक्ष शौकिन जी मुणोत, मंत्री अशोक जी मोगरा व महिला मंडल, बहू मंडल, बालिका मंडल व समता युवा संघ के साथियों, साधुमार्गी जैन संघ की शाखाओं में नेतृत्व पद पर कार्यरत सभी पदाधिकारियों तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं विदेश में निवासरत आचार्यश्री के आदेशों-निर्देशों की अनुपालना करने वाले साधुमार्गी श्रावक-श्राविकाओं, इस गौरवशाली संघ के सभी पूर्वाध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्षों एवं शिखर व महाप्रभावक सदस्यों को

सादर जय जिनेन्द्र! जय गुरु राम!

आज आमसभा का यह अनुपम अवसर एक सुयोग व संयोग है कि मैं जिस जिले से हूँ उसी नीमच जिले की पावन माटी पर यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है कि मुझ जैसे छोटे से अकिंचन को इतने विराट साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष पद का गुरुत्तर दायित्व मिला है, जो कि हमारी उच्चतम संस्था नियामक परिषद् द्वारा शपथ दिलाकर तथा बड़े भाई गौतम जी रांका द्वारा बैज प्रदान कर सौंपा गया है। मैं इस अवसर पर सभी को सादर जय जिनेन्द्र और प्रणाम करते हुए आप सभी को इस साधुमार्गी जैन संघ के स्वर्णिम गौरवशाली इतिहास की ओर ले जाना चाहता हूँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम जी रांका ने बताया कि सन् 1962 के स्वर्णिम काल में जब श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना करने का चिन्तन चला तो जैन जगत् ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। ऐसा मैंने भी पढ़ा है। यह छोटा सा साधुमार्गी जैन संघ कैसे अखिल भारतीय बनेगा, तत्कालीन क्या स्थितियाँ थी इसका विश्लेषण भी गौतम जी रांका ने हमारे समक्ष रखा।

संघ के प्रथम अध्यक्ष स्व. श्री छगनलाल जी बैद सहित समस्त पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों द्वारा क्रमशः सौंपा गया प्रभार वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम जी रांका द्वारा मेरे कंधों पर डाला गया है। आप सभी सुज्ञ महानुभाव संघ की स्वर्णिम अध्यक्षीय परंपरा के पथिक रहे हैं। उन सभी पूर्वाध्यक्षों के पुरुषार्थ, आशीर्वाद व अथक परिश्रम को सादर नमन करता हूँ। जिस प्रकार उन्होंने तन-मन-धन से इस संघ का सिंचन किया है, संघ विकास का राजमार्ग प्रशस्त किया है, इस ऋण से कोई उऋण नहीं हो सकता।

परम पूज्य आचार्य भगवन् की असीम अनुकम्पा से इस संघ को नित नई ऊँचाइयाँ मिली हैं। हम सभी सौभाग्यशाली हैं, जो हमें इस संघ का सदस्य बनने का अवसर मिला है। यह मध्यप्रदेश अंचल की पावन धरा, जिससे न जाने कितने ही संघ साधक निकले हैं, जिन्होंने संघ के विकास रथ में अपना सहयोग प्रदान किया है, उस अध्याय से आज मुझे भी जुड़ने का अवसर मिला है। इसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूँ।

आज का यह सुअवसर मुझे दायित्व बोध के

साथ कुछ करने की ओर इंगित कर रहा है। इस संबंध में संघ की दैदीप्यमान ज्योति को अजर-अमर बनाए रखने वाले मेरे सभी पूर्व पदाधिकारियों, सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों, शिखर सदस्यों, महाप्रभावक सदस्यों एवं समस्त साधुमार्गी साथियों से निवेदन और आग्रह है कि इस साधुमार्गी जैन संघ की गौरवशाली परंपरा को बनाए रखने के दौरान मेरा हाथ पकड़ कर आगे ले जाने और अपना वरदहस्त मुझ पर सदैव बनाए रखते हुए अपना सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।

आज हम सभी में से कुछ सदस्य किसी न किसी दायित्व रूपी बोध से जुड़ने जा रहे हैं। उनसे निवेदन और आग्रह है कि जैसा कि आचार्य भगवन् ने आज अपने प्रवचन में फरमाया कि हमें संघ साधक बनकर संघ को आगे बढ़ाना है। इस इंगित इशारे की दिशा में कैसे बढ़ना है, उसे इस प्रकार समझ सकते हैं-

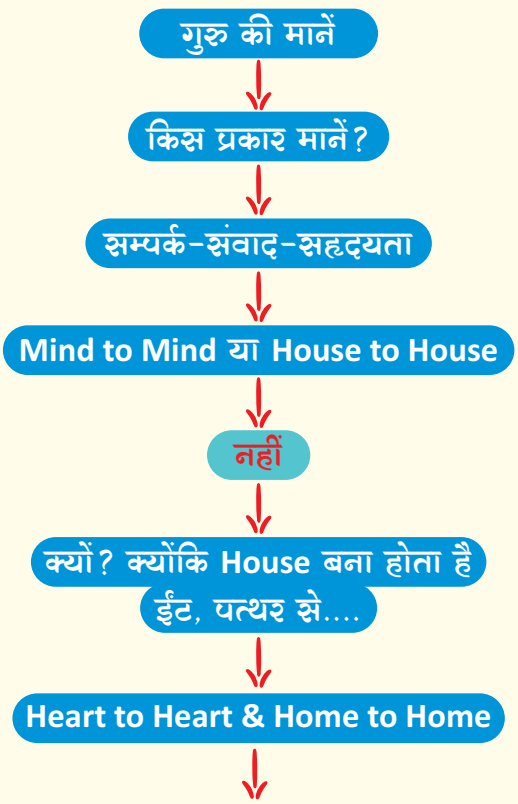

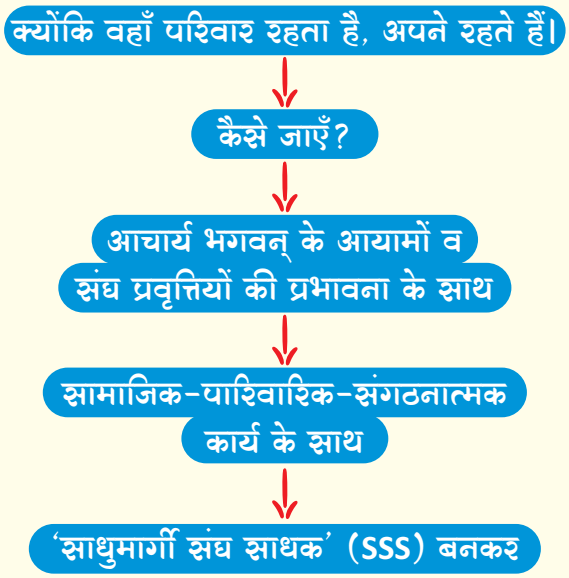

हमारे लक्ष्य :-

- **प्रत्येक परिवार का प्रत्येक सदस्य**
  - समता शाखा में सहभागी बनें।
  - MID-ग्लोबल कार्ड से जुड़ें।
  - महत्तम महोत्सव के किसी न किसी आयाम से जुड़ें।
- **समता शाखा** के साथ मासिक बैठक आयोजन (माह में 1 बार)
- **गुणशील** - प्रतिदिन घर में एक साथ जाप।
- **इदं न मम** - प्रत्येक घर का कमाने वाला व्यक्ति इससे जुड़े।
- 5 वर्ष से 18 वर्ष का प्रत्येक बच्चा **समता संस्कार पाठशाला** से जुड़े।
- प्रत्येक परिवार **उत्क्रांति** परिवार बने।
- **दानपेटी योजना** से प्रत्येक घर की गृहिणी और बच्चे जुड़ें।
- ज्ञानाभिलाषी भाई-बहिन को प्रोत्साहित कर आगे लाना।

जय नानेश। जय रामेश।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

56वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

पुनः मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्षा उद्‌बोधन

दिनांक : 15 अक्टूबर 2023 स्थान : नीमच (म.प्र.) पुष्पा मेहता

संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया।
संघ न होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया।।
शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है।
भवसागर से तारणहारा, हम इसके आभारी हैं।।

शासन प्रणेता श्रमण भगवान महावीर स्वामी को नमन, श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी, युगनिर्माता आचार्य भगवन् को वंदन, श्रुत के ज्ञाता उपाध्याय प्रवर सहित समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में अविराम वंदन।

आदरणीय मुख्य अतिथि, पूर्व अध्यक्षाएँ, राष्ट्रीय प्रवृत्ति संयोजिकाएँ, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के इस 56वें अधिवेशन के अवसर पर नीमच नगरी में पधारे आप सभी का स्वागत व अभिनंदन।

गुरु आशीषों से महिला समिति मात्र द्वि शब्द नहीं है, बल्कि पूर्व अध्यक्षाओं की एक गूँज बन गई है। इस विशाल वृक्ष की प्रत्येक शाखा गुरुवर के इंगित इशारों पर कदम बढ़ाकर संघ व गुरु समर्पणा में नतमस्तक है।

सुनहरे सूर्य का उदय हुआ नया सवेरा,
वंदन कर गुरु आशीष का पहन के सेहरा,
हमें है धर्म प्रिय उस पर है दृढ़ता का पहरा,
केसरिया हो संघ सेवा में हाथ बढ़ाएंगे,
प्रिय धम्मा दृढ़ धम्मा साकार कर दिखाएंगे।

समिति की एक नई पहल... लोगो (Logo) का शुभारंभ... लोगो के रजिस्ट्रेशन का कार्य गतिमान है।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी गणवेश की एकरूपता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए गणवेश का रजिस्ट्रेशन करवा दिया है व स्थानीय स्तर पर किसी भी अन्य वेशभूषा को मान्य नहीं किया गया है।

प्रवृत्तियों में संगठन में किया नव निर्माण,
मंडल लगाने का किया सभी को आह्वान।
नववधुओं के आगमन से महका संघ का संगठन,
आजीवन सदस्य बनाकर बढ़ाया समिति का मान।।

संगठन को मजबूत बनाने के लिए समिति ने साप्ताहिक एवं पाक्षिक मंडल लगाने का आह्वान किया था। प्रत्येक स्थानीय मंडल के माध्यम से नववधुओं का स्वागत कर नई पीढ़ी को संघ से जोड़ने का प्रयास किया गया। 2 वर्ष में कुल 1862 नई सदस्याओं को जोड़ा गया। 57 नए महिला मंडलों का गठन व जहाँ मंडल नहीं बन सकते हैं उन क्षेत्रों के सक्रिय सदस्य के रूप में 104 क्षेत्र जुड़े।

युवती शक्ति ने खोले खुशियों के पिटारे।
Limitless Boundary से बढ़ा रहे अपने दायरे।।

कहते हैं बेटियाँ एक कुल को नहीं दो कुलों को रोशन करती हैं। अत: भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रकल्पों (गठबंधन, Discover Incredible You, कौन बनेगा धर्मवीर, जैन सिद्धांत बत्तीसी, संवर दिवस आदि) के माध्यम से युवती शक्ति को संस्कारित किया जा रहा है। इसी भावी पीढ़ी के माध्यम से नए संस्कारवान कुल व संघ की परिस्थापना के लिए महिला समिति लेकर आई है गोल्डन स्टेप्स, जिसमें आने वाले नए मेहमानों को भी सुसंस्कारित करने के लिए गर्भसंस्कार का कार्यक्रम किया जा रहा है।

वूमन्स मोटिवेशनल फोरम में दान, शील, तप की

भावनाएँ, धर्म से जोड़ बढ़ रही मोक्षमार्ग की संभावनाएँ। पोस्ट ग्रेजुएट एवं प्रोफेशनल श्राविकाओं को उनकी व्यस्ततम जीवनचर्या में धर्म क्रिया से जोड़कर धार्मिकता के माध्यम से संघ से जोड़ने एवं उनके लिए समिति कुछ कर पाए यह अनुपम प्रयास किया जा रहा है।

एक अलौकिक संघ... एक अनोखा गणवेश...
एक अनोखा कार्य... हर क्षेत्र में... हर जगह...

अखिल भारतीय स्तर पर केसरिया कार्यशाला का आयोजन पिछले 4 वर्षों से कार्य की एकरूपता को ध्यान में रखकर आगम ज्ञान के माध्यम से हर महीने मनोरंजक तरीके से किया जा रहा है।

पंचसहस्त्री श्रद्धाभिषिक्त परिवारांजलि ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं द्वारा ग्रहण किए गए परिवारांजलि के नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करवाने एवं नए श्रावक-श्राविकाओं को जोड़ने के लिए घर-घर जाकर स्टीकर लगाने का अतुलनीय कार्य किया जा रहा है।

निरंतर जो बढ़े कदम स्वधर्मी वात्सल्य की ओर।
सुख-शांति की लहरें छा रहीं चहुँओर।।

महिला समिति द्वारा सर्वधर्मी महिलाओं को कंधे से कंधा मिलाकर समाज की मुख्यधारा में शामिल करने एवं समानता के स्तर पर लाकर सुदृढ़ बनाने का अथक प्रयास किया जा रहा है। छात्रवृत्ति के माध्यम से कई छात्र-छात्राओं को शैक्षणिक मंजिल दिलाने के लिए महिला समिति पुरजोर कोशिश कर रही है।

आगे आकर दान दे जिनके होते उच्च भाव।
लगे श्रेष्ठ कुबेर से, निर्मल रखते स्वभाव।।

आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का संयमी जीवन स्वर्णिम इतिहास की रचना करते हुए 50 वर्ष पूरे करने जा रहा है। परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपना पूरा जीवन संयम की उत्कृष्ट पालना करते हुए साधुमार्गी संघ के विकास एवं भव्य जीवों के उत्थान हेतु समर्पित किया है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि परम प्रतापी आचार्य भगवन् का 50वाँ दीक्षा दिवस महत्तम महोत्सव के रूप में मनाने का सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है। प्रत्येक श्रावक-श्राविक एवं बच्चे इससे जुड़ें, सकल समाज को जोड़ें एवं जीवन धन्य बनाएँ।

समय-समय पर केंद्रीय व आंचलिक पदाधिकारियों द्वारा भगवन् के आयामों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास किए जा रहे हैं। आपसी Communication, संगठन की मजबूती, सर्वधर्मी वात्सल्य, केन्द्रीय समिति का स्थानीय मंडल से जुड़ाव विकसित करने के लिए प्रवास सशक्त माध्यम है। इसी निमित्त पिछले 2 वर्षों में सभी अंचलों का प्रवास हुआ।

किसी भी कार्य को संचालित करने में सुदृढ़ टीम की जरूरत होती है। कार्य करने के लिए ऊर्जावान महामंत्री जी, कोषाध्यक्षा जी, राष्ट्रीय प्रवृत्ति संयोजिकाएँ, आंचलिक उपाध्यक्षाएँ-मंत्री, आंचलिक संयोजिकाएँ, स्थानीय अध्यक्ष-मंत्री, स्थानीय संयोजिकाएँ जो सभी कार्यों को लक्ष्य तक पहुँचाने में मील का पत्थर साबित हुए हैं। पूरी टीम ने हर कार्य, हर प्रवृत्ति को पूर्ण करने में जितना स्नेह, प्रेम, संबल दिया है वह अतुलनीय, अविस्मरणीय है। संघ-संगठन की एकता की मजबूत डोर ही टीम वर्क है। अत: वर्ष 2021-23 के कार्यकाल में संपूर्ण टीम का जो सहयोग मिला है, उसके लिए अंतर्मन की असीम गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूँ। कार्य के दौरान मन-वचन-काया से किसी को ठेस पहुँची हो तो आत्मीय भावों से क्षमायाचना करती हूँ।

केंद्रीय कार्यालय रीढ़ की हड्डी की तरह हर कार्य को पूर्णता की ओर ले जाने के लिए मजबूती के साथ तैयार रहता है। हमारी टीम को मजबूती प्रदान करने के लिए कार्यालय का सहयोग हमेशा हमारे साथ रहता है। इसी से हमारी प्रवृत्तियों की प्रगति दिखती है। कार्यालय के सहयोग के बिना हर मंजिल अधूरी है।

अंत में धन्यवाद साधुवाद उस संघ को जिस संघ ने संघ सेवा का स्वर्णिम अवसर प्रदान कर हम सभी को निर्जरा का अवसर प्रदान किया।

अभी रूकना नहीं, अभी थमना नहीं,
अभी तो मंजिल बाकी है।
संघ के रोशन भविष्य में यह हमारी साखी है।।

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

61वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन (संघ समर्पणा महोत्सव) नवीन संकल्पों के साथ सम्पन्न

नीमच। दिनांक 15-16 अक्टूबर 2023, आसोज सुदी दूज को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का संघ समर्पणा दिवस एवं 61वाँ संयुक्त वार्षिक अधिवेशन टाऊन हॉल, नीमच में अनेकानेक नवीन संकल्पों के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, मुख्य अतिथि, नवमनोनीत गौरवशाली वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजक, सह-संयोजक व संयोजक मंडल सदस्य, कार्यसमिति सदस्य, शिखर सदस्य, महाप्रभावक सदस्य, आजीवन एवं साधारण सदस्य एवं श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच के सदस्यों सहित देशभर से पधारे स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्रीगण आदि शोभायमान थे।

:✦: प्रथम दिवस - 15 अक्टूबर :✦:

श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल, नीमच द्वारा सामूहिक मंगलाचरण के साथ दोपहर 12:15 बजे से संघ समर्पणा दिवस एवं 61वें संयुक्त वार्षिक अधिवेशन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा पधारे हुए पदाधिकारियों व मुख्य अतिथि दिनेश जी जैन (आई.ए.एस.), जिला कलेक्टर नीमच, विशिष्ट अतिथि संजय जी देसरड़ा (वैज्ञानिक, इसरो), डॉ. पल्लव जी भटनागर (विभागाध्यक्ष, गीतांजली हॉस्पिटल, उदयपुर) का भावभीना स्वागत किया गया। तदुपरांत बालिका मंडल तथा समता युवा संघ, नीमच के युवा साथियों ने पदाधिकारियों व उपस्थित अतिथियों का तिलक व बैज लगाकर '**अतिथि देवो भव:**' की परिकल्पना को साकार किया। तत्पश्चात् सभी ने संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों '**संघ हमारा अविचल मंगल, नंदनवन सा महक रहा है**' का सामूहिक संगान कर संघनिष्ठा के भाव प्रस्तुत किए।

-: राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा प्रगति प्रतिवेदन व उद्बोधन :-

राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन को उद्बोधित करते हुए पधारे हुए महानुभावों का स्वागत व अभिनंदन कर सत्र 2021-23 के दो वर्षीय कार्यकाल की रिपोर्ट प्रस्तुत की। आपने बताया कि इस दो वर्षीय कार्यकाल में 6 अंचलों में क्षेत्रीय सम्मेलन, 131 संघों में प्रवास, 18 नए संघों का गठन, 19 संघों की संघ आबद्धता, 2 शिखर सदस्य, 37 महाप्रभावक सदस्य, 4 प्रभावक सदस्य, 596 सदस्यों का इदं न मम से जुड़ाव, 40 नवीन साहित्यों का विमोचन, 1100 नए प्रोफेशनल्स का साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम से जुड़ाव, 293 पाठशालाओं में 6176 बच्चों व 576 अध्यापकों का जुड़ाव, 93 शिविरों में 5935 बच्चों की सहभागिता, धार्मिक परीक्षा बोर्ड में 43 श्रेणियों में 10 परीक्षाएँ, 310 परीक्षा केन्द्रों पर 3914 श्रावकों द्वारा जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा में सहभागिता, महत्तम महोत्सव के स्थायी सामाजिक प्रकल्प के अंतर्गत समता समग्र आरोग्यम् व आनंद सागर भीनासर में प्याऊ की स्थापना, ग्लोबल कार्ड उपयोगिता की दिशा में जयपुर के तीन अस्पतालों से **MoU**, श्री आदिनाथ पशुरक्षा संस्थान, कानोड़ को सर्वश्रेष्ठ गौशाला पुरस्कार प्राप्त होना,

आचार विशुद्धि महोत्सव की पूर्णता, साधुमार्गी मोबाइल ऐप लांच, श्रीसंघ के अंतर्गत 34 समता भवनों का निर्माण (पूर्ण, प्रस्तावित व निमार्णाधीन), समता भवन के लिए 2 भूमिप्रदाता से अनुदान तथा 5 समता भवनों का अनुदान स्वरूप प्राप्त होना प्रमुख उपलब्धियाँ रहीं।

-: राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन :-

राष्ट्रीय अध्यक्ष **गौतम जी जैन (रांका)** ने उपस्थित सदन का स्वागत, अभिनंदन करते हुए कहा कि धन्य है ये धरा और धन्य हैं हम सभी, जिन्हें इस पंचम आरे में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का सान्निध्य मिला। **संसार की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी संतों का सान्निध्य है, जो हमें प्राप्त है। साधुमार्गी जैन संघ हमें सरल, अनुशासित, कल्पमर्यादा, साहित्य, प्रभावना, जिनशासन के प्रति चेतना हेतु प्रेरित करता है।** हमें जीना सिखाता है। आज हमारे सामने वटवृक्ष रूपी जो विशाल संघ परिलक्षित हो रहा है वह संघ के संस्थापकों, पूर्वाध्यक्षों, महामंत्रियों, कोषाध्यक्षों सहित हजारों कार्यकर्ताओं के कर्मरूपी सिंचन व वर्तमान आचार्य प्रवर व पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद का प्रतिफल है। आज के इस कार्यक्रम में हमारे बीच मुख्य अतिथि के रूप में दिनेश जी जैन (आई.ए.एस), जिला कलेक्टर नीमच, विशेष अतिथि संजय जी देसरड़ा (वैज्ञानिक, इसरो), सेवाभावी डॉ. पल्लव जी भटनागर (विभागध्यक्ष, गीतांजली हॉस्पिटल, उदयपुर) तथा युवा उद्यमी विनोद जी दुगड़, कोलकाता उपस्थित हैं। आप सभी का आत्मीयतापूर्वक स्वागत व अभिननंदन करते हुए मन गौरवान्वित हो रहा है।

मेरा सभी से अनुरोध है कि संघ सेवा स्वविकास का मार्ग है। इस अनुपम अवसर से अवश्य जुड़ें। संघ ने हमें 4 वर्ष सेवा का जो अवसर प्रदान किया उसमें हम एक सैनिक के रूप में आप सभी के सहयोग व मागदर्शन से आगे बढ़े। विशेष रूप से दोनों सत्रों के महामंत्री जी, कोषाध्यक्ष जी, सहकोषाध्यक्ष जी एवं कार्यकारिणी सदस्यों व महत्तम महोत्सव संयोजक का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। इस दौरान हमसे जो कुछ भी बन सका वो हमने अपनी रुचि, ऊर्जा व क्षमता अनुसार इस संघ रूपी विशाल वटवृक्ष में आहुति के रूप में अर्पण किया है। हम अपने आपको धन्य मानते हैं कि हमें जिनशासन के गौरव को आगे बढ़ाने का स्वर्णिम अवसर मिला। गत 2 वर्ष की संघ संगठन एवं समृद्धि यात्रा को महामंत्री जी ने आपके सामने प्रस्तुत किया। आज संघ की दो भुजाओं के रूप में समता युवा संघ व महिला समिति आचार्य भगवन् के प्रत्येक आयाम और संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति को जन-जन तक पहुँचाने में संघ के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं, हम उन्हें भी साधुवाद ज्ञापित करते हैं। अंतत: श्री अ.भा.सा. जैन संघ की ओर से संघ समर्पणा महोत्सव में पधारे धर्मप्रेमी बंधुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ।

-: मुख्य अतिथि सम्मान एवं उद्बोधन :-

'अतिथि देवो भव:' की परिकल्पना को साकार रूप देते हुए पधारे हुए मुख्य अतिथि दिनेश जी जैन (आई.ए.एस.) जिला कलेक्टर-नीमच का अभिनंदन शॉल, माला व मोमेण्टो प्रदान कर किया गया। दिनेश जी ने संघ के आग्रह को स्वीकार करते हुए संघ समर्पणा भाव से कार्यक्रम में पधारने हेतु त्वरित स्वीकृति प्रदान की। नीमच चातुर्मासिक व्यवस्थाओं में भी आपका विशेष सहयोग रहा है।

अपने उद्बोधन में **दिनेश जी जैन** ने कहा कि मैं नीमच जिला प्रशासन की ओर से इस कार्यक्रम में पधारे हुए सभी गणमान्यजनों का अभिनंदन करता हूँ। हमारा बड़ा सौभाग्य है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा चातुर्मासार्थ नीमच में विराजित हैं। नीमच संघ के पुण्योदय से यह अपूर्व अवसर सौभाग्य रूप प्राप्त हुआ है। इसमें मेरा कोई विशेष योगदान नहीं है, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। यह मेरी पुण्यवानी का उदय है कि मुझे इस महान कार्य में सहयोग देने का सुअवसर मिला। पूरे भारतवर्ष में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा शैक्षणिक, आध्यात्मिक, जनसेवा, साहित्य,

चिकित्सा सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों में जो सेवा कार्य किए जा रहे हैं, वे अभिनंदनीय हैं। मैंने अनुभव किया है कि समाज को हमसे और अधिक अपेक्षाएँ हैं। हम इस गौरवशाली संघ के सदस्य हैं। हम सभी के लिए अच्छा सोचते हैं और अच्छा करने का प्रयास करते हैं। हमारे साधु-संत इतनी कठोर तपस्याएँ करते हैं, जिससे हमें गर्व होता है कि हम साधुमार्ग के अनुयायी हैं। **यदि हम अपने गृहस्थ जीवन के साथ संघ से जुड़कर कुछ सामाजिक सरोकार में हाथ बँटाते हैं तो यह पुण्यार्जन का अवसर है।**

-: विशिष्ट अतिथि सम्मान एवं उद्बोधन :-

विशिष्ट अतिथि वीर भ्राता संजय जी देसरड़ा (वैज्ञानिक, इसरो) पुत्र गुलाबचंद जी देसरड़ा का शॉल, माला व मोमेंटो से अभिनंदन किया गया। आप अगस्त 2003 से सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) में कार्यरत हैं। मिशन चन्द्रयान 3 की टीम में सीनियर सदस्य के रूप में आपने कार्य कर संघ एवं समाज को गौरवान्वित किया है।

अपनी भावाभिव्यक्ति में **संजय जी देसरड़ा** ने कहा कि जब मुझे सम्माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने संघ समर्पणा दिवस के बारे में जानकारी दी तो मन हर्षित हो भावविभोर हो गया। हम सभी जानते हैं कि हमारा संघ सबसे यूनिक संघ है, जो भगवान महावीर की अमृतवाणी एवं तीर्थंकर भगवंतों के संदेशों को सही मायने में आगे बढ़ा रहा है। **आप कहीं भी किसी भी सामाजिक जीवन में रहें, लेकिन जीवन के 80-20 नियम को अपनाते हुए आगे बढ़ें। अर्थात् 80 प्रतिशत समय अपने दैनिक जीवन के आवश्यक कार्यों व व्यवसाय आदि के लिए तथा 20 प्रतिशत समय अध्यात्म और धार्मिकता को अवश्य देवें।** जब हमने विज्ञान की साधना की तब हम चन्द्रमा पर पहुँच पाए। धर्म की साधना जो अभी पुण्यनगरी नीमच में चल रही है; आप सभी इस साधना महोत्सव चातुर्मास का लाभ लेते रहें। आचार्य भगवन् समय-समय पर जो आयाम देते हैं, उनमें से उत्क्रांति एवं आध्यात्मिक आरोग्यम् बहुत विशेष हैं। उत्क्रांति संयमित जीवन सिखाता है तो आध्यात्मिक आरोग्यम् शांतिपूर्ण जीवन जीने का संदेश देता है। पुन: आप द्वारा प्रदत्त स्नेह व सम्मान के लिए आभार, अभिनंदन।

कार्यक्रम के अगले क्रम में समारोह में पधारे अन्य विशिष्ट अतिथि **पल्लव जी भटनागर** (फिजियोथेरेपी विशेषज्ञ) का अभिनदंन भी शॉल, माला व मोमेंटो से किया गया। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुदेव के दर्शन सान्निध्य के बाद मेरा पूरा जीवन बदल गया। मैंने उनसे सीखा है- **Don't be sorry to be born. आपको इस जीवनकाल में जो करने के लिए भेजा है, वह कर लेना चाहिए।** आप सभी का हृदय से आभार, संघ का आभार जो मुझे दिल से अपनाया है। फिजियोथेरेपी के लिए बस इतना कहना चाहता हूँ कि यह समाज के लिए, जीवन जीने के लिए श्रेष्ठ विकल्प है। आज के युग में 90 प्रतिशत से अधिक जटिल समस्याओं को फिजियोथेरेपी के माध्यम से ठीक व नियंत्रित किया जा सकता है। कोविड-19 के बाद तो फिजियोथेरेपी चिकित्सा समाज का एक अटूट हिस्सा बन चुकी है। आज जब पहली बार मुझे आचार्य भगवन् का प्रवचन श्रवण करने का लाभ मिला, तब पता चला कि कैसा माहौल होता है और क्या होता है। जब आचार्यश्री जी ने फरमाया कि 'आप इस मनुष्य योनि में रहकर वह सब कर सकते हैं, जो आप स्वर्ग में रहकर भी नहीं कर सकते हैं' यह मेरे लिए बहुत ही अनमोल और नवीन सीख है। मेरा जीवन महापुरुषों के सान्निध्य से सफल हुआ है।

-: महाप्रभावक सदस्यों का सम्मान :-

संघ सदस्यता के क्रम में महाप्रभावक सदस्यता अपना विशिष्ट व सम्मानपूर्ण स्थान रखती है। महाप्रभावक सदस्यता ग्रहण करना अपने आप में संघ के प्रति असीम निष्ठा एवं समर्पणा का प्रतीक है। इस सदस्यता हेतु स्वेच्छा से स्वीकृति देना दानवीर महानुभावों की उदारता का प्रत्यक्ष परिचय है। इस सदस्यता हेतु 11 लाख रुपये की राशि एक मुश्त अथवा पाँच वर्ष की

अवधि में प्रदान करनी होती है। विगत 31 मार्च 2022 से 30 सितम्बर 2023 तक पूर्ण महाप्रभावक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्य क्रमश: गौरव जी पगारिया-सूरत, राजीव जी सूर्या-उज्जैन, पुखराज जी मुकिम-जयपुर, विनय कुमार जी अब्बाणी-चितौड़गढ़, रावतमल जी संचेती-गंगाशहर, प्रकाशचंद जी सूर्या-उज्जैन, सोहनलाल जी पोखरना-चित्तौड़गढ़, जयचंदलाल जी मरोठी-कोलकाता, शांतिलाल जी बच्छावत-सूरत, अनिल जी सिपानी-बेंगलुरु, उत्तमचंद जी रांका-जयपुर का भावभीना अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सहित श्रीसंघ, महिला समिति व युवा संघ पदाधिकारियों एवं शिखर सदस्य व पूर्व अध्यक्ष, महामंत्री व इस सदस्यता के संयोजक जी द्वारा अभिनंदन पत्र, बैज, शॉल व माला भेंट कर स्वागत हुआ।

-: आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार :-

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की पुण्यस्मृति में प्रदत्त आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार शिक्षा, समाजसेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जनसेवा क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्तित्व अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह पुरस्कार जनसेवा हेतु समर्पित नानेश पी.जी. मेमोरियल अस्पताल, पिपलियाकलां को प्रदान किया गया। आदरणीय स्व. सेठ श्री पारसराज जी शाह की पुण्यस्मृति में उनके ज्येष्ठ पुत्र पंकज जी शाह द्वारा ग्राम पिपलियाकलां में 16 मार्च 1998 को इस अस्पताल की स्थापना की गई। **30 बैड की व्यवस्था के साथ प्रारंभ हुआ यह अस्पताल आज सम्पूर्ण अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त निजी क्षेत्र का एक मात्र ऐसा अस्पताल है जहाँ एम.आर.आई., सी.टी. स्कैन और सोनोग्राफी जैसी सुविधाएँ नि:शुल्क उपलब्ध हैं। यहाँ से प्रतिदिन 200 से अधिक मरीज लाभान्वित होते हैं।**

यह पुरस्कार मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, पूर्व अध्यक्षगणों, शिखर सदस्यों, महिला समिति व युवा संघ पदाधिकारियों द्वारा पंकज जी शाह, मंजू जी शाह एवं अस्पताल की टीम को प्रदान किया गया।

-: साहित्य विमोचन :-

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित आचार्य श्री रामेश के चिन्तनों पर आधारित पुस्तकें '**भ्रामरी**' एवं '**ब्रह्माक्षर**' का अंग्रेजी अनुवाद एवं प्रवचनों के संकलन रूप पुस्तक '**श्रद्धामयोऽयं पुरुष:**' (राम उवाच-37) का विमोचन अर्थ सहयोगी, सम्मानित अतिथिगणों, पूर्वाध्यक्ष, शिखर सदस्य, वर्तमान पदाधिकारियों, नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, समता युवा संघ व महिला समिति तथा नीमच संघ पदाधिकारियों के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

-: संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कार :-

राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि विगत वर्ष में संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली श्रेष्ठ प्रतिभाओं को सम्मानित करने का क्रम प्रारंभ किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत निम्न पुरस्कार प्रदान किए गए-

1. **श्रेष्ठ प्रवृत्ति सम्मान** - समता संस्कार पाठशाला
2. **रियल रामेश रत्न (आर.आर.आर.) -**
   8 वर्ष से कम आयु वर्ग के विजेता -
   दृति ओस्तवाल, राजनांदगाँव
   8 वर्ष से 13 वर्ष आयु वर्ग के विजेता -
   हार्दिक पुगलिया, गंगाशहर
   13 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के विजेता -
   युवराज गुरलिया, बेंगलुरु
3. **श्रेष्ठ अध्यापक पुरस्कार** - चिंकी जी जैन, अठाणा
4. **श्रेष्ठ पाठशाला पुरस्कार -**
   समता संस्कार पाठशाला, खैरागढ़
5. **श्रेष्ठ अंचल सम्मान** - कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल
6. **श्रेष्ठ इमर्जिंग संघ** - श्री साधुमार्गी जैन संघ-नवी मुंबई
7. **श्रेष्ठ शिविरायोजन सम्मान -**
   श्री साधुमार्गी जैन संघ, गुण्डरदेही
8. **श्रेष्ठ जैन संस्कार पाठ्यक्रम कार्यकर्त्ता सम्मान** -
   प्रेमलता जी बुरड़-हुबली, ललिता जी चोरड़िया,

ब्यावर, विमला जी बोहरा, मुम्बई

9. श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान –

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच

–: आभार अभिव्यक्ति :–

कार्यक्रम के अंत में श्री वर्द्धमान साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच के अध्यक्ष जी द्वारा कार्यक्रम में पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया गया।

:✦: द्वितीय दिवस – 16 अक्टूबर :✦:

नीमच। संघ समर्पणा महोत्सव एवं 61वें संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन का द्वितीय सत्र 16 अक्टूबर 2023 को टाउन हॉल, नीमच में आयोजित किया गया। इस विशिष्ट कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर, नीमच, विशिष्ट अतिथि उद्योगपति विनोद जी दुगड़, कोलकाता, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति व समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजक एवं सह-संयोजकगण, कार्यसमिति सदस्य, शिखर एवं महाप्रभावक सदस्यगण तथा नीमच संघ सदस्यों सहित देशभर से पधारे संघ सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

मंगलाचरण में संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों **'संघ हमारा अविचल मंगल'** के सामूहिक संगान के साथ दोपहर 12.15 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री ने स्वागत उद्बोधन देते हुए कहा कि साधुमार्गी जैन संघ के सदस्य होकर हम गौरवान्वित हैं। इस भौतिक युग में भी हमारा संघ संस्कार निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता के अंतर्गत महिला समिति द्वारा संचालित गर्भ संस्कार से प्रारंभ होकर संघ द्वारा संचालित समता संस्कार पाठशालाओं, शिविरों, जैन संस्कार पाठ्यक्रम के माध्यम से संस्कार निर्माण के महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। आप सभी इन प्रवृत्तियों से जुड़ें व औरों को भी प्रेरित करें। **इस संघ समर्पणा महोत्सव में प्रण लें कि हम सभी संघ की किसी न किसी प्रवृत्ति, आयाम से जुड़कर सहयोग प्रदान करेंगे।** कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे सभी भाई-बहिनों का श्रीसंघ की ओर से पुनः स्वागत व अभिनंदन करता हूँ।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने आत्मीय उद्बोधन में कहा कि आज के पावन अवसर पर देशभर से पधारे हुए महानुभावों, सदस्यों एवं सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर एवं विशिष्ट अतिथि युवा उद्योगपति विनोद जी दुगड़ का भी अभिनंदन करता हूँ। सन् 1962 में आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. ने उदयपुर में आचार्य श्री नानेश को युवाचार्य पद सौंपा और उसी समय श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का उद्भव हुआ था। स्थापना काल के सदस्यों में से सरदारमल जी कांकरिया की हमारे बीच उपस्थिति हमें गौरवान्वित कर रही है। धन्य हैं वे सभी जिन्होंने इस संघ को तन-मन-धन से सींचा है और आज हम इस वटवृक्ष के तले आनन्दानुभूति कर रहे हैं। 60 वर्ष पूर्व संघ के प्रथम अध्यक्ष छगनलाल जी बैद ने क्या स्वप्न देखा था, उनका क्या चिंतन रहा इस हेतु बैद जी के प्रथम अभिभाषण के कुछ बिन्दु आप सभी के समक्ष रख रहा हूँ। उनका यह चिन्तन आज हम सभी के समक्ष विशाल संघ के रूप में दृश्यमान है। उन सभी संस्थापकों, पदाधिकारियों व सदस्यों को नमन और अभिनंदन, जिन्होंने इस संघ को गौरवान्वित बनाया है।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में वीरदादा नाहरसिंह जी राठौर का केन्द्रीय पदाधिकारियों, पूर्वाध्यक्षों, शिखर सदस्यों द्वारा शॉल व माला से अभिनन्दन किया गया। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि नाहरसिंह जी द्वारा नीमच की धरा पर प्रवाहमान चातुर्मास हेतु निःस्वार्थ भाव से राठौर परिसर उपलब्ध करवाया गया है।

इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि युवा उद्योगपति विनोद जी दुगड़ का भी उपस्थित गणमान्यजनों द्वारा शॉल, माला व मोमेंटों प्रदान कर अभिनंदन किया गया। ज्ञातव्य है कि विनोद जी संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुन्दरलाल जी दुगड़ के सुपुत्र हैं। आपने बहुत ही कम

उम्र में व्यवसाय एवं सामाजिक जगत् में अतिविशिष्ट कार्य करते हुए अपनी अनूठी पहचान बनाई है। वर्तमान में आप जीतो के **JATF** के चैयरमेन हैं और साथ ही **Honorary Consul of the Republic of Malawi, Kolkata** है। आप रियल एस्टेट, इन्फ्रास्ट्रक्चर, एफएमसीजी प्रोडक्ट्स, डिफेंस, शिक्षा, खेल, हॉस्पिटेलिटी आदि अनेक व्यवसायों से जुड़े हैं। आपने 30 से अधिक स्ट्रार्टअप्स को फंडिंग किया है।

अपने उद्बोधन में **विनोद जी दुग्गड़** ने कहा कि विगत एक वर्ष से **JATF** का चेयरमैन होने के नाते मुझे अलग-अलग सम्प्रदाय के साधु-भगवंतों के दर्शन-वंदन का सौभाग्य मिला है। इन अवसरों पर राम गुरु के अनुयायी के रूप में मैं अपना परिचय देते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता हूँ। अन्य सम्प्रदायों के व्यक्तियों का आचार्य भगवन् के प्रति समर्पण देख मन गद्गद् हो जाता है। हमारे संघ के कारण हमारा नाम देश-विदेश में फैला हुआ है। वर्तमान अध्यक्ष जी और उनकी टीम को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने संघ के विकास को पंख दिए और नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आशान्वित हूँ कि वे इस विकास यात्रा को अविरल बनाए रखेंगे।

-: शिखर सदस्य सम्मान :-

संघ की सर्वोच्च सदस्यता 'शिखर सदस्यता' का विशिष्ट एवं सम्मानपूर्ण स्थान है। यह सदस्यता ग्रहण करना संघ के प्रति असीम निष्ठा एवं समर्पणा का प्रतीक है। यह सदस्यता ग्रहण करने वाले महानुभावों ने अपनी उदारता का परिचय दिया है। **संघ एवं समाज के प्रति निःस्पृह सेवा एवं परोपकारिता की साक्षात् प्रतिमूर्ति दक परिवार से सुरेश जी दक ने अपूर्व अहोभावों से शिखर सदस्यता ग्रहण की है।** आपका जीवन सरलता, समता, संघनिष्ठा, शासन समर्पणा, गुरुभक्ति, साध्वोचित व्यवहार व समाजसेवा से ओत-प्रोत है। सुरेश जी दक एवं दक परिवार का अभिनंदन उपस्थित गणमान्य महानुभावों द्वारा अभिनंदन पत्र, बैज, शॉल व माला द्वारा किया गया।

स्व. प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

श्रीसंघ द्वारा प्रदत्त यह पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला व संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य, कथा निबंध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर प्रदान किया जाता है। **इस वर्ष यह पुरस्कार कंचनदेवी कांकरिया को उनकी अनुपम कृति 'भगवती प्रश्नमाला' पर प्रदान किया गया।** कंचन जी श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गोगेलाव निवासी स्व. श्री पारसमल जी-सूरजदेवी कांकरिया के सुपुत्र सुभाष जी कांकरिया की धर्मसहायिका हैं। आपको पूर्वाचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा., श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ है। **आप में ज्ञान अभिवृद्धि की पिपासा को देखते हुए आचार्य भगवन् ने आपको 'विदुषी श्राविका' के अलंकरण से सुशोभित किया है।** आप धार्मिक ज्ञान-ध्यान पर विशेष अधिकार रखने के कारण सम्पूर्ण जैन समाज में विशिष्ट पहचान रखती हैं। उपस्थित गणमान्यजनों ने अभिनंदन पत्र, शॉल व माला द्वारा कंचन जी कांकरिया का अभिनंदन किया।

-: साहित्य विमोचन :-

कार्यक्रम की इसी अनवरतता में कंचन जी कांकरिया द्वारा रचित नवीन साहित्य **श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला** तथा साधुमार्गी पब्लिकेशन के अंतर्गत प्रकाशित **कर्म प्रज्ञप्ति : आधार ग्रंथ** व **आगम परिचय** पुस्तक का विमोचन उपस्थित महानुभावों ने किया।

-: संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों की शृंखला :-

राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा सदन को बताया गया कि श्रीसंघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों में से कल कुछ पुरस्कार प्रदान किए गए थे। आज उसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर स्थानीय संघों व महानुभावों को सम्मानित किया जा रहा है-

1. श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोग पुरस्कार (संघ)-

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु (प्रथम)

श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत (द्वितीय)
श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर-भीनासर (तृतीय)

2. श्रेष्ठ दानपेटी अर्थ सहयोगी (अंचल) पुरस्कार-
छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

3. श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान-
श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच

4. श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान-
किरण कुमार जी हिंगड़, रायपुर (भीलवाड़ा)

5. श्रेष्ठ स्वाध्यायी सम्मान- गुलाबचंद जी लोढ़ा, सारोठ

-: महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षा उद्बोधन :-

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने वीडियो क्लिप के माध्यम से महिला समिति के अंतर्गत संचालित प्रवृत्तियों और विगत 2 वर्ष की प्रगति को सदन के समक्ष रखते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि समिति के अंतर्गत 60 नए मंडलों का गठन, 104 प्रतिनिधि क्षेत्रों का गठन, केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, Discover Incredible You, गठबंधन, खुशियों का पिटारा, कौन बनेगा धर्मवीर, जैन सिद्धांत बत्तीसी, वूमेन्स मोटिवेशनल फोरम, परिवारांजलि आदि गतिविधियों का व्यवस्थित संचालन हो रहा है।

-: महिला समिति द्वारा प्रदत्त पुरस्कार :-

महिला समिति राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती सुमन जी सुराणा ने कहा कि विगत पूरे वर्ष में महिला समिति ने विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रभावना एवं क्रियान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में कई श्राविकओं ने अपने श्रेष्ठतम् देने का प्रयास किया है। कल रात्रि में आयोजित वार्षिक आम सभा में स्थानीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने करने वाली श्राविकाओं को सम्मानित किया गया। आज राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जा रहा है जो इस प्रकार है :

1. श्रेष्ठ महिला रत्न सम्मान - मनीषा जी भण्डारी, शिरूड़
2. विशिष्ट शासन प्रभाविका - विमला देवी मालू, नोखा
3. श्रेष्ठ तपस्वी - इन्द्रा जी नाहर, नीमच
4. श्रेष्ठ शासन सेविका - किरण जी शाह
5. श्रेष्ठ स्वाध्यायी - चंदा जी गुलगुलिया, पुणे व आर्ची जी जैन, इंदौर
6. उत्कृष्ट योगदान - कविता जी बरड़िया, कोलकता, सपना जी कोठारी, साजा, आकांक्षा जी कोठारी, कोलकाता

-: समता युवा संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन :-

समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस संघ समर्पणा महोत्सव एवं 61वें संयुक्त वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर उपस्थित होकर मन हर्षित एवं आनंद विभोर है। संघ से हमारा जुड़ाव हमारे परम सौभाग्य और संघ के प्रति अहोभाव के कारण संभव हुआ है। समता युवा संघ आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों और संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर रहा है। उत्क्रांति, समता शाखा, धार्मिक प्रतियोगिताओं, व्यसनमुक्ति कार्यक्रम, राष्ट्रीय व आंचलिक शिविर, तरुण शक्ति के माध्यम से समता युवा संघ सेवा में संलग्न है।

-: समता युवा संघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कार :-

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संदीप जी पारख द्वारा विडियो के माध्यम से वर्ष 2022-23 में समता युवा संघ द्वारा संपादित विविध एक्टिविटिज को प्रस्तुत किया। समता युवा संघ द्वारा निम्न पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर प्रदान किए गए-

1. शासन गौरव सम्मान - राकेश जी बोहरा, अक्कलकुआँ
2. श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद) - समता युवा संघ, चित्तौड़गढ़
3. श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु) - समता युवा संघ, नगरी
4. श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान - समता युवा संघ, नीमच
5. श्रेष्ठ संगठन सम्मान - शहादा

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा अधिवेशन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों एवं देशभर से पधारे हुए गणमान्यजनों का आभार ज्ञापित किया। तदुपरांत संघ समर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ इस भव्य कार्यक्रम का समापन हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आत्मीय निवेदन

संघनिष्ठ, सुश्रावक स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री।

जय जिनेन्द्र! जय गुरु राम!

प्रात: स्मरणीय, रत्नत्रय के महान आराधक, हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, नानेश पट्टधर, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की असीम अनुकम्पा से आप स्वस्थता एवं प्रसन्नता के साथ धर्म साधना में संलग्न होंगे। तत्र विराजित चारित्रात्माओं के श्रीचरणों में सविधि वन्दना अर्ज कर सुख-साता की पृच्छा करावें।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत स्थानीय संघ (इकाई) आबद्धता (Affiliation) एवं नवनिर्वाचन का अभियान सम्पूर्ण भारतवर्ष में संचालित है। अब तक देशभर में 76 संघों ने संघ आबद्धता ग्रहण कर ली है।

परम पूज्य आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए आयामों में -

1. सभी सदस्यों की समान सहभागिता,
2. साधु-साध्वियों के संयम की सुरक्षा,
3. श्रीसंघ, महिला समिति व युवा संघ के देशव्यापी नेटवर्क से सभी इकाइयों का पारदर्शी संवाद,
4. स्थानीय प्रतिभा विकास हेतु राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच की उपलब्धता प्रदान करना आदि लक्ष्य निहित हैं, जिनकी पूर्ति में संघ आबद्धता की महत्वपूर्ण कड़ी है। श्रीसंघ का मुख्य लक्ष्य श्री साधुमार्गी जैन संघ के सदस्यों को एकसूत्र में बांधकर उनकी प्रतिभा, योग्यता, क्षमता के उपयोग से परिवार, समाज व राष्ट्र का उत्थान करना है। कोई भी प्रतिभा शिक्षा से वंचित न रहे, स्वधर्मी गुरु भाई एक-दूसरे के सहयोगी बनें, जैनत्व के संस्कार सदैव पल्लवित, पुष्पित हों, दया-करुणा-अहिंसा-सत्य-सेवा हमारे आचरण का प्रतिबिम्ब बनें, यही हम सबका दायित्व है। संघ हमारा है, संघ की गौरव-गरिमा बढ़ती रहे, यही लक्ष्य है।

विशेष : 13 मार्च 2017 को नासिक में आयोजित कार्यसमिति बैठक और दिनांक 9 जुलाई 2017 को सूरत में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की विशेष आमसभा में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया था कि स्थानीय श्रीसंघों (इकाई) का केन्द्रीय संघ के साथ आबद्धता (Affiliation) हो, जिसमें श्रीसंघ एवं स्थानीय संघ के विकास संबंधी विविध उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकेगी।

श्रीसंघ संविधान के अनुच्छेद 29 में वर्णित श्रीसंघ की शाखाओं हेतु विधान/नियम/विनियम अनुसार देशभर की सभी स्थानीय इकाइयों का निर्वाचन एवं विधिसम्मत संबंधीकरण करना है।

प्रत्येक स्थानीय संघ (इकाई) में आगामी 2 वर्ष के कार्यकाल के लिए आमसभा द्वारा मनोनयन दिनांक 15 दिसम्बर 2023 से 14 जनवरी 2024 तक सम्पन्न हो जाए एवं 15 जनवरी 2024 से नए पदाधिकारी कार्यभार ग्रहण कर लेवें तथा 26 जनवरी 2024 तक नवीन शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हो जाए।

स्थानीय संघ इकाइयों के सम्माननीय अध्यक्ष-मंत्री से विशेष निवेदन है कि केन्द्रीय तथा स्थानीय संघ संबंधीकरण की पुष्टि करवाने की कृपा करें। विविध विचारों को एकरूपता में लाकर श्रीसंघ हित में दृढ़ निर्णय लेना कठिन कार्य है, पर हमारा विश्वास है कि आपके सक्षम नेतृत्व में, संविधान अनुसार नव मनोनयन एवं संघ आबद्धता का कार्य समय पर सम्पन्न हो पाएगा। आगामी मार्च 2024 तक सभी स्थानीय संघ केन्द्रीय संघ के साथ आबद्धता (Affiliation) ग्रहण करने का लक्ष्य रखें।

नोटः- यदि किसी स्थानीय इकाई में विगत वर्ष ही निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न हुई हो तो उन्हें यह निर्वाचन प्रक्रिया आगामी वर्ष के अंत में अपनानी होगी। कृपया इसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय के हेल्पलाइन नंबर पर अवश्य भिजवाएँ।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालय सहायता मो.नं. 7665001008 पर संपर्क कर सकते हैं।

निवेदक :

नरेन्द्र गांधी	सुरेश बच्छावत	मनोज डागा	गंभीर सांखला
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	मो.: 9830960708	मो.: 9425503603

संघ आबद्धता एवं निर्वाचन अभियान समिति

निर्वाचन संबंधी दिशा-निर्देश

1. निर्वाचन अवकाश के दिन या ऐसे समय होना चाहिए जब अधिकतम सदस्यों को सुविधा हो।
2. निर्वाचन प्रक्रिया की शुरूआत से ही दो निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किए जाने चाहिए, जो स्थानीय अथवा बाहर के साधुमार्गी संघ के वरिष्ठ, सूझबूझ के धनी, न्यायप्रिय एवं अविवादित श्रावक/श्राविका हों।
3. निर्वाचन आमसभा में हो, जिसकी सूचना कम से कम 21 दिन पूर्व लिखित, प्रति एवं सर्वमान्य तरीके से डाक अथवा व्यक्तिगत आमंत्रण से साधुमार्गी संघ के सभी घरों में दी जानी चाहिए।
4. निर्वाचन में पद या व्यक्ति को महत्त्व नहीं देकर संवैधानिक पारदर्शी प्रक्रिया का अनुपालन किया जाना महत्वपूर्ण है। यदि वर्तमान कार्यकारिणी को ही दुबारा निर्वाचित करना हो अथवा अल्प संशोधन करना हो तो भी निर्वाचन प्रक्रिया का अनुपालन हो। श्री साधुमार्गी जैन संघ में गौरवमयी मनोनयन (Nomination) की परंपरा है।
5. किसी भी दशा में प्रमुख पदों पर (अध्यक्ष, महामंत्री) एक ही व्यक्ति निरंतर दो कार्यकाल अथवा चार वर्ष से अधिक नहीं रह सकेगा।
6. संविधान अनुसार आमसभा द्वारा नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का कार्यकाल 15 जनवरी 2024 से शुरू होकर 14 जनवरी 2026 को स्वत: ही समाप्त हो जाएगा। इसी तरह यह क्रम प्रति दो वर्ष में चलता रहेगा।
7. एकरूपता के उद्देश्य से स्थानीय संघ का नाम श्री साधुमार्गी जैन संघ, ... (शहर/ग्राम का नाम) रहेगा।
8. आमसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया की सम्पूर्ण कार्यवाही का विवरण बैठक रजिस्टर में समय व तिथि के साथ दर्ज किया जाए व उपस्थित सभी सदस्यों के मोबाइल नं. सहित हस्ताक्षर लिए जाएँ। निर्वाचन प्रक्रिया सम्बन्धी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसका कारण सहित विवरण दर्ज किया जाना चाहिए।
9. निर्वाचन प्रक्रिया संबंधी किसी भी गंभीर गलती की शिकायत राष्ट्रीय संयोजक, आबद्धता एवं निर्वाचन अभियान समिति से की जा सकती है। शिकायत सही पाए जाने पर पुन: निर्वाचन कराया जा सकता है।
10. निर्वाचन सम्पन्न होने के पश्चात् संघ प्रपत्र में निर्वाचित पदाधिकारियों का विवरण लिखकर 31 जनवरी 2024 तक अग्रलिखित प्रधान कार्यालय को अवश्य भिजवाएँ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

56वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सौल्लास सम्पन्न

दिनांक : 15 अक्टूबर 2023 **स्थान : नीमच (म.प्र.)**

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की वार्षिक आमसभा का शुभारंभ धर्मनगरी नीमच के होटल मंगलम् में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म.सा. एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन सहित मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण से पूर्व श्री साधुमार्गी जैन महिला मण्डल एवं बहू मण्डल, नीमच की ओर से सभी का तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्षा जी द्वारा सदन को साधुमार्गी संकल्प सूत्र के वाचन पश्चात् राष्ट्रीय महामंत्री ने विगत आमसभा का कार्यविवरण सदन के समक्ष प्रस्तुत कर स्वीकृति प्राप्त की एवं सभी का भावाभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षा जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जो कार्य हुआ है, वह महिला समिति की कर्मठ सदस्याओं द्वारा सम्पन्न हुआ है। पद किसी के पास आज है कल नहीं, परंतु एक श्राविका का पद हमेशा रहता है। आपने श्राविका के रूप में संघ विकास हेतु श्रम करने और सभी प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन में सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया।

आपने आगामी सत्र 2023-25 के लिए श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के राष्ट्रीय महामंत्री पद के लिए स्नेहलता जी कोठारी, कोलकाता एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा पद के लिए चंदा जी खुरदिया, मुंबई के नाम का सर्वानुमति से मनोनयन किया। साथ ही राष्ट्रीय प्रवृत्ति संयोजिकाओं एवं अंचलवार नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष-मंत्री का मनोनयन किया गया। उपस्थित पदाधिकारियों ने नवमनोनीत टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में गौरवमयी क्षण उपस्थित हुए जब महिला समिति की ओर से उत्कृष्ट सेवाभावी महिला शक्ति एवं स्थानीय महिला मण्डलों पुरस्कृत करने का क्रम प्रारंभ हुआ। इस दौरान निम्न को सम्मानित किया गया।

श्रेष्ठ महिला रत्ना - मनीषा जी भण्डारी, शिरूड़

श्रेष्ठ शासन सेविका - किरण जी शाह, सूरत

श्रेष्ठ तपस्वी - इन्द्रा जी नाहर, नीमच

श्रेष्ठ महिला स्वाध्यायी - चंदाजी गुलगुलिया, पुणे एवं आर्ची जी जैन, इंदौर

श्रेष्ठ महिला मंडल - लसड़ावन (उभरता सितारा), गुंडरदेही (गागर में सागर), खरियार रोड (कौशल सम्पन्न), यू.ए.ई. (बढ़ते चरण), शहादा (वीर भूमि), कोकराझाड़ (संस्कार क्रांति), नीमच (आध्यात्मिक धरा)

उत्कृष्ट योगदान (Mahila Samiti Logo Design) - रीया जी कोठारी, कोलकाता

श्रेष्ठ वक्ता (Speakers) - रत्ना जी ओस्तवाल, प्रीति जी जैन, बेंगलुरु, श्वेता जी बच्छावत, कोलकाता, प्रवीणा जी सेठिया, रतलाम, प्रियंका जी जैन, दिल्ली, लीला जी कोठारी, मैसूर, दीपा जी कटारिया, हुबली,

सीमा जी सांखला, गुवाहाटी, निकिता जी डागा, कोलकाता, किरण जी कांकरिया, राजनांदगाँव, निधि जी कोठारी, जावरा, रूपल जी ओस्तवाल, ब्यावर

विशिष्ट शासन प्रभाविका - विमला देवी मालू, नोखा

विशिष्ट सेवा- कविता जी बरड़िया, कोलकाता, सपना जी कोठारी, साजा

श्रेष्ठ युवी - लब्धि जी लोढा, नागौरा, श्रेया जी धारीवाल, रायपुर, महक जी पगारिया, जावरा, वन्दना जी भूरा, नोखा, पूजा जी संचेती, बालाघाट

अंतरराष्ट्रीय संयोजिका - कुमुद जी गेलड़ा

अंचल संयोजिका (परिवारांजलि) - राजेश जी जैन, अलीगढ, ज्योति जी बोथरा, जगदलपुर, अनिता जी संचेती, सिलापथार

अंचल संयोजिका (केसरिया कार्यशाला) - शिखा जी खटोल, सिलचर, रुचि जी बाफना, दुर्ग, शालिनी जी आर्य, बीकानेर, किरण जी जैन, प्रतापगढ़

अंचल संयोजिका (युवती शक्ति) - जयश्री जी दस्सानी, विश्वनाथचाराली, तरूणा जी मेड़तवाल, मुंबई, नीता जी छिपानी, रतलाम

स्थानीय संयोजिका (युवती शक्ति) - राजश्री जी सुराणा, नोखा, प्राची जी बोहरा, अक्कलकुआँ, विट्ठु जी गुरालिया, बेंगलुरु

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्रमणोपासक

अष्टम् राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक सम्पन्न

दिनांक : 15 अक्टूबर 2023

स्थान : नीमच (म.प्र.)

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षा की अध्यक्षता में अष्टम् कार्यकारिणी बैठक का शुभारंभ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन के साथ हुआ। मंगलाचरण पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्षा द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन से गत कार्यकारिणी मीटिंग के कार्य विवरण पर स्वीकृति प्राप्त की एवं अंचल संयोजिकाओं से त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आग्रह किया।

संगठन की अंचल संयोजिका ने संगठन के अंतर्गत हुए कुल पंजीकरण, कुल महिला मण्डल एवं रिप्रेजेंटेटिव के जुड़ने की जानकारी सभी को दी एवं स्थानीय स्तर पर मण्डल लगाने का आग्रह किया।

युवती शक्ति की राष्ट्रीय संयोजिका ने Discover Incredible You के ऑनलाइन तथा नीमच में आयोजित ऑफलाइन कार्यक्रमों, संवर दिवस, कौन बनेगा धर्मवीर एवं जूम मीटिंग आदि के बारे में बताया तथा इन कार्यक्रमों से अधिकाधिक युवतियों को जोड़ने का अनुरोध किया।

वूमन्स मोटिवेशनल फोरम की राष्ट्रीय संयोजिका ने जुलाई, अगस्त, सितम्बर माह में हुए रजिस्ट्रेशन, भ्रूणहत्या त्याग हेतु प्राप्त संकल्प-पत्र की जानकारी दी गई एवं तत्त्वम् ज्ञानम् गतिविधि के बारे में बताया।

केसरिया कार्यशाला की सहसंयोजिका द्वारा स्त्रियों की 64 कलाओं एवं इन पर आधारित केसरिया कार्यशाला व भविष्य में होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी।

परिवारांजलि की राष्ट्रीय संयोजिका ने स्टीकर्स पेस्टिंग की जानकारी देते हुए कहा कि पेस्टिंग कार्य

के बाद स्टीकर्स के नीचे का भाग बीकानेर केन्द्रीय कार्यालय को भिजवाएँ।

सर्वधर्मी सहयोग की सह-संयोजिका ने लगभग 213 परिवारों को सर्वधर्मी सहयोग राशि प्रदान किए जाने की जानकारी देते हुए अनुरोध किया कि सहयोग प्राप्त करने वाले का सम्पूर्ण विवरण प्राप्त होने पर ही फॉर्म पर हस्ताक्षर करें। सभी उपाध्यक्ष-मंत्री लाभार्थियों को जीवित प्रमाण-पत्र भरने हेतु प्रेरित करें।

समता छात्रवृत्ति की राष्ट्रीय संयोजिका ने कहा कि साधुमार्गी परिवारों के प्रतिभावान बच्चों की शिक्षा में आर्थिक कारण से रुकावट नहीं आनी चाहिए। समता छात्रवृत्ति के अंतर्गत सितम्बर माह तक 74 बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई है।

छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल की राष्ट्रीय मंत्री ने प्रतिक्रमण प्रतियोगिता के बारे में बताते हुए कुल रजिस्ट्रेशन, प्रतिक्रमण कंठस्थ करने वाले 1003 सदस्यों एवं आगामी प्रतिक्रमण प्रतियोगिता प्रथम (15 अक्टूबर से 30 नवम्बर), द्वितीय (1 दिसम्बर से 15 जनवरी) एवं तृतीय (16 जनवरी से 28 फरवरी) इन तीन चरणों में आयोजित होने की जानकारी दी।

मेवाड़, मध्यप्रदेश, मुम्बई-गुजरात अंचल सहित सभी अंचलों की उपाध्यक्ष-मंत्रियों ने अपने अंचल में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी से सभा को अवगत कराया।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा ने अपने संबोधन में सभी अंचलों के पदाधिकारियों को अंचल के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही कहा कि साधुमार्गी संघ का कोई भी बच्चा शिक्षा के क्षेत्र में न पिछड़े इसके लिए छात्रवृत्ति एवं उच्च शिक्षा योजना की अधिकाधिक प्रभावना करें।

-राष्ट्रीय महामंत्री
श्रमणोपासक

आपके संस्मरण बनें अन्यों के लिए मार्गदर्शक

विगत समय में श्रमणोपासक में विभिन्न नवाचारों को स्थान प्रदान किया गया है ताकि सुधी पाठकों को अलग-अलग विधाओं की विशिष्ट सामग्री उपलब्ध हो सके। इसी कड़ी में एक और नवाचार करते हुए 'संस्मरण' स्तंभ प्रारंभ किया जाना प्रस्तावित है। आप सभी गुरुभक्तों से निवेदन है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के प्रवचन, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान, विहार, स्वाध्याय एवं साधना आदि अनेकानेक प्रसंगों से संबंधित यदि आपके कोई संस्मरण हों, जिसने आपके अंतर्मन को प्रभावित किया हो या आप में कोई सकारात्मक परिवर्तन आया हो तो ऐसे संस्मरण शुद्ध एवं स्वच्छ अक्षरों में अंकित कर आपके नाम, पते, मोबाइल नं. एवं M.I.D. सहित हमें वॉट्सएप 9314055390, email : news@sadhumargi.com पर भिजवाने का कष्ट करें। हमारा लक्ष्य रहेगा कि आपकी रचना को इस स्तंभ के अन्तर्गत श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जा सके।

-सह-सम्पादिका

45वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन व वार्षिक आमसभा जोश व उल्लास के साथ सम्पन्न

दिनांक : 15 अक्टूबर 2023 **स्थान : नीमच (म.प्र.)**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ का 45वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन व वार्षिक आमसभा ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में होटल देव रेजीडेंसी में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम आगत पदाधिकारियों के मंचासीन होने के पश्चात् मेवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी द्वारा मंगलाचरण किया गया। समता युवा संघ, नीमच के अध्यक्ष जी ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने सभी का स्वागत करते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के प्रति अहोभाव प्रकट किए। आपने संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों **'संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया'** के उच्चारण के साथ कहा कि आचार्य भगवन् के आशीर्वाद एवं उपाध्याय प्रवर के मार्गदर्शन से समता युवा संघ के ओजस्वी सदस्य समता शाखा, उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति, तरुण शक्ति, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, धार्मिक ज्ञानार्जन, प्रतियोगिता, तप-त्याग, राष्ट्रीय व आंचलिक शिविर एवं महत्तम महोत्सव आदि विभिन्न आयामों व प्रकल्पों की प्रभावना कर रहे हैं। आपने सभी सदस्यों से इसी प्रकार पुरुषार्थ करते हुए संघ को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने का निवेदन किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत वार्षिक आमसभा का कार्यविवरण सदन के पटल पर रखा, जिसे सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। आपने वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन की प्रस्तुति PPT के माध्यम से दी और सभी उपस्थित जनों को इसकी प्रति उपलब्ध करवाई गई।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने महत्तम महोत्सव में अब तक संपादित कार्यों का विवरण सदन के पटल पर पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के आय-व्यय का लेखा-जोखा सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। सभासदों ने इसे सर्वानुमति से अनुमोदित किया।

कार्यक्रम को गति देते हुए कार्यसमिति बैठक में घोषित विभिन्न वार्षिक पुरस्कारों के निम्नलिखित विजेताओं को क्रमश: मंच पर आमंत्रित कर सम्मानित किया गया-

युवा तपस्वी - संदीप जी धाड़ीवाल, धुलिया, पुलकित जी गुलगुलिया, पुणे, निलेश जी नागसेठिया, बलवाड़ी, रत्नेश जी कोठारी, भींडर, सुमित जी खींचा, नीमच, संदीप जी भंसाली, डौंडीलोहारा, भविष्य जी लोढ़ा, डौंडीलोहारा, नितिन जी डोसी, डौंडीलोहारा, आदित्य जी छल्लानी, कोमणा, अनिल जी हीरावत, कोलकाता, गौरव जी चोरड़िया, डौंडी, अजय जी दक, उदयपुर, दीपक जी मोगरा, उदयपुर, मनीष कुमार जी पोखरना,

मंगलवाड़, हर्षवर्धन जी लोढ़ा, मंगलवाड़, अरुण जी पटवा, आसावरा, अभिषेक जी कांठेड़, नीमच, चर्चिल जी ओसवाल, नीमच, अमित जी गांधी, नीमच, अक्षत जी जैन, पिपलियामंडी, स्पर्श गुणधर, दल्लीराजहरा, तेजस जी चौरड़िया, राजनांदगाँव, अंकित जी गोलछा, राजनांदगाँव, मूलचंद जी जैन, गीदम, दीपेश जी गिड़िया, रायपुर, आकाश जी लुणावत, दुर्ग, प्रणीत जी सांखला, दुर्ग, मृणाल जी सांखला, दुर्ग, दिनेश जी बाफना, दुर्ग, तनय जी पंवार, कानवन, विशाल जी बरड़िया, कोलकाता, जुबिन जी मुणेत, नीमच, रिंकल जी गांग, नीमच अक्षय जी मेहता, रतलाम, देवांश जी घोटा, रतलाम, पल्लव जी घोटा, रतलाम, आगम जी चपरोट, रतलाम

श्रेष्ठ युवा स्वाध्यायी - अंकित जी मुणोत, रतलाम, अंशुल जी बाघमार, भीलवाड़ा

श्रेष्ठ शासन सेवा - समता युवा संघ, नीमच

श्रेष्ठ आयोजन - व्यसनमुक्ति - समता युवा संघ, हैदराबाद

श्रेष्ठ आयोजन - सामाजिक - समता युवा संघ, सूरत

श्रेष्ठ आयोजन - उत्क्रांति - समता युवा संघ, नोखामंडी

श्रेष्ठ आयोजन - धार्मिक - समता युवा संघ, रतलाम

श्रेष्ठ आयोजन - समता शाखा - समता युवा संघ, राजनांदगाँव

श्रेष्ठ आयोजन - समता शाखा (उभरता क्षेत्र) - समता युवा संघ, पंचकुला

श्रेष्ठ संगठन - समता युवा संघ, शहादा

श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्) - समता युवा संघ, चित्तौड़गढ़

श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु) - समता युवा संघ, नगरी

श्रेष्ठ समता युवा संघ (उभरता क्षेत्र) - समता युवा संघ, नवी मुंबई

समता युवा रत्न - डॉ. श्रेणिक जी नाहटा, दुर्ग

शासन गौरव - राकेश जी बोहरा, अक्कलकुआँ

सभासदों ने कुछ जिज्ञासाएँ प्रस्तुत करते हुए संघ विकास हेतु बहुमूल्य सुझावों से सदन को लाभान्वित किया। आभार ज्ञापन समता युवा संघ, नीमच के मंत्री द्वारा किया गया। गुरु समर्पणा के परिपूरित भावों से ओत-प्रोत गीत **'तेरे पावन चरणों में'** के सामूहिक संगान एवं राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

-राष्ट्रीय महामंत्री
श्रमणोपासक

मुमुक्षु तमन्ना जी मीणा की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

नीमच। शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से 5 नवम्बर 2023 को अलीगढ़ रामपुरा निवासी मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन की भव्य जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में मुमुक्षु बहिन धवल वस्त्र धारण कर प्रवचन सभा में उपस्थित हुई तो सम्पूर्ण सभा आपके त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए आश्चर्यचकित नजर आई।

आचार्य भगवन् ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन से दीक्षा की तैयारी के लिए पूछा तो मुमुक्षु बहिन ने शीघ्र ही दीक्षा प्रदान कर जीवन कृतार्थ करने का निवेदन किया। आचार्य भगवन् ने दीक्षा की अनुमति के लिए उपस्थित जनों से पूछा तो सभी ने अपने दोनों हाथ खड़े कर दीक्षा की अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया। आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्व सावद्य योगों एवं पापकारी क्रियाओं का त्याग कराकर मुमुक्षु बहिन को नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया।

नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. की घोषणा आचार्यदेव के श्रीमुख से होते ही सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

-महेश नाहटा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

चतुर्थ कार्यसमिति सभा सम्पन्न

दिनांक : 14 अक्टूबर 2023 **स्थान : नीमच (म.प्र.)**

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की चतुर्थ कार्यसमिति सभा का आयोजन भाग्येश्वर मंदिर परिसर में कार्यकारिणी सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम मंगलाचरण समता युवा संघ, नीमच द्वारा किया गया। समता युवा संघ, नीमच के अध्यक्ष जी ने सभा में उपस्थित सभी का आत्मीय भावाभिनन्दन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने देश के कोने-कोने से पधारे सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत करते हुए अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि **आप सभी ने सुना होगा टाईम, डिस्टेंस और स्पीड। इनका मूल उद्देश्य है कि हमें लक्ष्य साधना है और लक्ष्य को समयावधि से कैसे साधा जाए इसकी रूपरेखा तैयार करनी है।** आज सत्र 2022-24 का आधा सफर पूर्ण होने जा रहा है। लगभग एक वर्ष पूर्व हम सब एक साथ एक मनोभाव, एक सोच, एक लक्ष्य को लेकर संघ सेवा, संघ विकास की प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ने हेतु संकल्पित हुए थे। हमें इस संकल्प पर दृढ़ रहना है। अपनी ऊर्जा का और संचार करते हुए आगामी वर्ष में अनेकानेक उपलब्धियों को प्राप्त करना है। आप सभी शेष कार्यकाल में अपनी पूर्ण क्षमता एवं सक्रियता से संघ सेवा करते हुए इसे स्वर्णिम और यादगार बनाने का भरसक प्रयास करें।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यसमिति सभा का कार्यविवरण उपस्थित सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। इसी के साथ समता युवा संघ का गत तीन माह का प्रगति प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया, जिस पर सभा में आगामी कार्य योजनाओं पर मंथन व विचार-विमर्श हुआ।

उपस्थित राष्ट्रीय उपाध्यक्षगणों ने अपने-अपने अंचल की त्रैमासिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं संयोजकगणों ने आगामी कार्ययोजना सदन के समक्ष प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत कर इसकी मुख्य बातों से सदन को अवगत कराया। सदन ने इसे एक स्वर में अनुमोदित किया। राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष जी ने अब तक के कार्यकाल में किए गए कार्यों की रिपोर्ट 'मेरा अंचल-सर्वश्रेष्ठ अंचल' को पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने वर्ष 2023 के वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा मंच से की।

'तेरे पावन चरणों में' के सामूहिक गान एवं राम गुरु के जयकारों सहित सभा पूर्ण हुई।

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्रमणोपासक

संक्षिप्त परिचय

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष

सुश्रावक नरेन्द्र जी गांधी, जावद

वीर पिता संघनिष्ठ सुश्रावक श्री नरेन्द्र जी गांधी का जन्म 25 जुलाई 1968 को पिता विजय कुमार जी के घर-आँगन में माता पिस्तादेवी गांधी की रत्नकुक्षी से हुआ। पारिवारिक संस्कारों की घूँटी आपको बचपन से ही मिलती रही, जिसके परिणामस्वरूप आपने मात्र 11 वर्ष की उम्र में सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र कंठस्थ कर अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। संवर, दया, जैन पाठशाला एवं शिविरों आदि में आपका लगाव आपको धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ाता गया। धर्म के साथ आप में राजनीति की भी विशेष प्रतिभा है, जिसका परिचय आपने कक्षा 8 में कक्षा प्रतिनिधि चुनाव जीतकर दिया। राजनीति में सक्रिय रहते हुए दो बार भारतीय जनता युवा मोर्चा, मंदसौर उपाध्यक्ष, नीमच जिले से दो बार भाजपा जिला उपाध्यक्ष, जिला कोषाध्यक्ष एवं अन्य महत्वपूर्ण पदों पर सेवाएँ दे चुके हैं।

बचपन से प्राप्त धर्म के संस्कारों का पल्लवन हुआ तो युवावस्था में आप संघ सेवा से जुड़ गए और चारित्रात्माओं के विहार में सेवा सहित संघ के अन्य कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने लगे। आपने स्थानीय संघ के महामंत्री एवं भिण्ड जिले के संगठन मंत्री के रूप में अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की और अनवरत संघ सेवा के कार्यों में संलग्न हैं।

सामाजिक सरोकारों एवं देश सेवा की भावना से आपने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का तीन वर्षीय शिक्षण प्राप्त कर सन् 2013 से आर.एस.एस. के विभिन्न पदों पर दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। वर्तमान में आप मंदसौर विभाग में सामाजिक समरसता संयोजक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

श्रीमती रेखा जी गांधी आपके कार्यों में सहयोग करते हुए धर्मपत्नी पद को सार्थक कर रही हैं। आपके परिवार में भाई-बहू संजय जी-राखी जी, बहन-बहनोई रंजना-सुमित जी चावत एवं किरण-संजय जी करणपुरिया, पुत्र-पुत्रवधू श्रेयांश-रिया, भतीजे श्रद्धेश, श्रेय, बेटी-दामाद श्रेया-रौनक जी दक एवं दोहिता हियांश संघ व गुरु समर्पणा भावों से ओत-प्रोत हैं।

आपकी संसारपक्षीय सुपुत्री साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. के रूप में आचार्य श्री रामेश शासन में समर्पित हैं।

सरल, सौम्य, गंभीर आपका व्यक्तित्व एवं सेवाभाव से ओत-प्रोत आपका जीवन समयबद्ध कार्यप्रणाली से अनुकरणीय बन गया है। समय के साथ तारतम्यता रखते हुए आप प्रत्येक कार्य को यथासमय पूर्ण करने का लक्ष्य रखते हैं और यही शिक्षा अपने परिजनों एवं साथ में जुड़े हुए कार्यकर्ताओं को देते हैं।

आपकी इन्हीं विशेषताओं एवं सेवाभावों को देखते हुए आपको श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के सत्र 2023-25 हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का गुरुत्तर दायित्व सौंपा गया है। एतदर्थ हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

नवमनोनीत राष्ट्रीय महामंत्री

सुश्रावक सुरेश जी बच्छावत, बीकानेर

स्वनाम धन्य सुश्रावक सुरेश जी बच्छावत का जीवन धार्मिकता से ओत-प्रोत होने के साथ-साथ आप सेवा कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहता है। आपका जन्म बीकानेर के सुप्रतिष्ठित वीर भ्राता स्व. श्री शिखरचंद जी-स्व. श्रीमती भंवरीदेवी बच्छावत के घर-आँगन में लगभग 68 वर्ष पूर्व हुआ। प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में पूर्ण करने के पश्चात् आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.टेक. द्वितीय वर्ष तक अध्ययन किया। आप मेडिसिन व्यवसाय से जुड़े हैं।

आप महाश्रमणीरत्ना साध्वी श्री इन्द्रकँवर जी म.सा. के संसारपक्षीय भतीजे हैं। महाश्रमणीरत्ना जी का 59 दिवसीय संथारा बीकानेर में किसी महोत्सव के कम नहीं रहा। उस समय आपने सेवा कार्य का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। आपके परिवार में तप-त्याग एवं धर्म-ध्यान का माहौल सदैव ही बना रहता है। आपको सामायिक एवं प्रतिक्रमण कण्ठस्थ है। तप के क्रम में आपने एकासन का मासखमण, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला, पंचौला एवं लगभग 13 साल से प्रत्येक पर्युषण में सजोड़े अठाई तप कर अपना जीवन धन्य बनाया है। इसके साथ ही वर्ष में सौ दिन बड़े स्नान का त्याग, तीन सौ दिन रायसी प्रतिक्रमण, तीन सौ दिन सामायिक व माह में चार दिन पक्की नवकारसी करने का नियम ले रखा है। आपके एक मात्र भाई का निधन हो चुका है।

आपके परिवार में पाँच बहिनें, एक पुत्र (अमेरिका निवासरत) व दो पुत्रियाँ हैं, संघ व शासन के प्रति निष्ठा रखते हुए सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं।

श्री बच्छावत जी ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मंत्री के रूप में संघ को सेवाएँ प्रदान की हैं। आपकी ऐसी संघ समर्पणा व सेवा भावना को सर्वोपरि रखते हुए आगामी सत्र 2023-25 के लिए आपको राष्ट्रीय महामंत्री के गौरवपूर्ण पद का गुरुत्तर दायित्व सौंपा गया है। इस मनोनयन पर हार्दिक बधाई देते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

संघ के अलावा आप श्री जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर के दो वर्ष उपाध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति में चार वर्ष तक मंत्री एवं बीकानेर डिस्ट्रिक्ट केमिस्ट एसोसिएशन में वर्ष 2005 से 2022 तक अध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे चुके हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

संक्षिप्त परिचय

पुनः मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्षा
सुश्राविका पुष्पा जी मेहता

आपका जन्म 17 अक्टूबर 1966 को राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के बेमाली गाँव में स्व. श्री रोशनलाल जी-स्व. श्रीमती जेठीबाई बोहरा के घर-आँगन में हुआ। आपके 2 भाई व 4 बहिनें हैं। ज्ञान-ध्यान में आपकी अत्यधिक रुचि हैं। आपने आजीवन चौविहार एवं जमीकंद का त्याग ग्रहण किया हुआ है। भीलवाड़ा के माणिक्यलाल वर्मा कॉलेज से आपने एम.कॉम. (लेखाशास्त्र) में व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। आपको बचपन से ही माता-पिता द्वारा धार्मिक संस्कारों की विरासत मिली। आपका विवाह चित्तौड़ (बड़ीसादड़ी) निवासी जैनेन्द्र कुमार जी-स्व. श्रीमती संतोष कुमारी मेहता के सुपुत्र मनीष जी मेहता के साथ 26 जुलाई 1989 को हुआ। आपके 2 पुत्र व पुत्रवधू जुबिन-शैला, सिद्धांत-साक्षी हैं। आप श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के मेवाड़ अंचल की राष्ट्रीय मंत्री के रूप में चार वर्ष एवं केसरिया कार्यशाला की संयोजिका के रूप में सेवाएँ दे चुकी हैं। गत दो वर्ष आपने श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा पद का गुरुत्तर दायित्व निभाते हुए अहोभाव से सेवाभाव व्यक्त किए हैं। आपकी इन्हीं सेवाओं को देखते हुए आपको आगामी दो वर्षीय कार्यकाल के पुनः राष्ट्रीय अध्यक्षा पद पर सुशोभित किया गया है।

संक्षिप्त परिचय

नवमनोनीत राष्ट्रीय महामंत्री
सुश्राविका स्नेहलता जी कोठारी

आपका जन्म 18 अक्टूबर 1967 को बीकानेर में सुश्रावक कानमलजी मुकीम के सुपुत्र उमेश जी-सज्जनदेवी मुकीम के घर-आँगन में हुआ। आपके 1 छोटा भाई है। आपने मुम्बई के मिट्ठीबाई कॉलेज से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। आपका विवाह कोलकाता के अरुण जी कोठारी सुपुत्र सुरेन्द्र जी-कमलादेवी कोठारी के साथ 26 जनवरी 1991 को सम्पन्न हुआ। आपके 1 पुत्र व 1 पुत्री श्रेयांश व आकांक्षा हैं। आचार्य श्री रामेश के वर्ष 2008 के कोलकाता चातुर्मास से आपका धर्म की ओर झुकाव बढ़ा और यह झुकाव चारित्रात्माओं के सान्निध्य में बढ़ता गया। संघ कार्यों के साथ-साथ ज्ञान-ध्यान में अभिवृद्धि हेतु आपने जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1-12 व अनन्य महोत्सव के अन्तर्गत कर्म सिद्धांत, 500 थोकड़े, श्रुत आराधक आदि परीक्षाओं में भाग लिया। महिला समिति के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आपने बंगाल बिहार अंचल की राष्ट्रीय मंत्री के रूप में विशेष सेवाएँ प्रदान की।

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

शासन गौरव अलंकरण से सम्मानित व्यक्तित्व
राकेश जी बोहरा, अक्कलकुआँ

शासन गौरव राकेश गौतमचंद जी बोहरा, अक्कलकुआँ ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग में विशिष्ट स्थान रखते हैं। 33 वर्षीय राकेश जी की धर्मपत्नी सौ. नेहा जी आपको धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती रहती हैं। श्री राकेश जी ने देश के विभिन्न स्थानों पर 11 बार स्वाध्यायी सेवा प्रदान की है। इसके अलावा प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन आदि विविध ज्ञानार्जन किया है। आपने आचार्य श्री रामेश के नीमच चातुर्मास में 10 अगस्त 23 को सजोड़े शीलव्रत अंगीकार कर अन्यों के समक्ष आदर्श उपस्थित किया है। पूर्ण यौवनावस्था में जब युवा राग-रंग में मार्ग भटक जाते हैं, उस आयु में आपने जैन धर्म के सिद्धान्तों का परिपालन कर संघ, समाज व परिवार को गौरवान्वित किया है। आपके सांसारिक परिवार से श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. (भतीजे), साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा., साध्वी श्री खुशाल श्री जी म.सा., साध्वी श्री भव्या श्री जी म.सा., साध्वी श्री रम्या श्री जी म.सा. (बहिनें) एवं साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा. व साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा. (भांजियाँ) आचार्य श्री रामेश शासन में जिनशासन की सेवा कर रहे हैं।

युवा रत्न अलंकरण से सम्मानित व्यक्तित्व
डॉ. श्रेणिक जी नाहटा, दुर्ग

युवा रत्न डॉ. श्रेणिक जी नाहटा, दुर्ग का जन्म राजेशजी-लताजी नाहटा के घर-आँगन में 29 नवम्बर 1992 को हुआ। आपका शुभविवाह दीपिका जी से हुआ है और आपके एक भाई है। आपने छोटी-सी उम्र में बड़ी-बड़ी उपलब्धियों को अपने जीवन में प्राप्त किया है। आपने दुर्ग के मैत्री दंत चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र, अंजोरा से बी.डी.एस. एवं आर.के.डी.एफ डेण्टल कॉलेज एण्ड रिसर्च सेंटर, भोपाल से ओरल मैक्सीलोफेशियल पैथोलॉजिस्ट एण्ड माईक्रोबायोलॉजिस्ट में एम.डी.एस. की डिग्री प्राप्त की है। आपने जालंधर बंध योग द्वारा बिना ऑपरेशन एवं बिना इंजेक्शन के दांत निकालने में सर्टिफिकेट कोर्स कर इसमें विशेष महारत हासिल की है। इसके अलावा आपने अनेक विषयों पर रिसर्च किया है। आप दुर्ग, भिलाई, रायपुर, राजनांदगाँव में चिकित्सकीय सेवाएँ दे रहे हैं। बेस्ट पेपर प्रजेंटेशन अवार्ड के साथ-साथ आपने अनेकानेक सम्मान प्राप्त किए हैं, जिनकी लम्बी फेहरिस्त है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आपने अपने संस्कारों को संजोए रखते हुए नौ, तेला सहित अनेक तपस्याएँ की हैं व त्याग-प्रत्याख्यानों से कर्मनिर्जरा कर रहे हैं। आप सभी सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की नि:स्वार्थ भाव से सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं।

श्रमणोपासक

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
•SINCE 1977•

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
U STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh